चैत्र माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 73 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 08 अप्रैल 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

श्रीलंका आर्थिक संकट: राष्ट्रपति राजपक्षे ने नई वित्तीय टीम बनाई

कोलंबो: कर्ज के जाल में फंसकर कंगाल हुई सोने की लंका को फिर से उबारने के लिए अब श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने नया दांव आजमाया है। उन्होंने आर्थिक और वित्तीय विशेषज्ञों का एक सलाहकार समूह नियुक्त किया है जो ये बताएगा कि कर्ज के इस भयानक जाल से कैसे निपटा जाए।

सलाहकार टीम में ये लोग शामिल: इस संबंध में जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार, सलाहकार समूह के सदस्यों में सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका के पूर्व गवर्नर इंद्रजीत कुमारस्वामी, विश्व बैंक के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री शांता देवराजन और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) क्षमता विकास संस्थान के पूर्व निदेशक शर्मिनी कोरे शामिल हैं। राष्ट्रपति के मीडिया डिविजन ने बुधवार को यह जानकारी साझा की है। रिपोर्ट में कहा गया कि सलाहकार समूह के सदस्य पहले ही राष्ट्रपति के साथ आईएमएफ के साथ नियमित संचार बनाए रखने पर चर्चा कर चुके हैं। डिविजन के अधिकारियों के अनुसार, सलाहकार समूह को आईएमएफ के साथ बातचीत में शामिल श्रीलंकाई अधिकारियों के साथ चर्चा करने और मौजूदा ऋण संकट पर काबू पाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने का काम सौंपा गया है।

अब तक की गईं ये बड़ी कोशिशें: यहां बता दें कि बीते दिनों श्रीलंका आर्थिक संकट के बीच बढ़ी हिंसा और राजनीतिक अटकलों के बीच पूरे मंत्रिमंडल ने सामूहिक इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे ने त्यागपत्र नहीं दिया था। कोशिश ये की जा रही थी कि श्रीलंका में जल्द ही सर्वदलीय सरकार बनाई जाए, जिसमें विपक्ष के नेताओं को भी शामिल किया जाएगा। लेकिन विपक्ष ने ये प्रस्ताव ठुकरा दिया। इसके बाद आनन-फानन में वित्त मंत्री समेत चार नए मंत्री बनाए गए। अली साबरी को आर्थिक बदहाल देश के वित्त मंत्री की जिम्मेदारी दी गई, लेकिन उन्होंने भी महज 24 घंटे के भीतर ही पद से इस्तीफा दे दिया। साबरी ने राष्ट्रपति को लिखे एक पत्र में कहा कि उन्होंने एक अस्थायी उपाय के तहत यह पद संभाला था। इसके बाद अब राष्ट्रपति ने एक नया वित्तीय सलाहकार समूह नियुक्त किया है।

बजट सत्र में 99.80 प्रतिशत रही राज्यसभा की उत्पादकता

नई दिल्ली: संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण में तय अवधि से ठीक एक दिन पहले गुरुवार को राज्यसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। सदन में कांग्रेस और शिवसेना सदस्यों के भारी शोरगुल और हंगामे के कारण सभापति एम. वेंकैया नायडू सत्र समाप्ति की घोषणा के बाद अपना पारंपरिक समापन भाषण भी नहीं दे सके। बजट सत्र के दौरान राज्यसभा ने 99.80 प्रतिशत उत्पादकता रही। सत्र के दौरान 11 विधेयक पारित किए गए और एक विधेयक पेश किया गया। राज्यसभा की कार्यवाही सुबह 11 बजे शुरू होने के बाद आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखे जाने की कार्यवाही पूरी कराई गई। इसके बाद कांग्रेस और शिवसेना ने एक घोटाला मामले को उठाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। नायडू ने सदस्यों को शांत कराने की कोशिश की किंतु वे नहीं माने। तत्पश्चात, नायडू ने सदन की बैठक अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी।

लखनऊ में कुत्तों का आतंक, दो मासूमों को नोचा, भाई की मौत, बहन की हालत गंभीर

लखनऊ: लखनऊ के ठाकुरगंज के मुसाहिबगंज में नगर निगम के प्राथमिक स्कूल में खेल रहे मासूम भाई-बहनों पर आवारा कुत्तों ने हमला बोल दिया। दोनों को गंभीर हालत में ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया, जहां मो. रजा (7) की मौत हो गई। उसकी बहन जन्नत फातिमा (5) की हालत गंभीर बनी हुई है। मामले को लेकर पीड़ित परिवार ने नगर आयुक्त, महापौर और जोन-6 के अधिकारी के खिलाफ तहरीर दी है। मुसाहिबगंज निवासी प्लंबर शबाब रजा के परिवार में पत्नी रानी, बेटा मो. रजा और बेटी जन्नत फातिमा है। बुधवार शाम पांच बजे रजा छोटी बहन के साथ घर के बाहर खेल रहा था। इसी दौरान आवारा कुत्तों ने उन पर हमला कर नोचना शुरू कर दिया। शोर व चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग डंडा लेकर दौड़े, लेकिन तब तक मासूम गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। दोनों को तत्काल ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, जहां रजा ने दम तोड़ दिया। जन्नत की हालत नाजुक बनी है।

थम नहीं रहा 'लाउडस्पीकरों' पर विवाद

301 मस्जिदों, मंदिरों, चर्चों और अन्य प्रतिष्ठानों को अपने लाउडस्पीकर का उपयोग अनुमति के अनुसार डेसिबल स्तर के भीतर करने के लिए नोटिस जारी किया

बेंगलुरु: बेंगलुरु पुलिस ने गुरुवार को 301 मस्जिदों, मंदिरों, चर्चों और अन्य प्रतिष्ठानों को अपने लाउडस्पीकर का उपयोग अनुमति के अनुसार डेसिबल स्तर के भीतर करने के लिए नोटिस जारी किया है। 301 नोटिसों में से 59 पब, बार और रेस्तरां को, 12 उद्योगों को, 83 मंदिरों को, 22 चर्चों को और 125 शहर भर की मस्जिदों को दिए गए हैं। बता दें कि यह कदम कुछ दक्षिणपंथी कार्यकर्ताओं द्वारा ध्वनि प्रदूषण नियमों का उल्लंघन करने वाले लाउडस्पीकरों को बंद करने की मांग के बाद उठाया गया है।

मस्जिदों से अब नहीं आएगी ज्यादा आवाज: वहीं वहां के जामिया मस्जिद के मौलाना मकसूद इमरान रशीदी (इमाम) ने बताया कि उन्हें पुलिस विभाग से नोटिस मिला है और वे उस आदेश का पालन करेंगे जो लाउडस्पीकर के डेसिबल से संबंधित सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शों के अनुसार दिया गया है। उन्होंने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए और अगर आदेशों का पालन नहीं किया जाता है तो कार्रवाई शुरू की जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने एक डिवाइस को फिट करना शुरू कर दिया है जो यह सुनिश्चित करता है कि ध्वनि अनुमेय स्तर को पार न करे और कोई भी परेशान न हो।

नागपुर के इमाम बोले अजान से नहीं होता शोर: इस बीच जामा मस्जिद नागपुर के अध्यक्ष मोहम्मद हाफिजुर रहमान ने कहा कि अजान अधिकतम ढाई मिनट ही लंबा होता है और इसकी आवाज सीमा के भीतर रहती है और ध्वनि प्रदूषण की श्रेणी में नहीं आती है। उन्होंने साथ ही आरोप लगाया कि अन्य कार्यक्रम अधिक शोर पैदा करते हैं।

महाराष्ट्र से शुरू हुआ था मामला: बता दें कि मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर पर सियासत सबसे पहले महाराष्ट्र से शुरू हुई थी। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) अध्यक्ष राज ठाकरे के बयान के बाद कई राज्यों में मस्जिदों से लाउडस्पीकर हटाने की मांग उठी थी। इन सबके बाद कई नेताओं के बयान सामने आए थे।

अजान पर विवाद: 2017 में, लोकप्रिय गायक सोनू निगम, जिन्हें हाल ही में पद्म श्री पुरस्कार मिला था, ने लाउडस्पीकर पर अजान के खिलाफ आवाज उठाई थी। अब डिलीट किए गए ट्वीट में उन्होंने हर सुबह लाउडस्पीकर पर अजान सुनने पर नाराजगी जताई थी। विवादित ट्वीट के बाद गायक को भारी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था।

अनुराधा पौडवाल ने की अजान के लिए लाउडस्पीकर बैन करने की मांग

मुंबई: दिग्गज गायिका अनुराधा पौडवाल ने अजान पर बड़ा बयान दिया है। हजारों लोकप्रिय गीतों को अपनी आवाज देने वाली गायिका ने कहा कि भारत में अजान के लिए लाउडस्पीकर का इस्तेमाल करना अब बंद कर देना चाहिए। अनुराधा आगे कहती हैं कि देश में इस तरह के अभ्यास की जरूरत नहीं। अनुराधा पौडवाल कहती हैं, "मैंने दुनिया के कई जगहों का दौरा किया है। मैंने भारत के अलावा कहीं भी ऐसा कुछ नहीं देखा। मैं किसी धर्म के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन यहां इसे जबरन बढ़ावा दिया जा रहा है। वह मस्जिद से लाउडस्पीकर पर अजान बजाते हैं। अन्य समुदाय सवाल करते हैं कि अगर वह लाउडस्पीकर का उपयोग कर सकते हैं तो दूसरे ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं।" गायिका कहती हैं, मैंने मध्य पूर्वी देशों की यात्रा की है। वहां लाउडस्पीकर पर प्रतिबंध है। जब मुस्लिम देश इसे हतोत्साहित कर रहे हैं, तो भारत में इस तरह की प्रथाओं की क्या जरूरत है? अगर यह अभ्यास जारी रहा तो लोग लाउडस्पीकर पर हनुमान चालीसा बजाना शुरू कर देंगे। इसकी वजह से जो माहौल बनेगा, वह अच्छा नहीं होगा है।" बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब किसी सेलेब ने लाउडस्पीकर पर अजान को बैन करने की बात कही है।

अब कश्मीर में तिलक-हिजाब पर हंगामा

जम्मू-कश्मीर: जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में एक टीचर ने दो बच्चियों को इसलिए पीटा, क्योंकि वे तिलक लगाकर और हिजाब पहनकर स्कूल आईं थीं। चौथी क्लास में पढ़ने वालीं ये बच्चियां जब द्रामन गांव के गवर्नमेंट मिडिल स्कूल पहुंची तो निसार अहमद नाम के टीचर ने इन्हें बुरी तरह मारा। घटना के सामने आते ही निसार को सस्पेंड कर दिया गया है। पुलिस ने निसार को अरेस्ट कर लिया है, लेकिन पुलिस ने अभी तक इस मामले में सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने का केस दर्ज नहीं किया है।

पीड़ितों ने वीडियो में बताई आपबीतीऋ राजौरी के पीड़ित परिवार का एक वीडियो भी सामने आया है। जिसमें निसार अहमद पर बच्चियों को पीटने का आरोप लगाया है। वीडियो में पिता अंग्रेज सिंह कह रहा है- जिस तरह से मेरी और शकूर की बेटी को पीटा गया है, कल कोई दूसरा टीचर भी तिलक और नकाब पहनने पर बच्चों को पीट सकता है। मैं सरकार से अपील करता हूं कि इसकी जांच होनी चाहिए। मुझे न्याय चाहिए। ये सांप्रदायिक एकता को बिगाड़ने की चाल है। हम इस जगह को यूपी, बिहार या कर्नाटक नहीं बनने देंगे। कोटरांका के इस मामले में यह पता लगाने कहा है कि क्या ये बात सच है कि वे पीटे गए थे या फिर कोई और वजह है।

भाजपा जयराम ठाकुर को हटाकर अनुराग ठाकुर को बना सकती है नया सीएम: सिसोदिया

शिमला: दिल्ली के उप मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा हिमाचल प्रदेश में जयराम ठाकुर को हटाकर अनुराग ठाकुर को नया मुख्यमंत्री बना सकती है। सिसोदियो ने कहा कि उन्हें विश्वसनीय सूत्रों से यह जानकारी मिली है। बुधवार को मंडी में हुई आम आदमी पार्टी की रैली के बाद भाजपा घबरा गई है। केजरीवाल के गवर्नेंस मॉडल से भाजपा में खौफ है। साढ़े चार साल में जयराम सरकार हर मोर्चे पर नाकाम साबित हुई है। भाजपा को हिमाचल की जनता से साढ़े चार साल की बर्बादी करने के लिए माफी मांगनी चाहिए। अब भाजपा चाहे मुख्यमंत्री बदले या मंत्री, उससे कुछ नहीं होने वाला है।

लोकतंत्र की भाजपा सीरियल किलर: अखिलेश यादव

कन्नौज: एमएलसी चुनाव में पार्टी प्रत्याशी को जीत दिलाने के लिए कार्यकर्ताओं में दम भरने आए सपा अध्यक्ष व पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर जुबानी हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भाजपा लोकतंत्र की सीरियल किलर है। महंगाई, भ्रष्टाचार और लूटपाट बढ़ रही है। जनता बैंकों में जाकर अपने-अपने लॉकर्स चेक करे, वहां खूब लूट हो रही है। बलिया में पेपर लीक करने की सूचना सार्वजनिक करने और खबर छपने वाले पत्रकारों को सरकार ने जेल भेज दिया। सरकारी अपनी नाकामी छिपाने के लिए पत्रकारों की आवाज बंद कर रही है।

सपा विधायक के पेट्रोल पंप पर चला बुलडोजर: शहजिल ने सीएम योगी के खिलाफ दिया था विवादित बयान

बरेली: बरेली विकास प्राधिकरण ने गुरुवार को परसाखेड़ा में सपा के भोजीपुरा विधायक शहजिल इस्लाम के पेट्रोल पंप पर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की। बीडीए के मुताबिक पेट्रोल पंप का मानचित्र पास नहीं है।

नोटिस देकर मानचित्र मांगा गया था। लेकिन अब तक कागज उपलब्ध न होने पर कार्रवाई की गई है।

पेट्रोल पंप मालिक ने कार्रवाई होने के बाद मानचित्र उपलब्ध कराने के लिए पंद्रह दिन का समय मांगा है। बीडीए ने कार्रवाई रोक दी है।

बता दें कि हाल ही में शहजिल इस्लाम ने एक स्वागत समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के खिलाफ विवादित बयान दिया था, जिसके बाद उनके खिलाफ थाना बारादरी में रिपोर्ट भी दर्ज कराई गयी थी।

'फुटवियर पर जीएसटी 5 फीसदी और बीएसईएस लागू हो'

नई दिल्ली: कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) और इंडियन फुटवियर एसोसिएशन (आईएफए) ने फुटवियर पर जीएसटी दर 5 फीसदी और बीआईएस स्टैंडर्ड लागू करने की मांग की है। 31 दिसंबर से पहले के अनुसार 1000 रुपये से कम कीमत वाले फुटवियर पर जीएसटी दर 5 फीसदी और उससे ज्यादा कीमत वाले फुटवियर पर जीएसटी दर 12 फीसदी रखी जाए।

पंजाब में बिजली संकट: कोयले की कमी दूर करने की मांग

चंडीगढ़: पंजाब में गर्मी बढ़ने के साथ ही बिजली संकट गहराने लगा है। इसी को लेकर पंजाब के बिजली मंत्री हरभजन सिंह ने बुधवार को केंद्रीय कोयला एवं खनिज मंत्री प्रह्लाद जोशी और केंद्रीय बिजली, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह से मुलाकात की। दोनों केंद्रीय मंत्रियों के साथ बैठक में हरभजन सिंह ने पंजाब में बिजली की किल्लत से जुड़े मुद्दों और बिजली उत्पादन के लिए कोयले की कमी के मुद्दे उठाए। कोयला मंत्री प्रह्लाद जोशी के साथ बैठक में पंजाब के बिजली मंत्री ने उन्हें बताया कि धान के सीजन के दौरान पंजाब में बिजली की मांग ज्यादा होती है। राज्य को सरकार के स्वामित्व वाले थर्मल पावर स्टेशनों के सभी यूनिट चलाने पड़ते हैं। आने वाले धान के सीजन के दौरान बिजली की मांग बढ़कर 15000 मेगावाट होने की संभावना है। कैबिनेट मंत्री ने राज्य के अपने प्लांटों और प्राइवेट थर्मल प्लांटों के लिए कोयले के वितरण के मुकाबले कोयले के कम रैकों की सप्लाई का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से अपील की कि धान के सीजन के दौरान 20 लाख टन अधिक कोयला सरकारी क्षेत्र के प्लांटों के लिए अलॉट करें और 30 लाख टन अधिक कोयला अलॉट करने की मांग भी की।

वर्ष 2023 तक सभी विधानमंडल की जानकारी एक मंच पर मिलेगी: बिरला

नई दिल्ली: लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरुवार को कहा कि वर्ष 2023 तक सभी विधान मंडल (विधायिका संबंधी) की कार्यवाही एक मंच पर लाई जाएगी, जिससे मेटा-डेटा के आधार पर जानकारी मिलेगी। इस दिशा में तेजी से काम चल रहा है। हमारा प्रयास है कि प्रत्येक वर्ष की सारी कार्यवाही आपको मिल जाए। अध्यक्ष बिरला ने लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने की घोषणा के बाद संसद भवन परिसर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। लोकसभा के साथ ही राज्यसभा की कार्यवाही भी अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। इसके साथ ही संसद के बजट सत्र का समापन हो गया।

लोकसभा में इस सत्र में हुए कामकाज का ब्योरा देते हुए बिरला ने कहा कि इस सत्र में सभी की भागीदारी से उत्पादकता 129 प्रतिशत रही । आठवें सत्र तक सदन की उत्पादकता 106 प्रतिशत रही है । पिछले अनुभवों की तुलना में यह सत्र सभी के समर्थन से अच्छा रहा। इस सत्र में सभा ने कुल मिलाकर 40 घंटे देर तक बैठकर महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। सत्र के दौरान 182 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के लाभार्थियों के संबंध में 11 फरवरी को आधे घंटे की चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि सत्र के दौरान सदस्यों ने नियम 377 के अधीन 486 लोकहित के विषय सदन के समक्ष प्रस्तुत किए। इस सत्र में सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों पर अविलंबनीय लोक महत्व के मामले उठाए गए। इसके साथ ही सत्र के दौरान विभिन्न संसदीय समितियों ने कुल 62 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। मंत्रियों द्वारा विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर कुल 35 वक्तव्य दिए गए।

पेट्रोल-डीजल पर राहत की उम्मीद: कुछ दिन स्थिर रह सकते हैं दाम

दाम इसी तरह बढ़ते रहते हैं तो फिर सरकार पेट्रोल-डीजल पर लगने वाली एक्साइज ड्यूटी में भी कटौती का कदम उठा सकती है

नई दिल्ली: महंगाई की मार झेल रही देश की जनता पर हर रोज बढ़ रहे पेट्रोल-डीजल के दामों ने और भी बोझ डाल दिया है। हालात ये हैं कि 17 दिनों में 14 बार इनकी कीमतों में इजाफा किया जा चुका है। हालांकि, अब एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि आम जनता को पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दामों से राहत देने के लिए केंद्र सरकार ने बड़ी योजना तैयार की है। इसमें कहा गया है कि आने वाले कुछ दिनों तक इनकी कीमतें स्थिर बनी रह सकती है।

तेल कंपनियों को दिए दिशा-निर्देश: रिपोर्ट में सूत्रों ने कहा है कि सरकार ने तेल की बढ़ती कीमतों के बीच आम जनता को राहत देने के लिए जो योजना तैयार की है, उसके तहत पेट्रोल डीजल के दामों में फिर से स्थिरता बनी रह सकती है। सूत्रों के मुताबिक, सरकार की ओर से देश की प्रमुख तेल विपणन कंपनियों को इस तरह के दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। इसके अलावा ऐसी भी संभावना है कि अगर कच्चे तेल की कीमतों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कमी नहीं आती और दाम इसी तरह बढ़ते रहते हैं तो फिर सरकार पेट्रोल-डीजल पर लगने वाली एक्साइज ड्यूटी में भी कटौती का कदम उठा सकती है। ताकि आम जनता के बोझ को कम किया जा सके। रिपोर्ट की मानें तो सरकार ने राज्यों को भी कहा है कि वे पेट्रोल-डीजल पर वसूले जाने वाले वैट में कटौती करें।

17 दिन में 10 रुपये से ज्यादा इजाफा: गौरतलब है कि गुरुवार को देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया। वहीं बुधवार तक इनमें 14 बार बढ़ोतरी की जा चुकी थी। बीते सत्र दोनों के दाम 80-80 पैसे प्रति लीटर बढ़ाए गए थे। इन 17 दिनों में पेट्रोल-डीजल के दाम में 10 रुपये से ज्यादा की तेजी आ चुकी है। इस बीच सिर्फ तीन दिन 24 मार्च, एक अप्रैल और सात अप्रैल को ईंधन के दाम यथावत रहे थे। गुरुवार को दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 105.41 रुपये पर पहुंच गई है, जबकि डीजल का भाव 96.67 रुपये प्रति लीटर के भाव से बिक रहा है।

पेट्रोलियम मंत्री ने दिया था आश्वासन: गौरतलब है कि बीते दिनों भी विपक्ष ने जब तेल की कीमतों को लेकर सरकार पर निशाना साधा था तो पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर सरकार का बचाव करते हुए कहा था कि ऐसा अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में बढ़ोतरी के कारण हुआ है। हालांकि, उन्होंने आश्वासन दिया कि देश की जनता को सस्ती कीमतों पर ईंधन उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं।

कोरिया ओपन बैडमिंटन चैंपि. के क्वार्टर फाइनल में पहुंची सिंधु

सुनचियोन: भारत की स्टार महिला बैडमिंटन खिलाड़ी व तीसरी वरीयता प्राप्त पीवी सिंधु ने गुरुवार को कोरिया ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप 2022 के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। सिंधु ने यहां पाल्मा स्टेडियम में जापान की आया ओहोरी को हराकर क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु ने महिला एकल स्पर्धा के दूसरे दौर में जापान की अया ओहोरी को 21-15, 21-10 से हराया। यह मुकाबला 37 मिनट तक चला। सिंधु अब क्वार्टर फाइनल में बुसानन ओंगबामरुंगफान से भिड़ेंगी।

खबर संक्षेप

माँ कात्यानी की पूजा अर्चना के लिए उमड़ा श्रद्धालुओं का रेला

झूंसी। चैत्र नवरात्र महापर्व पर गुरुवार को माँ कात्यानी की आरती पूजन, पाठ के अनुष्ठान के लिये भक्तो का रेला उमड़ा रहा। मंगला आरती के बाद मंदिरो के कपाट खुलने से लेकर देर रात तक दर्शन पूजन को भक्तो का रेला लगा रहा। कोटवा स्थित माँ शीतला धाम पर माँ कत्यानी के स्वरूप की आरती हुई जिसके बाद भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस दौरान राजेश पांडे, अंकुर सिंह, रामू पांडे, अमरपाल सिंह, आयूष सिंह, छोटे आदि व्यवस्था में लगे रहे। वही अन्नपूर्णा धाम बुड्ढी मईया मंदिर पर माँ के छठे स्वरूप महिसासुर का वध करने वाली माँ काली के स्वरूप की पूजा हुई। माँ काली के स्वांग के दौरान जयघोष से पूरा क्षेत्र गूँजता रहा। मंदिर में दर्शन पूजन को पहुचे श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना कर आरती की प्रसाद लेकर अपने अपने घरों को गए। अवधराज सिंह, सृजन मिश्रा, हरिकेश सिंह, बंगाली बाबू, ग्राम प्रधान जयराम, पीयूष, अभिषेक मिश्रा, शशिकेंद्र सिंह, रतन सिंह मंदिर के पुजारी अवधेश व्यवस्था में लगे रहे।

जिलाधिकारी ने यूपी बोर्ड की परीक्षा के लिए बनाये गये परीक्षा केन्द्रों का किया भ्रमण

अखंड भारत संदेश

परीक्षा की शुचिता प्रभावित करने वालों के विरूद्ध करें कड़ी कार्यवाही : जिलाधिकारी

परीक्षा केंद्रों का भ्रमण करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री गुरूवार को उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षा-2022 को नकल विहीन कराये जाने के उद्देश्य से परीक्षा केन्द्रों माधव ज्ञान केन्द्र इण्टर मीडिएट कालेज खरकौनी नैनी, रणजीत पण्डित इण्टर कालेज नैनी सहित अन्य कालेजों का निरीक्षण किया तथा परीक्षा केन्द्रों पर स्टेटिक मजिस्टेट से चल रही परीक्षाओं की जानकारी ली। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान विद्यालयों में सीसीटीवी कैमरों की क्रियाशीलता के बारे में जानकारी ली और कहा कि सभी सीसीटीवी कैमरे लगातार क्रियाशील रहे साथ ही मानीटरिंग सेंटर पर लगातार इसकी निगरानी भी की जाये। जिलाधिकारी ने परीक्षा केन्द्रों पर गर्मी के मौसम को देखते हुए पानी की व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाओं को दुरूस्त रखने के लिए कहा है। उन्होंने कालेजों के प्रधानाचार्यों से कहा कि इस बात का ध्यान रखा जाये कि सेंटर के पास कोई भी अनधिकृत व्यक्ति न टहलते हुए मिले। उन्होंने सख्त निर्देश दिया है कि परीक्षा में किसी भी प्रकार लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं होगा। परीक्षा की शुचिता प्रभावित करने वालों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश दिये है।

अरैल क्षेत्र के गंगातट पर आधुनिक शवदाह गृह के निर्माण हेतु मॉग

युमनापार विकास संघर्ष समिति द्वारा सीएम को भेजा माँगपत्र

नैनी। अरैल क्षेत्र में गंगातट पर दाह संस्कार मे समस्याओं को लेकर यमुनापार विकास संघर्ष समिति द्वारा वर्षों से की जा रही शवदाह गृह निर्माण की मांग के सम्बन्ध मे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित सम्बन्धित मंत्री एवं अधिकारियों को पत्र भेजकर समस्याओ से अवगत कराते हुए आधुनिक शवदाह गृह का निर्माण कराने की माँग की है। समिति के अध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय का कहना है कि प्रयागराज में गंगा, यमुना व सरस्वती का संगम होने की वजह से हिंदू धर्मावलंबी अपने परिजनों का दाह संस्कार प्रयाग के गंगातट पर करना ज्यादा श्रेयश्कर मानते है, परंतु शवदाह गृह की समुचित व्यवस्था न होने से लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आगे पत्र के माध्यम से बताया कि ने पत्र के माध्यम से शासन- प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए बताया कि प्रयागराज के नैनी अरैल क्षेत्र में गंगा के किनारे यमुनापार सहित आसपास के कई जिलो के लोग अपने परिजनों का शव लेकर आते हैं लेकिन सुविधा के अभाव मे परिजनो को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्होने वर्षों से हो रही माँग तथा गंगा की निर्मलता व पवित्रता को ध्यान में रखते हुए अरैल क्षेत्र मे आधुनिक शवदाह गृह का निर्माण शीघ्र कराके जनसुविधा के साथ गंगा को प्रदूषित होने से बचाने की माँग की है।

न्यूज झरोखा

माँ शीतला का शृंगार और जबाबी कीर्तन मुकाबला आज रामनगर में

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र रामनगर बाजार में शक्ति पीठ माँ शीतला धाम रामनगर बाजार में माँ शीतला जी का वार्षिक शृंगार पूजन उत्सव विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक आठ अप्रैल दिन शुक्रवार की नवरात्री सत्तमी पर सभी भक्तों को माँ के दरबार मे आना है। सभी भक्तगण उपस्थित होकर माँ के सुंदर झांकी और माँ का दर्शन पूजन करे। साथ ही रात्रि जागरण हेतु जबाबी कीर्तन का आयोजन हैं। कीर्तन कलाकार राखी आजाद उरई (जालौन) एवं सुशील दिनकर प्रयागराज के बीच मुकाबला हैं। उक्त जानकारी मंदिर के संरक्षक मोती लाल पाल धनगर के द्वारा प्राप्त हुई। मन्दिर के पुजारी उमा शंकर पंडा, ठाकुर पंडा, भुल्ली पंडा और कार्यक्रम के सहयोगी नीरज यादव (ग्राम प्रधान प्रतिनिधि) रामनगर, एडोकेट देवेश यादव, एडोकेट दिवाकर यादव, अधिवक्ता आर एम पाल, अधिवक्ता ईश्वर चंद्र धनगर, संजय केशरी, शमशेर यादव, डॉक्टर राजेन्द्र बिंद, राजेश पाल, रामानन्द कुशवाहा, नीरज पाल, फूल चन्द्र यादव,बिंदु पाल, कन्हैया लाल पाल, आयोजक मण्डल के तरफ से सभी माँ के भक्तों को नवरात्री की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

10 अप्रैल को भगवान श्रीराम की भव्य शोभायात्रा निकलेगी जंघई बाजार में

जंघई। रामनवमी के अवसर पर रविवार 10 अप्रैल को 3 बजे जंघई बाजार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय जनता पार्टी के तत्वावधान में श्रीराम जानकी मंदिर प्रांगण से भगवान श्रीराम की शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभायात्रा में घोड़े, गाजे बाजे एवं भांगड़ा के साथ प्रभु श्रीराम की भव्य झांकी निकलेगी जो कि श्रीराम जानकी मंदिर से बाबानगर, दुगार्गंज बाईपास, जंघई बाजार में होते हुए जंघई कॉलोनी से पुनः श्री राम जानकी मंदिर पर पहुचेगीं।जंघई बाजार को पूरी तरह भगवा झंडे एवं भगवा तोरण से सजाया गया है। जिसमें शैलेश पाठक, आयुष जायसवाल, गुलाब, धर्मराज तिवारी, रोहित जायसवाल, विक्की जायसवाल, राजन, मनीष, नीरज, ऋषि, सुजीत, बंटी, बॉबी, सोनी आदि कार्यकताओं के प्रयास से सम्पूर्ण जंघई नगर को भगवा ध्वज से सजा दिया गया है।

विधुत चेकिंग अभियान से मचा हड़कम्प

झूंसी। विद्युत विभाग की टीम ने अभियान चलाकर उपभोक्ताओं के यहां लोड चेकिंग की। इस दौरान अनेक उपभोक्ताओं के घरों पर स्वीकृत लोड से अधिक विद्युत का इस्तेमाल होता पाया गया। सात उपभोक्ता के घर बिजली चोरी पकड़ी गई। अभियान के दौरान उपभोक्ताओं में हड़कंप मचा रहा। गुरुवार को विद्युत विभाग की टीम ने त्रिवेणीपुरम, उस्तापुर, आवास विकास कालोनी के 120 घर में जाकर विद्युत भार की चेकिंग की। चेकिंग के दौरान अनेक उपभोक्ताओं के यहां स्वीकृत लोड से अधिक मात्रा में बिजली का उपयोग होता पाया गया। कुछ घरेलू कनेक्शन पर कमर्शियल उपयोग करते पकड़े गए साथ ही 7 घरो में कटिया लगाकर चोरी करते उपभोगता पकड़े गए। अचानक शुरू हुए चेकिंग अभियान के दौरान उपभोक्ताओं में काफी हड़कंप मचा रहा। एसडीओ विजय कटारिया के नेतृत्व में चलाए गए चेकिंग अभियान मे जेई अरविंद कुमार, राकेश समेत लाइन स्टाफ के अन्य कर्मचारी शामिल रहे। एसडीओ के मुताबिक चेकिंग अभियान आगे भी जारी रहेगा।

नागरिक पीजी कालेज जंघई में बीए, बीएससी, बीएड की परीक्षाएं आयोजित

जंघई। नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई में अध्ययनरत बीए, बीएससी, बीएड की परीक्षाएं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय द्वारा करवाई जा रही है। प्राचार्य डॉ राजीव मालवीय ने बताया कि हमारे महाविद्यालय में बीए, बीएससी, बीएड कक्षाओं की सेमेस्टर, एनुअल परिक्षाओं का संचालन परीक्षा विभाग द्वारा नकलविहीन कराई जा रही है। किसी भी छात्र छात्राओं को नकल करने की इजाजत नहीं है जो भी नकल करते हुए पकड़ा जाएगा तत्काल उसको अनुचित साधन का प्रयोग करने का दंड मिलेगा परीक्षा में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी पूरी उर्जा से सहयोग में लगे हुए हैं।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष में सीएमपी डिग्री कॉलेज में क्रिकेट प्रतियोगिता संपन्न

अखंड भारत संदेश

ग्राउंड में उपस्थित समस्त खिलाड़ी

ट्राफी देते अधिकारी

प्रयागराज। गुरुवार को सी. एम. पी डिग्री कॉलेज मे विश्व स्वास्थ दिवस के उपलक्ष्य पर लॉ और बी.ए के छात्रों के बीच मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।इस प्रतियोगिता में लॉ की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए बीए की टीम को 10 ओवर में सात विकेट के नुकसान पर 71 रन का लक्ष्य दिया जहां पर बीए की टीम ने लक्ष्य का पीछा करते हुए दो विकेट के नुकसान पर 74 रन बना कर आठ विकेट से मैच को जीत लिया। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ बैटमैन का खिताब मृदुल (बीएएलएलबी) को मिला तथा सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी का खिताब आदित्य (बीए) को मिला। इस प्रतियोगिता में बतौर मुख्य अतिथि आदरणीय मनीष निगम एडीजे प्रयागराज मौजूद रहें। आपने क्रिकेट की शुरूआत टास उछाल कर और बच्चों से परिचय प्राप्त कर किया। आपने अपने संबोधन में खिलाड़ियों को विश्व स्वास्थ दिवस की शुभकामनाएं दी साथ ही साथ बच्चों को खेल के विभिन्न आयामों से भी अवगत करवाया । आपने कहा की अब तो नई शिक्षा नीति में भी खेल कूद जैसे कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है। आपने कहा की स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क रहता है और स्वस्थ मस्तिष्क में ही स्वस्थ ज्ञान का वास होता है।कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर बृजेश कुमार (प्राचार्य सीएमपी डिग्री कॉलेज)जी ने की।प्रतियोगिता में बतौर अतिथि श्री संजीव कुमार सिंह थाना कीडगंज तथा श्री अमित कुमार सिंह थाना धूमनगंज मौजूद रहे।

इस प्रतियोगिता का आयोजन श्री अनंत सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग व संयोजक - खेलकूद सीएमपी डिग्री कॉलेज प्रयागराज के नेतृत्व में संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में डॉ भूपेंद्र त्रिपाठी,डॉ नीता सिन्हा,डॉ भूपेंद्र बजाज, डॉ नीरज सिंह, डॉ यादवेंद्र ,डॉ अकरम, डॉ हेमलता पंत, डॉ राजकुमार , डॉ तेज प्रताप आदि शिक्षकगण उपस्थित रहे ।इस प्रतियोगिता को सकुशल संपन्न कराने में अविनाश, निखिल, धर्मेंद्र , सिद्धार्थ ,अंकुर, दिलीप, प्रत्युश, मनदीप, हर्ष, शांतनु, शान्वी, अस्मित, अंशु, दिलीप, लकी, सुप्रिया, हर्षित, अच्यूत, अरविन्द, रवि, देवव्रत, अभिषेक, अभिषेक कुमार सिंह, वैभव त्रिपाठी, आशीष द्विवेदी ,रोहित आदि सभी छात्र छात्राओं ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

युवती का अपहरण कर युवक उसे नशीला पदार्थ खिला कर स्टेशन पर छोड कर भागा

मऊआइमा। एक युवती का अपहरण कर उसे नशीला पदार्थ खिला कर भागे युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस आरोपी युवक को गिरफ्तार कर युवती का डाक्टरी परीक्षण के लिए भेजा है।और युवक से पूछताछ कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम कहली बादलपुर निवासनीय एक 19 वर्षीय युवती का अपहरण कर उसे नशीला पदार्थ खिला कर मऊआइमा स्टेशन पर छोड कर भाग गया। युवती के परिजनों को खबर हुई तो वह मऊआगमा थाने में गांव के अजय कुमार पुत्र आशोक कुमार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया आरोपी युवक को पुलिस गिरफ्तार कर पूछ ताछ कर रही है और बेहोश युवती का उपचार एंव डाक्टरी परीक्षण के लिए महिला अस्पताल भेज दी है।

बारा पुलिस ने शांति भंग में 7 का किया चालान

बारा। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज के निदेर्शानुसार चलाए जा रहे अभियान के तहत बारा पुलिस ने राघवेंद्र प्रताप पुत्र कैलाश चंद्र उम्र 32 निवासी ग्राम लोहागरा थाना बारा संतोष कुमार बिंद पुत्र मंगला प्रसाद उम्र 28 वर्ष निवासी ग्राम कोरारी थाना बारा शुभम शुक्ला पुत्र सर्वेश शुक्ला उम्र 20 वर्ष निवासी ग्राम गजा पुर थाना बारा विनय कुमार मिश्र पुत्र रामकृष्ण उम्र 32 वर्ष निवासी ग्राम गजा पुर थाना बारा कुलदीप मिश्रा पुत्र बालकृष्ण उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम गजा पुर थाना बारा अंजनेश मिश्र पुत्र हनुमान प्रसाद उम्र 24 वर्ष निवासी ग्राम गजा पुर उम्र 24 वर्ष जय मिश्रा पुत्र रामनरेश मिश्रा उम्र 30 वर्ष थाना बारा जनता प्रयागराज को धारा 151 /107 /116 सीआरपीसी धारा के अंतर्गत गिरफ्तार कर संबंधित न्यायालय में प्रस्तुत किया गिरफ्तार करने वाली टीम मे उप निरीक्षक राजेश सचान उप निरीक्षक प्रमोद यादव उप निरीक्षक कौशलेंद्र बहादुर सिंह उप निरीक्षक प्रशिक्षु विजय पांडे कांस्टेबल धर्मेंद्र मौर्य कांस्टेबल आकाश सिंह कांस्टेबल अमित कुमार प्रमुख रूप से थे।

भागवत कथा के समापन पर कवियों ने सजाई महफिल

कथा के अंतिम दिन राजा महेंद्र प्रताप सिंह ने भी डाली आहुति, रचनाओं को सुनने के लिए देर रात तक जमे रहे श्रोता

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। 30 मार्च से छह अप्रैल तक आयोजित श्रीमद भागवत कथा का समापन हो गया। छह अप्रैल को विशाल हवन-यज्ञ और प्रसाद वितरण के साथ हर-हर महादेव के उद्घोष के साथ कथा का समापन हुआ। अंतिम दिन भागवत कथा के हवन कुंड में आहुति डालने वालों की कतार लग गई। शंकरगढ़ स्टेट के राजा महेंद्र प्रताप सिंह ने भी अवाम के साथ बैठकर यज्ञ में भाग लिया और आहुति डाली। इसके पश्चात कन्या भोज का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान समेत तमाम लोगों ने कन्याओं का पांव पखारकर आशीष लिया।

अंतिम दिन कथाव्यास आचार्य विकास महाराज ने लोगों को सत्संग की शरण में जाने का आह्वान किया, कहा कि इसी से जीवन का उद्धार संभव है। आठ दिवसीय श्रीमद भागवत कथा के समापन मौके पर हवन-प्रसाद वितरण के साथ शाम को कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्रीय कवियों ने भावपूर्ण रचनाओं का पाठ कर सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया। संत कवि अक्षय शिवम शुक्ल ने अपनी रचना- प्यार बांटने को मिली है जिंदगी, जीने के वास्ते पड़ी है जिंदगी, हारना नहीं किसी मुकाम पर... सुनाकर वाहवाही लूटी। इसी क्रम में सुरेश कुमार केसरवानी 'ओमशांति' ने -घर को घर बनाने में ही जीवन बीत जाता है... सुनाकर लोगों को जीवन की सच्चाई से रूबरू कराया। जबकि केशरीनंदन ने अपनी पंक्ति -हमारा मुल्क एक गांव, जहां पर गोकुल... के जरिए लोगों के दिलों में भक्ति का संचार किया। इसी तरह प्रयागराज झूसी से आए गंगा त्रिपाठी 'मासूम' नए भी अपनी रचनाओं से लोगों को जमकर गुदगुदाया और तालियां बटोरी। कार्यक्रम में इं. अशोक कुमार गुप्ता ने सभी कवियों का आभार जताया। कवि सम्मेलन में संत कवि अक्षय शिवम शुक्ल (प्रयागराज) के साथ आलोक जी कविनाथ (कोरांव), केशरी नंदन,गंगा त्रिपाठी मासूम, सुरेश कुमार केसरवानी ओम शांति, रामानुज गुप्ता, सुरेश केसरवानी (द्वितीय) ने भी काव्य पाठ किया। इस मौके पर एसओ मनोज कुमार सिंह, उपनिरीक्षक ऋतुराज सिंह के अलावा कथावाचक पंडित विकास महाराज, पंडित त्रियुगीकांत मिश्र,रोहित केसरवानी, विनोद केसरवानी, टमाटर गुरु, मसुरियादीन वर्मा, पारस द्विवेदी, राजेश केसरवानी, हनुमान केसरवानी, मनोज केसरवानी समेत तमाम लोग देर रात तक डटे रहे।

राजनैतिक दबाव से प्रधान सहित डेढ़ दर्जन मकान मालिकों को किया जा रहा परेशान

अखंड भारत संदेश

कोरांव। सात अप्रैल को कोरांव तहसील के ग्राम देवघाट में स्थित डेढ़ दर्जन मकानों के मालिकों को राजस्व विभाग की टीम राजनैतिक दबाव में गलत नाप के आधार पर कार्यवाही करने से मुकर गई। बता दें कि ग्राम देवघाट में स्थित भू खंड संख्या 1152 पर दया शंकर विश्वकर्मा के जमीन पर मुद्दतों से पक्के मकान बने हुए हैं। ठीक ऊंसके सामने पीडब्ल्यूडी की भू खंड संख्या 1153 करीब ग्यारह विश्वा है जिस पर मार्ग निर्माण हो चुका है। किंतु कुछ सत्ता के कार्यकर्ता प्रधान सहित डेढ़ दर्जन लोगों से अवैध वसूली के चक्कर में कामयाबी नहीं मिल पाई तो एक भू माफिया से उक्त लोगों के खिलाफ एसडीएम के यहां आवेदन डलवा कर नाप में लेखपाल से फर्जी रिपोर्ट लगवा कर पीडब्ल्यूडी में कुछ हिस्सा दर्शा दिया। जिसका मकान मालिकों ने निस्पक्छ सिरहड़े से नाप की मांग किया किंतु राजनैतिक दबाव के चलते एसडीएम तहसीलदार कोरांव ने कोई ध्यान नही दिया। जिस कारण मकान मालिकन राजस्व विभाग सासन लखनऊ आवेदन किए,सासन ने डीएम प्रयागराज को आदेशित किया कि सरहद से राजस्व पीडब्ल्यूडी की टीम से पैमाइस सीमांकन करें। किंतु तहसील प्रशासन मूक दर्शक बना रहा। अवगत हों कि ग्राम प्रधान अल्हवा सहित सभी वर्ग के लोगों का मकान दया शंकर विश्व कर्मा की भूमि पर मुद्दतो से बना हुआ हैं। विपक्षी हाईकोर्ट में रिट किए कि पैमाइज लेखपाल की एकतरफा रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही नहीं कर रहे। और मानहानि की भी रिट किए। जिसके तहत सात अप्रैल को पीडब्ल्यूडी के अभियंता,नायब चकबंदी, कानूनगो लेखपाल,आदि पु बाल की मौजूदगी में पुनः नाप रखी गई किंतु डेढ़ दर्जन सहित प्रधान लोगों का मकान पीडब्ल्यूडी में न फंसने के कारण गलत नाप टीम नहीं किया। प्रधान के विपक्षी सत्ता के नेताओं से दबाव एसडीएम तहसीलदार से मकानों को जबरन फंसवाने का प्रयास कर रहे हैं। जिस संबंध में अखिल भारतीय प्रधान संगठन प्रयागराज ने निंदा की है। और संगठन ने विधायक कोराव और जिले के भाजपा नेताओं से तत्काल मकान मालिकों को परेशान न करने की वार्ता की। चर्चा है कि लेखपाल राजबहादुर पटेल फर्जी ढंग से भू माफिया के नाम मालती पाल नामक महिला की जमीन को मृतक दिखा कर जमीन ट्रांसफर कर दिया था जिसमे लेखपाल भू माफिया गंभीर मुकदमों में फांस गए हैं। जिससे प्रधान से बदला लेने के लिए राजस्व टीम लगी हुई है। प्रधान संगठन ने चेतावनी दी है कि यदि राजस्व टीम गलत कार्यवाही करने की कोशिश करेगा तो संगठन प्रधान शहजादे और डेढ़ दर्जन मकान मालिकों के हितार्थ डीएम के यहां धरना देगा। और दोषी राजस्व कर्मियों के विरुद्ध कार्यवाही हेतु संगठन सीधे मुख्य मंत्री से मिलेगा।

क्या बोले अधिवक्ता

,,,,,,
मेरी मौजूदगी में नाप टीम करने आई। किंतु प्रधान सहित किसी का मकान पीडब्ल्यूडी में नहीं फंसा तो जबरन प्रधान को परेशान करने के लिए मकान नापने का कुप्रयास करने लगे। किंतु सच्चाई देख टीम वापिस चली गई क्योंकि मौके पर किसी मकान मालिक का में पीडब्ल्यूडी में नहीं है। तहसील अफसरों को निस्पक्छ कार्यवाही की सीख अपने अधिनस्थों को देनी चाहिए।

अरुण कुमार तिवारी एडवोकेट
बार एसोसियेशन कोरांव

न्यायालय के आदेश पर पांच के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज.किया

मऊआइमा। तीन माह पूर्व वृक्ष काटने को लेकर घर में घुसकर मार पीट करने पर न्यायालय के आदेश पर पांच के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है।मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम वाजिदपुर निवासी अरुण कुमार यादव पुत्र मोतीलाल का आरोप है कि वह अपना नीम का वृक्ष काट रहा था तभी उनके विपक्षी आ कर उसके घर में घुस कर मारे पीटे और जान से मारने की धमकी भी दिए।तथा परिवार के कई लोगो को मार पीट कर घायल कर दिए। कहीं सुनवाई न होने पर अरूण कुमार ने न्यायालय में न्याय की गुहार लगाई न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने बुधवार को पड़ोस के शिव कुमार, अरविन्द कुमार, रवीन्द्र उर्फ मिठठू , छोटे लाल ,जीत लाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज.कर लिया है।

पंचायत भवन रिठैया हुआ कंप्यूटरीकृत

अखंड भारत संदेश

पंचायत भवन में लगाया जा रहा कम्प्यूटर

करछना। विकासखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत रिठैया में पंचायत भवन में गांव के सभी कार्य का लेखा जोखा विकास से संबंधित सभी जानकारी ग्रामीणों को पंचायत भवन सदन पर कंप्यूटरीकृत के माध्यम से किया जाएगा उक्त आशय की जानकारी ग्राम प्रधान प्रतिनिधि लालबाबू पटेल ने बताया कि पंचायत भवन में गांव में कराए जाने वाले सभी कार्य पंचायत स्तर पर निपटाए जाएंगे जिसके लिए शासन द्वारा दी गई योजना के अंतर्गत पंचायत भवन में कंप्यूटरीकृत भवन का उद्घाटन किया गया साथ ही डाटा ऑपरेटर द्वारा गांव की सभी विकास की योजनाएं कंप्यूटरीकृत के माध्यम से अपलोड कर ब्लॉक स्तर पर अपडेट की जाएंगी गांव में आय जाति निवास आधार बैंकिंग सारी सुविधाएं पंचायत भवन पर निपटाए जाएंगे जिसके लिए पंचायत भवन रूम में फर्नीचर आलमारी एवं कंप्यूटर की सारी व्यवस्था शासन द्वारा दी गई योजना के अंतर्गत उपलब्ध करा दिया गया है जिससे ग्रामीणों की सभी सहूलियतें ग्राम स्तर पर मिल सके उद्घाटन समारोह में गांव के बड़ी संख्या में संभ्रांत व्यक्ति और ग्रामीण लोग उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

स्कूल चलो अभियान के तहत निकाली गई रैली

सहसों। स्कूल चलो अभियान जन जागरूकता के तहत उच्च प्राथमिक विद्यालय कल्यानपुर व प्राथमिक विद्यालय वजीरपुर की संयुक्त रूप से गुरुवार को स्कूल चलो अभियान की रैली निकाली गई। इस पर ग्राम प्रधान लवकेश मिश्रा ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए रैली को रवाना किया। रैली में शामिल बच्चों ने एक से बढ़कर एक शिक्षा का स्लोगन के साथ शिक्षा है अनमोल रतन पढ़ने का सब करो जतन, आधी रोटी खाएंगे स्कूल जरूर जाएंगे, फैले शिक्षा का उजियारा, बेटा बेटी एक समान आदि नारा लगाते हुए जयंतीपुर व वजीरपुर गांव के अभिभावकों को विद्यालय में अपने बच्चों का नाम लिखवाने के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर कमलेश मिश्र, प्रधानाध्यापक रवि दुबे, राज कुमार गिरी, कीर्ति पाठक, अंजू मिश्रा, ममता शुक्ला, बृजेश गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

लापता युवक की प्लांट के समीप मिली लाश

परिजनों का आरोप गोली मारकर कर दी गई है हत्या, मामले के खुलासे को लेकर एसपी यमुनापार समेत तमाम अधिकारी देर रात तक रहे मौजूद

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। 5 अप्रैल से लापता चल रहे युवक की लाश गुरुवार को पीपीजीसीएल बारा पावर प्लांट के समीप पाई गई। युवक की गोली मारकर हत्या की गई है हालांकि यह साफ नहीं हो सका कि उसे गोली क्यों मारी गई है। मामले की सूचना मिलने पर एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित, क्षेत्राधिकारी बारा विमल किशोर मिश्र और एसओ मनोज कुमार सिंह मौके पर पहुंचे और छानबीन की। दूसरी ओर युवक के मौत की जानकारी होने पर परिजनों ने पीपीजीसीएल बारा पावर प्लांट के बाहर धरना देकर हंगामा किया और आरोप लगाया कि गोली मारकर हत्या कर दी गई है। हालांकि खबर लिखे जाने तक यह साफ नहीं हो सका कि उसे गोली किसने और किन परिस्थितियों में मारी है। बारा थाना क्षेत्र के बबलू त्रिपाठी पुत्र कमल किशोर त्रिपाठी, लोहगरा, नीबी ने बताया कि इनके पिता कौशल किशोर त्रिपाठी 5 तारीख की शाम से अचानक लापता हो गए।घर से शाम को 4 बजे यह कह कर निकले थे कि यह पावर प्लांट जा रहे हूँ।दो दिन बीतने के बाद भी घर ना लौटने पर परिजनों को अनहोनी की आशंका हुई और इसकी सूचना बारा समेत शंकरगढ़ पुलिस को दी। परिजनों की सूचना पर बारा पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच कर रही थी।दो दिन तक युवक का पता नहीं मिलने पर परिजनों ने आरोप लगाया कि उसे गोली मार दी गई है और गुरुवार को परिजनों ने प्लांट के गेट के बाहर हंगामा किया और देर शाम तक बैठे रहे। दूसरी ओर मामले की जांच में पहुंचे एसपी यमुनापार ने बताया कि प्लांट में प्राइवेट गार्ड से उलझने पर फायरिंग की गई थी जिससे पैर में गोली लगी थी और युवक की मौत हो गई। लाश को पीएम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों द्वारा तहरीर के अनुसार आगे कार्रवाई की जाएगी।

अलोपशंकरी मंदिर में दर्शन को उमड़े भक्त

प्रयागराज। उत्तर से दक्षिण तक सारे भारत में शक्ति के असंख्य उपासना स्थल हैं। तीर्थराज प्रयाग मां शक्ति का प्रमुख स्थल है। यहां के कुछ मंदिर 51 महापीठों में शामिल हैं। पौराणिक कथा के अनुसार दक्ष यज्ञ में भगवान शिव की निंदा सुनकर जब सती ने अपना प्राण त्याग दिया, तब उनके मृत शरीर को लेकर देवाधिदेव क्रुध होकर तांडव नृत्य करने लगे। ऐसी स्थिति में शिव को शांत करने के लिए श्री नारायण ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भाग में काट दिया। सती का अंग जहां-जहां गिरा वह शक्तिपीठ के रूप में पूजे जाते हैं। धार्मिक मान्यता है कि प्रयाग में मां अलोपशंकरी मंदिर में भी माता सती की उंगली गिरी थी। यह भी जानना जरूरी है कि यहां मूर्तियों की नहीं बल्कि पालने की पूजा की जाती है। यहां माता सती का जो अंग गिरा वह लोप हो गया। संगम से तीन से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित अलोपीबाग मुहल्ले में मां अलोपशंकरी का प्राचीन मंदिर है। पुराणों के अनुसार यहां माता सती का जो अंग गिरा वह लोप हो गया। इसी कारण यहां मां भगवती की पूजा अलोपशंकरी के रूप में होती है। अंग लोप होने के कारण मंदिर में मइया की कोई मूर्ति नहीं है। भक्त मंदिर में स्थित पालने पर मत्था टेककर पूजा करते हैं। नवरात्र में यहां मां का श्रृंगार तो नहीं होता परंतु उनके स्वरूपों के अनुसार पाठ किया जाता है। इसके अलावा सोमवार व शुक्रवार को यहां विशाल मेला लगता है। यहां दूर-दूर से आकर भक्त मुंडन व नक, कण छेदन कराते हैं।होता है सामूहिक भजन नवरात्र के दौरान मंदिर में प्रतिदिन सामूहिक भजन-कीर्तन का आयोजन होगा। इसके माध्यम से मां की महिमा का बखान किया जाएगा, साथ ही मां का श्रृंगार फूल व पत्तियों से किया जाएगा। मन की मुराद पूरी करने के लिए भक्त नवरात्र के दौरान व्रत, पूजन से शक्ति स्वरूपा मां भगवती की आराधना करेंगे। वहीं मंदिरों में बैंडबाजा के साथ निशान भी चढ़ाने की परंपरा है।

न्यूज झरोखा

एमएलसी चुनाव सकुशल संपन्न कराए जाने को लेकर मतदेय स्थल का जिलाअधिकारी ने किया निरीक्षण

मेजा रोड। मेजा उरुवा ब्लाक में जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने गुरूवार को एम एल सी चुनाव सकुशल रूप से सम्पन्न कराये जाने को लेकर मतदेय स्थल क्षेत्र पंचायत कार्यालय, उरुवा का निरीक्षण करते हुए तैयारियों का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने मतदेय स्थल पर बैरिकेटिंग, जनरेटर सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें दुरूस्त कराने के निर्देश दिये साथ ही महिलाओं के लिए मतदेय स्थल पर अलग से व्यवस्था करायें जाने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने मतदान केन्द्र पर गर्मी के मौसम को देखते हुए पानी की उचित व्यवस्था रखने के लिए कहा है। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गेट पर ही चेकिंग की व्यवस्था कराये जाने के निर्देश दिये है तथा कैम्पस के अन्दर बैरीकेटिंग आदि की व्यवस्थायें दुरूस्त रखने तथा वीडियोग्राफी किये जाने के निर्देश दिये है। ब्लाकों पर जनरेटर सहित अन्य व्यवस्थायें कराये जाने के निर्देश दिये है। इस अवसर पर एडीएम वित्त एवं राजस्व एवं उपजिलाधिकारी मेजा विनोद पाण्डेय, थाना प्रभारी मेजा धीरेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

संचारी रोग नियंत्रण पर किसानों को किया गया जागरूक

सहसों। संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत विकासखंड बहादुरपुर के बदरा सोनौटी ग्राम सभा में गुरुवार को कृषि विभाग को विशेषज्ञों द्वारा किसानों को जागरूक किया गया। इस मौके पर कृषि विभाग के उप निदेशक कृषि रक्षा गोपाल दास जी एवं जिला कृषि रक्षा अधिकारी प्रयागराज मंडल इंद्रजीत यादव ने संचारी रोग- जे ई, ए ई एस एवं चूहा, छछूंदर के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि इस रोग के रोकथाम के लिए सबको स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए विषाक्त भोजन न खाएं हरी सब्जियों का सदा प्रयोग करें स्वच्छ साफ पानी पिएं, जल जमाव न होने पाए, घरों के अगल-बगल विशेष सफाई का ध्यान देना होगा, घरों में अथवा घरों के बाहर आसपास के जगहों पर चूहा, छछूंदर आदि जीव जन्तु न मरने पाए क्योंकि इनके मरने से दुर्गंध पैदा होती है उस दुर्गंध से निकलने वाले वायरस खतरनाक होते हैं। किसी भी व्यक्ति को बीमार पड़ने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों पर जाकर डॉक्टरों से तुरंत उपचार हेतु संपर्क करें। संचारी रोग के बारे में बचाव के लिए तमाम तरह के उपायों को बताते हुए लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान संजीव कुमार यादव, रामसहाय सिंह यादव, समाजसेवी शिव नारायण सिंह गप्पू , दिलीप कुमार मौर्य, यादवेंद्र यादव, नवीन कुमार, चंद्र मोहन सिंह, प्रवीण कुमार शुक्ला, बेचन सिंह सहित आदि किसान उपस्थित रहे।

महावीर ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशन में आयोजित हुआ अनुष्ठान

प्रयागराज। गुरुवार को महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूशंस के प्रांगण में मां दुर्गा नवरात्रि में यज्ञ अनुष्ठान का कार्यक्रम हुआ यज्ञ में प्रमुख रूप से भूतपूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ राकेश धर त्रिपाठी संस्था के निदेशक इंजीनियर प्रणव त्रिपाठी महावीर पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्रीमती रजनी शर्मा सहित सभी संकाय के प्रधानाचार्य शिक्षकों कर्मचारियों द्वारा यज्ञ में आहुति दी गई एवं विश्व कल्याण की भावना से रोग मुक्त विश्व की कामना की गई इस अवसर पर योग में महत्व को दशार्ते हुए माननीय भूतपूर्व मंत्री जी ने बताया कि यज्ञ से जहां वातावरण शुद्ध होता है वही लोगों के आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है(

उत्पीड़न को लेकर एस डी एम बारा को सौंपा : ज्ञापन

बारा। तहसील बारा में पत्रकारों ने बलिया जनपद में नकल की खबर प्रकाशित करने पर पत्रकारों की गिरफ्तारी के मामले में उप-जिलाधिकारी को मुख्यमंत्री को संबधित ज्ञापन सौंप औरआक्रोश जताया। यूपी बोर्ड परीक्षा में बलिया जिला के पत्रकारों को हाई स्कूल एवं इंटर की परीक्षा में व्यापक नकल के साथ इंटर संस्कृत एवं अंग्रेजी के पेपर सोशल मीडिया पर परीक्षा से पहले ही आउट हो जाने के कारण। इस संबंध में खबर प्रकाशित करने के आरोप में तीन पत्रकारों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। बलिया जिला प्रशासन अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए पत्रकारों को ही दोषी ठहराते हुए मुकदमा दर्ज कर जेल भेजने जैसा घृणित कार्य किया गया है। इस मामले को लेकर पत्रकारों के उत्पीड़न को रोकने के लिए सरकार ने शासनादेश जारी कर निर्दोष पत्रकार को मुक्त करे। इस मांग को लेकर जिला प्रयागराज तहसील बारा भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के तहसील इकाई बारा अध्यक्ष प्रवीण मिश्रा वा परवेज आलम ने तहसील से आए हुए पत्रकारों के साथ बारा उप जिलाधिकारी आई.ए.एस सौम्या गुरुरानी को ज्ञापन सौंप कर बलिया जिला प्रशासन की इस कार्रवाई का विरोध करते हुए आक्रोश जताया। इस मौके पर प्रयागराज तहसील बारा अध्यक्ष प्रवीण मिश्रा, सी.आई.बी. इंडिया के मंडल अध्यक्ष प्रयागराज परवेज आलम, जिला अध्यक्ष राजेश चतुर्वेदी, पुष्पराज सिंह, राशिद राशिद हयात, आदि पत्रकार मौके पर उपस्थित रहे।

गंगा में गंदगी न डालें, हमारी राष्ट्रीय धरोहर : दुकान जी

प्रयागराज। गंगा मे गन्दगी न डाले इसके लिए अब सब का साथ चाहिए गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है हमारी धरोहर हैं जिसके अम्रित जल से भगीरथ ने 60 हजार को तारने के लिए गंगा की तपस्या कर-के धरती पर बुलाया था प्रयागराज के अन्तराष्ट्रीय कलाकार समाजसेवी नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर अपने स्लोगन लिखे गंगा परिधान पहनकर लोगो को घाटो पर जा कर गंगा मे गन्दगी न डाले लोगों से अपील कर रहे हैं गंगा सेवक हर पन्द्रह दिन मे भारत सरकार को रिपोर्ट करें तभी हम अपने राष्ट्रीय नदी गंगा को प्रदूषण होने से जल्द ही कामयाब होगे अब आप संकल्प ले दूसरे को संकल्प दिलाये गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है हम ईसके जल को साफ स्वच्छ निर्मल अविरल धारा में बहने देंगे न गन्दगी करेगे न दूसरे को करने देगे यह जानकारी प्रेस को दुकानजी ने दिया।

शार्ट सर्किट से किसान की मौत दो बीघे की फसल भी जली

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। क्षेत्र के पीपीरिसा गांव के बाहर महुआ बीन कर लौट रहा एक किसान हाई टेंसन तार की चपेट में आकर बुरी तरह से झुलसते हुए काल के गाल में समा गया । साथ ही शार्ट सर्किट की चिंगारी से दो किसानों की गेंहू की फसल जलकर राख हो गई ।

घूरपुर थाना क्षेत्र के पिपिरिसा गांव में रहते हुए करछना थाना क्षेत्र के बोधाका पूरा निवासी केवला प्रसाद पटेल 58 बटाई पर किसानी करते थे । गुरुवार की दोपहर वह महुए की बाग से महुआ बीन कर लौट रहे थे । इसी बीच रास्ते मे लटके हाई टेंशन तार की चपेट में आकर बुरी तरह से झुलसते हुए मौत के मुह में चला गया । दोपहर बाद गांव के ही अयूब और सयूब के खेत में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई तो ग्रामीण आग बुझाने के लिए दौड़े तो केवला प्रसाद की लाश गेंहू के खेत में मिली ।पुलिस को सूचना दी गई तो मौके पर पहुंची पुलिस ने किसान के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है । शार्ट सर्किट से उपरोक्त दोनो किसानों की दो बीघे की फसल जलकर राख हो गई।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग छप्पर जलकर हुआ खाक

लेडियारी। प्रयागराज।खीरी थाना क्षेत्र के ग्राम नीबी मरहला में राजेश पुत्र रामप्रवेश चौहान के यहां लगभग दो बजे दिन में पक्के मकान से सटेआगे की और छप्पर में बिजली से शार्ट शर्किट द्वाराअचानक आग लग गई ।छप्पर जलने से छप्पर के नीचे बंधी भैंस झुलश गई ' आग पर ग्रामीणों द्वारा काबू पा जाने के कारण घर तथा गृहस्ती की सभी वस्तुएं जलने से बच गई। गांव के हल्का लेखपाल व प्रधान सहित डायल 112 व थाने की फोर्स मौके पर पहुंची। इसके अलावा थाना क्षेत्र के सिरहिर गांव में एक किसान के खेत में अज्ञात कारणों से आग लग गई लेकिन संयोग रहा कि किसान की फसल कट चुकी थी वहां पर किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हुआ।

पुलिस के हत्थे चढ़ा मुख्य आरोपित, पुलिस जल्द कर सकती है हत्या का खुलासा

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के पाली करनपुर गांव निवासी दरोगा बाबूचंद्र यादव के पुत्र आशीष यादव की हत्या के मामले मे क्राइम ब्रांच की पुलिस ने मोबाइल लोकेशन के जरिऐ मुख्य आरोपी को मऊ आइमा थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है। गोली मारने वाले युवक से पूंछतांछ की जारही है। जिससे यह कवायद लगाया जारहा है कि पुलिस जल्द ही युवक के हत्या की खुलासा कर सकती है। सराय इनायत थाना क्षेत्र के पाली करनपुर गांव निवासी दरोगा बाबू चंद्र यादव जो पुलिस विभाग में दरोगा हैं वर्तमान में लखनऊ में तैनात हैं इनके पुत्र आशीष यादव की सोमवार कि शाम पांडेपुर चौराहे पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी मृतक के बड़े भाई आलोक यादव की तहरीर पर पुलिस ने 11 लोगों के खिलाफ हत्या सहित कई गंभीर धाराओं में पुलिस ने मामला दर्ज किया है। जिसमे अबतक पुलिस ने मुख्य आरोपित सहित पांच लोगों को हिरासत मे लेकर पूंछतांछ कर रही है। पुलिस के अनुसार हत्या का कारण आशनाई भी हो सकता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय में एनडीआरएफ टीम द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

अखंड भारत संदेश

आपदा के दौरान लोगों को जागरुक करते एनडीआरएफ के जवान

मेजा रोड। आपदा जोखिम नियुनिकरण के अंतर्गत आपदा से बचाव एवं प्रबंधन हेतु विभिन्न संस्थानों और हितधारकों को सशक्त बनाने के लिए एनडीआरएफ की टीमें लगातार मॉक अभ्यास, क्षमता निर्माण कार्यक्रम व जन जागरुकता के अभियान चला रही है। साथ ही समाज का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बच्चे एवं शिक्षण संस्थानों में आपदा से बचाव हेतु स्कूलों में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रही है। उसी कड़ी में आज प्रयागराज के मेजाखास अवस्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में कमान्डेंट मनोज कुमार शर्मा के कुशल दिशा-निर्देशन में एनडीआरएफ की टीम द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम निरीक्षक आर.बी.गौतम की अगुवाई में आयोजित किया गया। जिसमें एनडीआरएफ की प्रशिक्षित एवं अनुभवी टीम द्वारा भूकंप में बचाव के तरीके, सीपीआर, गले में फंसी बाहरी वस्तु के निकालने के तरीके, शारीरिक चोटों का अस्पताल पूर्व उपचार, तात्कालिक स्ट्रेचर बनाना, लिफ्टिंग और मूविंग के तरीके, अग्निशमन और आग से बचाव की तकनीक, रस्सी बचाव तकनीक, अग्निशामक यंत्र का उपयोग कैसे करें, इम्प्रोवाइज्ड फ्लोटिंग डिवाइस (राफ्ट) बनाना, सड़क सुरक्षा, हीट स्ट्रोक से बचाव और कोविड-19 के बारे में जागरूकता आदि विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान भूकंप बचाव ड्रिल और आपातकालीन निकासी ड्रिल का भी अभ्यास किया गया। जिसमें नवोदय विद्यालय के विद्यार्थीयों, शिक्षकों और स्कूल के अन्य कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और इससे लाभान्वित हुए। इस अवसर पर संस्था की प्रधानाचार्य श्रीमती सुधा सेठी ने एनडीआरएफ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि एनडीआरएफ द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यक्रम बहुत प्रशंसनीय और शिक्षाप्रद है। इस कार्यक्रम से स्कूल के विद्यार्थी व अध्यापक लाभान्वित होंगे और आपदा के दौरान अपने और अन्य लोगों के जीवन को बचाने में अपना सहयोग प्रदान कर पाएंगे।

स्वस्थ जीवन शैली की स्वस्थ जीवन का आधार : डॉ अरुण कुमार

सहसों। वर्तमान समय में बढ़ते आधुनिकीकरण के साथ बीमारियां भी बढ़ती जा रही हैं। विश्व में फैले रोग से बचाव के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य के लिए विश्व में तमाम विशेषज्ञों द्वारा जन जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। उक्त बातें विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर गुरुवार को सहसों स्थित हरिओम हॉस्पिटल पर एक गोष्ठी एवं जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर अरुण कुमार मिश्र ने कहीं। उन्होंने कहा कि मनुष्य के स्वस्थ शरीर के लिए विश्व स्वास्थ संगठन की विशेष भूमिका होती है। जिससे हर मनुष्य को अपने शरीर के लिए विशेष ध्यान देते हुए ताजे फल, हरी सब्जियां, स्वच्छ पानी एवं घर में साफ सफाई, घरों के चारों तरफ गंदगी न फैलने पाए आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए डॉ अमित यादव ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य दिवस का मुख्य उद्देश्य है कि विश्व में फैली गंभीर बीमारियों के प्रति लोगों को जागरूक करना एवं बीमारों के इलाज के लिए दवाओं की व्यवस्था करना लोग योग से बहुत दूर जा रहे हैं ।इस अवसर पर ग्राम प्रधान विष्णु केसरवानी, डॉक्टर एस के सिंह, निर्दोष गुप्ता, शेरू केसरवानी, मनोज, ऋषभ सहित आदि लोग उपस्थित होकर जागरूक हुए।

यूफोरियल यूथ सोसाइटी ने मनाया अपना पहला स्थापना दिवस

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम में उपस्थित लोग

प्रयागराज। यूफोरियल यूथ सोसाइटी ने मनाया अपना पहला स्थापना दिवस दरसल पिछले साल 7 अप्रैल 2021 को विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर यूफोरियल यूथ सोसाइटी कि स्थापना हुई थी।आज के समय में यूफोरियल यूथ सोसाइटी की नौ शाखाएं हैं और ये शाखाएं बखूबी कार्यरत हैं जिनमें प्रयागराज प्रमुख शाखा है साथ ही साथ लखनऊ वाराणसी, राँची, गाजियाबाद, दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, पंजाब इत्यादि हैं इस सोसायटी ने कोरोना काल से ही लोगों की मदद कर रहे हैं जरूरतमंदों की जरूरत पूरा करने में हमेशा तत्पर रहती है कोरोना काल में जरूरतमंद को आक्सीजन सिलेंडर, आक्सीजन बेड मुहैया कराती थी साथ ही साथ जरूरतमंदों को रक्त मुहैया कराती थी टीम ने लगभग 900 लोगों की कोरोना काल में तमाम प्रकार के जरूरतों को पूरा की! युवाओं की टोली मिल कर आज इस सोसायटी को सफल बनाया सोसाइटी के अध्यक्ष देवेश जायसवाल जी ने बताया कि हमारी संस्था लोगों के लिए है सोसायटी कोरोना काल से लगातार लोगों की मदद कर रहे हैं साथ ही साथ प्रयाग शहर में रक्त के अभाव को दूर करने के लिए ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन करती रहती है साल भर में कुल 9 कैम्प आयोजित किए गए दरअसल सोसायटी ने पिछले एक साल से लगभग 40 थैलिसिमियां मरीजों को गोद लिया है जिन्हें हर महीने ब्लड की आवश्यकता पड़ती है जिन्हें टीम हर महीने ब्लड मुहैया कराती है इनमें से कुछ मरीज प्रयागराज और लखनऊ पी. जी. आई के है देवेश जायसवाल ब्लड डोनेट करने के लिए लोगों को जागरूक करने के प्रयासरत हैं और खुद भी रक्त दान और प्लेटलेट्स जरूरतमंदों को देते रहते हैं । सोसायटी के उपाध्यक्ष श्री अनीश पाण्डेय जी का कहना है कि देवेश पिछले एक साल में ब्लड और प्लेटलेट्स मिलाकर लगभग 25 बार दे चुके हैं ये प्रयागराज से चल कर लखनऊ पी. जी. आई. मे डोनेट करते हैं! साथ ही साथ सोसायटी जानवरों के लिए भी मदद करने में आगे रहती है देवेश जी ने बताया कि टीम की हर एक ब्रांच ने 9000 हर प्रकार के जानवरों को खाना तथा अन्य जरूरतों को पूरा करती है इसके अलावा टीम ने रेडी फॉर रेड नामक मुहिम चलायी है जिसमें लड़कियों, महिलाओं को हर महीने जिस माहवारी जैसे कठिन समस्या से गुजरना पड़ता है और कुछ युवतियों को इसके बारे में पता नहीं होता और पता भी होता है तो समाज के गलत धारणाओं के वजह से समस्या होती टीम ने डॉक्टर्स के साथ जागरूकता अभियान की शुरूआत की साथ ही साथ पैड भी बांटे गए और स्कूल में और बस्तियों में पैड बैंक की स्थापना की इसके अलावा टीम ने पिछले एक साल में पर्यावरण संरक्षण पर भी कार्य किया टीम ने घर घर जाकर पौधे बांटे तथा लोगों को जागरूक भी किया लगभग 1000 पेड़ पौधे लगाए गए और बांटे गए ' इस प्रकार टीम ने पिछले एक साल में कुछ इस प्रकार के कार्य किए! सोसायटी के उपाध्यक्ष अनीश जी ने टीम के तमाम मेंबर्स को सम्मानित आभार व्यक्त किया ।अनीस जी का कहना है कि सब ने मिल कर बखूबी अपने कार्य को समझा और निभाया और आगे भी हम इसी प्रकार मिल कर लोगों को मदद करते रहेंगे । सोसायटी के तमाम सदस्य गुफरान खान, अनीश पाण्डेय (उपाध्यक्ष) प्रणय द्विवेदी, विभव, प्रखर, मोहम्मद सुभान, रितेश मिश्रा (वाराणसी ब्रांच) , प्राची सिंह, अमन, मनोज त्रिपाठी, आशीष, मिताली, सुहानी सिंह, पंकज चौरसिया (सोफिया लॉरेंस), गगन सिंह, राहुल, अमित मौजूद रहे और साथ ही साथ सभी को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हिंदू नव संवत्सर पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेस

करछना। विश्व हिंदू परिषद की करछना प्रखंड इकाई की तरफ से हिंदू नव संवत्सर पर क्षेत्र के कई गांव में विहिप कार्यकताओं ने भगवा शोभायात्रा निकाली। इस दौरान लोगों ने मां भारती की जय-जयकार की।

विश्व हिंदू परिषद के जिला सह मंत्री रवि तिवारी के नेतृत्व में गंगा टेन्ट हाऊस रेलवे क्रासिंग करछना से माँ विंध्यवासिनी मन्दिर घटवा तक शोभायात्रा निकाली। जिसमें भारत माता की झांकी आगे-आगे चल रही थी। इसके पीछे सैकड़ों की संख्या में बाइक सवार गलिवाबाद , चनैनी, करछना बाजार, बेला चौराहा होते हुए माँ विंध्यवासिनी मन्दिर घटवा पहुंचे। जहां पर पहुंचकर भगवा यात्रा एक जनसभा के रूप में परिवर्तित हो गई। मौके पर उपस्थित विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद ने लोगों को नवसंवत्सर की शुभकामना देते हुए कहा कि भगवान श्रीराम सभी सनातनियों के रोम-रोम में विराजमान हैं। हम सभी को इनके आदर्शों पर चलने आवश्यकता है। वहीं शोभा यात्रा में विहिप व बजरंग दल के जिला पदाधिकारियों कि उपस्थित रही।

एंटीरोमियो की टीम ने मसुरियन धाम मेले में लोगों को किया जागरूक

लालापुर। एंटीरोमियो टीम ने गुरुवार के दिन क्षेत्र के मसुरियनधाम मेले पहुंच कर महिलाओं व युवतियों को जागरूक किया ।साथ ही मेले में टहल रहे किशोरों व संदिग्ध युवकों से बातचीत करते हुए हिदायतें भी दी गई। लालापुर थाने के एसआई कुलदीप उपाध्याय महिला आरक्षी गरिमा सिंह , रोशनी कुशवाहा के साथ गुरुवार के अमिलिया गांव में चल रहे मसुरियन धाम मेले पहुंचे । इस बीच महिला आरक्षी गरिमा कुशवाहा और रोशनी सिंह ने मेले में आई युवतियों व महिलाओं को सुरक्षा व आत्म सम्मान बचाने के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें आगे आने की बात कही ।इस बीच मेले में घंटो से घूम रहे युवकों को दरोगा कुलदीप उपाध्याय ने उनके पता और नाम की जानकारी लेने के बाद उन्हें निर्देशित किया कि कहीं कोई खुरापात किये तो जेल जरूर भेजे जाओगे। पुलिस की इस कार्रवाई से मेले में आए मनचले युवक मेले से बाहर निकल भागे।

सपा जिला कार्यालय पर हुई समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

बैठक करते समाजवादी पार्टी के नेता

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी कार्यालय जार्जटाउन मे समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष योगेश यादव की अध्यक्षता में प्रयागराज कौशांबी एमएलसी चुनाव की समीक्षा हेतु बैठक हुई, जिसमें प्रयागराज कौशांबी एमएलसी चुनाव के प्रत्याशी वासुदेव यादव व प्रभारी पूर्व सांसद धर्मराज सिंह पटेल, प्रदेश सचिव नरेंद्र सिंह, अमरनाथ मौर्य, एमएलसी मानसिंह के साथ तमाम पदाधिकारी समीक्षा बैठक में भाग लिया समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए यमएलसी प्रत्याशी वासुदेव यादव ने कहा कि आज जिस तरह से समाजवादी पार्टी की विचारधारा के लोग जनप्रतिनिधि के रूप में सबसे अधिक मतदाता हैं इससे जीत हमारी होगी वही झांसी स्नातक खंड के एमएलसी मान सिंह यादव ने कहा कि हमें पूरी ताकत एकता के साथ भारतीय जनता पार्टी का सामना करते हुए जनप्रतिनिधियों से संमर्क बनाते हुए समाजवादी बिचारधारा बताना होगा जिससे पार्टी की जीत हो सके। चुनाव प्रभारी नरेंद्र सिंह ने कहा कि जिस तरह से मतदाताओं में भारतीय जनता पार्टी द्वारा खौफ पैदा किया जा रहा है सरकारी तंत्र का दुरुपयोग कर मतदाताओं को भय दिखाया जा रहा है यह भारतीय जनता पार्टी की हताशा है हम सब को मिलकर उनके मंसूबों को कामयाब होने से रोकना होगा तथा मतदाताओं को प्रेरित कर अधिक से अधिक मतदान कराते हुए समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी को जिताना है, और समाजवादी पार्टी की जीत सुनिश्चित है। बैठक में प्रमुख रूप से जिला महासचिव सोमदत्त सिंह पटेल, गुलाब कली आदिवासी, श्याम कृष्ण यादव, वजीर खान, महबूब उस्मानी, विनय कुशवाहा, अरविंद कुमार मिश्र, नाटे चौधरी, त्रिभुवन यादव, सूरज यादव, जिला सचिव राजेश पांडेय, पप्पू निषाद, पंचू निषाद के साथ तमाम पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मृतक नायब नाजिर के परिजनों की ओर बढ़ने लगे हैं सहायता के हाथ

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के अध्यक्ष ने सौंपा 25 हजार की सहायता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राज्य कर्मचारी संघ परिषद के जिलाध्यक्ष करुणेश प्रताप सिंह ने गुरुवार को नगर के विवेक नगर में जाकर लालगंज के नायब नाजिर सुनील कुमार शर्मा (मृतक) के परिजनों से मिलकर मानवता का हाथ बढ़ाते हुए 25 हजार की नकद सहायता दी तथा मृतक सुनील कुमार की छह वर्षीय पुत्री की पढ़ाई का पूरा खर्च उठाने का वायदा किया।

बता दें कि इस हृदयविदारक घटना में लोगों की संवेदनाएं उभरकर सामने आ रही हैं जबकि शासन व प्रशासन की ओर से आश्वासन के सिवाय अभी इस परिवार को कोई सहायता नहीं मिली है। बता दें कि विगत 30 मार्च को नायब नाजिर सुनील कुमार शर्मा लालगंज में अपने आवास के बाहर बैठा था तभी वहां के एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह ने आकर होमगार्ड के डण्डे से नायब नाजिर की जमकर पिटाई कर दी थी, जिससे वह बुरी तरह से घायल हो गया था। दूसरे दिन 31 मार्च को घायल नायब नाजिर ने पुलिस को तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की थी, लेकिन एसडीएम के विरुद्ध कार्यवाही करने की पुलिस की हिम्मत कहां थी। दो अप्रैल की रात जिला मेडिकल कालेज में नायब नाजिर सुनील कुमार शर्मा ने दम तोड़ दिया, तब जाकर पुलिस व प्रशासन हरकत में आया। कर्मचारियों के दबाव में आरोपी एसडीएम के विरुद्ध हत्या का मुकदमा तो लिख दिया गया लेकिन पांच दिन बीत जाने के बाद अभी तक एसडीएम फरार हैं। पुलिस के हाथ कुछ नहीं लगा। जबकि कर्मचारी संगठन एसडीएम को गिरफ्तार करने, मृतक नायब नाजिर के परिजनों को मुआवजा व नौकरी की मांग कर रहे हैं। इसी बीच राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद भी सहायता के लिये आगे कदम बढ़ाया है।

मृतक नायब नाजिर की पुत्री को सहायता राशि देते जिलाध्यक्ष करुणेश प्रताप सिंह।

आखिर एसडीएम के घर कब चलेगा बाबा का बुल्डोजर?

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले के लालगंज क्षेत्र में इस बात की जोरदार चर्चा है कि बाबा का बुल्डोजर क्या साधारण लोगों के लिये है। पांच दिनों से फरार एवं निलम्बित एसडीएम पर क्या बाबा का बुल्डोजर चलेगा? जबकि इसी जिले में बुल्डोजर के भय से दुष्कर्म के दो आरोपी आत्मसमर्पण कर चुके हैं। ऐसे में लोग कानून की समानता पर भी सवाल खडे. कर रहे हैं।

डिप्टी सीएम का नवाबगंज चैराहे पर भाजपाईयों ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। भाजपा डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य गुरुवार की दोपहर लगभग साढ़े ग्यारह बजे लखनऊ से बाई रोड नवाबगंज चैराहे पहुँचे, जहाँ पहले से मौजूद भारी संख्या में भाजपा कार्यकताओं ने फूलों की माला व अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद लगभग 15 मिनट तक रुके रहे और अपनी कार के गेट का दरवाजा खोलकर खड़े होकर हाथ जोड़कर सभी का अभिवादन किया। उपस्थिति व्यापारी नवल किशोर अग्रहरि कक्कू ने डिप्टी सीएम को परियावां रेलवे स्टेशन पर प्रयागराज कानपुर इंटर सिटी एक्सप्रेस ट्रेन व लखनऊ प्रयागराज इंटर सिटी एक्सप्रेस ट्रेन के एक मिनट के लिए स्टेशन पर ठहराव के लिए हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन दिया। डिप्टी सीएम से उपस्थिति लोगो में किसी ने कालाकांकर ब्लाक में विकास कार्यो में हो रही भ्रष्ट्राचार की शिकायत किया जिस पर डिप्टी सीएम ने कहा कि भ्रष्ट्राचार को खत्म करना है, लाइये शिकायत पत्र दीजिये। इसके बाद समय को देखते हुए सभी को धन्यवाद देते हुए प्रतापगढ़ के लिये रवाना हुए जहॉ से अपने घर कौशाम्बी देर शाम तक पहुचेंगे। स्वागत करने वालो में मुख्य रूप से मोहित मिश्रा (मंडल अध्यक्ष कुसुवापुर), धर्मेंद्र मिश्रा (जिला मंत्री), अभय प्रताप सिंह पप्पन, पवन गौतम, संजय मौर्य, ननकऊ सोनकर, प्रभाकर साहू, सत्तीदीन अग्रहरि, राजकुमार दुबे (कुंडा मंडल अध्यक्ष) ,कमर असकरी, अमरजीत सिंह (बाबागंज मंडल अध्यक्ष), विमल किशोर, डॉ मनोज पाण्डेय, मो0 तारिक फारूकी, पुष्पा पटेल, विमल प्रजापति, इंद्रदेव सोनकर, सहित भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता लोग मौजूद रहे।

नवाबगंज चैराहे पर डिप्टी सीएम का स्वागत करते भाजपाई।

मारपीट मे दो के खिलाफ केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने महुआ बीनने के विवाद मे हुई मारपीट मे दो आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के शिवबोझ निवासी गयादीन के पुत्र राममूर्ति वर्मा ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती चार अप्रैल को सुबह साढे छः बजे महुआ बीनने को लेकर गांव के छोटे लाल वर्मा व उसकी पत्नी रेनू वर्मा उसे गाली देने लगी। विरोध करने पर दोनों आरोपियो ने पीड़ित को मारापीटा। आरोपियो ने पीडित को जानलेवा धमकी भी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने केस दर्ज किया है।

संस्कार ग्लोबल में आयोजित हुई मैक्सटॉप ओलंपियाड परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संस्कार ग्लोबल स्कूल टेउंगा में बृहस्पतिवार को मैक्सटॉप ओलंपियाड परीक्षा आयोजित की गई। इस परीक्षा में विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शामिल हुए। प्रिंसिपल स्मृति सिंह की देखरेख परीक्षा सकुशल सम्पन्न हुई। परीक्षा सम्पन्न कराने में प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, उमा सिंह, रश्मि सिंह, राहुल श्रीवास्तव, श्वेता, अविनाश सिंह, विकास सिंह, विनोद मौर्य आदि की विशेष भूमिका रही।

जमीनी रंजिश में वृद्ध को पड़ोसी आरोपियों में जमकर पीटा

मैक्सटॉप ओलंपियाड परीक्षा देते छात्र-छात्राएं।

कल आएंगे बनवारी लाल कंछल

प्रतापगढ़। उ0प्र0 उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल की एक बैठक जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता में जिला संगठन मंत्री राहुल केसरवानी के प्रतिष्ठान बाबागंज पर संपन्न हुई। बैठक का संचालन महामंत्री संजय सोनी ने किया। जिला महामंत्री संजय सोनी ने बताया कि व्यापार मंडल के रा./प्रां.अध्यक्ष बनवारी लाल कंछल का 9 अप्रैल को दोपहर लगभग ढाई बजे, पी डब्लू डी डाक बंगला, प्रतापगढ़ आएंगे।

दिव्यांगजनों को समर्पित पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर की नई शाखा

अखंड भारत संदेश

कानपुर। दिव्यांगजनों को समर्पित पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर की नई शाखा का उद्घाटन समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंत्री असीम अरुण ने फीता काटकर दिव्यांगजनों को समर्पित संस्था , पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर की नई शाखा का खलासी लाइन , कानपुर में उद्घाटन किया । संस्था पिछले लगभग पाँच वर्षों से दिव्यांगजनों के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए विश्वस्तरीय थेरपीस प्रदान कर रही है , साथ ही साथ उनके सामाजिक उत्थान के लिए समय झ समय पर विविध जागरूकता कार्यक्रमों का भी आयोजन करती रही है । कार्यक्रम में अतिथि विशेष के रूप में श्री संजीव पाठक , प्रदेश सह संयोजक , आर्थिक प्रकोष्ठ , भारतीय जनता पार्टी और श्री महेंद्र नाथ समरवाल , पूर्व डी.जी.पी. , जम्मू और कश्मीर उपस्थित रहे और कार्यक्रम संचालन पुष्पा खन्ना मेमोरयल सेंटर की निदेशिका श्रीमती रूमा चतुवेर्दी ने किया । श्रीमती रूमा चतुवेर्दी जी ने उपस्थित जनों को पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर के कार्यों से अवगत कराया साथ ही साथ ये भी बताया कि इस नई शाखा में हमारा प्रयास है कि अब हम उन लोगों तक पहुँचे , महँगी थेरेपी कराना जिनकी पहुंच में नहीं और बताया कि कैसे ये नयी शाखा जरूरतमंद लोगों को कम शुक्ल में या निःशुल्क थेरेपी मुहैया कराएगी । माननीय मंत्री श्री असीम अरुण जी ने संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और अपनी ओर से हर संभव मदद का आश्वासन दिया । उन्होंने कहा हमें दिव्यांगजनों को अलग नहीं समझना चाहिये वो भी हमारी तरह समाज का उतना ही पारूरी हिस्सा है जितना की हम सब दिव्यांगजनों की सेवा का कार्य बहुत बड़ा है हम सब को एक साथ मिलकर आगे आना चाहिए । कार्यक्रम में डॉ . यशवंत राव , विभागध्यक्ष , बाल रोग , कानपुर मेडिकल कॉलेज , श्रीमती बीना समरवाल , डॉ . अभिषेक चतुवेर्दी , हिरा मरियम , संचिता कपूर , पल्लवी चंद्रा , फातिमा डि झ सेल्वा , सत्यम तिवारी , कामाक्षी कटियार , इमरोज राशिद और शहर के कई जाने माने डॉक्टर्स और शिक्षाविद उपस्थित रहे ।

पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेन्टर के उद्घाटन में बैठे अतिथिगण व अन्य।

स्वस्थ भारत की पहचान खेलकूद, योग व व्यायाम: डा0 जेपी मिश्र

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कालेज की वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का दो दिवसीय कार्यक्रम गुरुवार को सम्पन्न हुआ। एथलेटिक्स की विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ-साथ पुरुष की कबड्डी फाइनल मैच का आयोजन किया गया।

एथलेटिक्स में 100, 200 व 400 मीटर की दौड़ में पुरुष वर्ग में धीरज कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में 100 व 200 मीटर में खुशी तथा 400 मीटर में साक्षी पाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ऊंची कूद में पुरुष वर्ग में महताब आलम व महिला वर्ग में साक्षी पाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक में पुरुष वर्ग में जियाउल हक व महिला वर्ग में तृप्ति ने प्रथम स्थान हासिल किया। कबड्डी पुरुष वर्ग का फाइनल मैच एमडीपीजी ब्लैक लायंस और साक्षी पाल को घोषित किया गया। इस दौरान महाविद्यालय के पूर्व

एमडीपीजी कालेज की वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता सम्पन्न

एमडीपीजी रेड टाइगर्स के मध्य सम्पन्न हुआ। वार्षिक प्रतियोगिता का ओवरआल चैम्पियन पुरुष वर्ग में धीरज कुमार व महिला वर्ग में प्राचार्य डा0 जेपी मिश्र ने कहा कि प्रधानमंत्री जिस यंग इण्डिया का नारा देते हैं और स्वस्थ भारत की बात करते हैं, उसे प्राप्त करने का साधन खेलकूद, योग और व्यायाम है।

विशिष्ट अतिथि जनपद की क्रीड़ाधिकारी पूनमलता राज ने कहा कि शिक्षा मनुष्य का मानसिक विकास करती है लेकिन खेलकूद से स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का निवास होता है। प्राचार्य प्रो0 मनोज मिश्र ने लगन और परिश्रम को सफलता का मूल मंत्र बताया और विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी। इस मौके पर डा0 रमेश चंद्र शुक्ल, डा0 प्रथमेश पाण्डेय, डा0 संतोष कुमार पाण्डेय, डा0 किरन मिश्रा, डा0 स्वामी नाथ तिवारी, डा0 केके तिवारी, डा0 अरुण कुमार वर्मा, डा0 बलराज मिश्र, अरुण प्रकाश सिंह आदि मौजूद रहे।

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी छात्र-छात्राएं।

संदिग्ध परिस्थितियों में हुई वृद्ध की मौत

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के नटोही के तिवारी का पुरवा में बुधवार को राम हर्ष पटेल (65) वर्षीय की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने पर पुलिस ने मृतक के भतीजा की तहरीर पर शव की लिखा पढ़ी करके पीएम को भेजा। जब कि परिजनों का कहना है कि बीमारी के चलते राम हर्ष की मौत हुई है जो मृतक का भतीजा मानने को तैयार नहीं है। भतीजे की तहरीर पर पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेजा। इस बाबत थाना प्रभारी रुकुम पाल सिंह का कहना है मृतक के लड़के व परिजन ने तहरीर नहीं दिया जब कि भतीजे ने जहरीला पदार्थ खाने से हुई मौत की तहरीर दिया।

थाने पहुंचकर वृद्ध ने लगाई इंसाफ की गुहार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जमीन के अदालत में स्थगन आदेश के बावजूद भी उस पर जबरिया निर्माण करने का विरोध करने पर एक वृद्ध को पड़ोसी आरोपियों ने पहले जमकर गालियां दिया और विरोध करने पर मिलकर जमकर मारा पीटा, जिससे वृद्ध को काफी चोटें आई। उसने पट्टी कोतवाली में पहुंचकर पड़ोसी आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए शिकायती पत्र दिया है।

कोतवाली क्षेत्र के कुकुवार गांव का राम सजीवन पुत्र दूधनाथ का पड़ोसियों से जमीनी विवाद चल रहा है। विवाद न्यायालय में चल रहा है जिसमें अदालत ने स्थगन आदेश भी दिया है।

पीड़ित ने बताया कि गुरुवार की दोपहर उसे जमीन के विवाद को लेकर आरोपी एक राय होकर उसके घर पर पहुंचकर गाली देने लगे। वृद्ध ने उन्हें गाली देने के लिए रोका तो तीन लोग उसके ऊपर हमलावर होकर लाठी डंडा तथा लात-घूसों से वृद्ध राम सजीवन को जमकर मारा पीटा। शोर-शराबा करने पर आसपास के लोग दौड़े तो आरोपी गालियां देते हुए तथा जान से मारने की धमकी देकर वहां से चले गए। पीड़ित मामले में पट्टी कोतवाली पहुंचा और सभी आरोपियों के खिलाफ नामजद तहरीर देकर मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है। पुलिस शिकायती पत्र लेने के बाद मामले में जांच कर रही है।

पट्टी में स्कूल चलो अभियान कार्यक्रम के साथ विदाई समारोह का आयोजन

परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को दिया गया पुरस्कार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी तहसील क्षेत्र के विकासखंड पट्टी के चिंतामणिपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय में स्कूल चलो अभियान के साथ साथ विदाई सम्मान समारोह आयोजित किया गया। साथ ही साथ सभी कक्षाओं में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम से बच्चों ने लोगों का मन मोह लिया।

पट्टी तहसील क्षेत्र के चिंतामणिपुर में आयोजित शिक्षा उन्नयन गोष्ठी विदाई व सम्मान समारोह उच्चतर प्राथमिक विद्यालय में मनाया गया, जिसमें बच्चों ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम गीत और नृत्य से मौजूद लोगों का मन मोह लिया । साथ ही साथ स्कूल चलो अभियान के तहत गीत पर नृत्य किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप शिक्षा निदेशक जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान अतरसन्ड मोहम्मद इब्राहिम प्रतापगढ़ रहे। मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष माल्यार्पण करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उसके बाद आए हुए अतिथियों का विद्यालय की छात्राओं ने मनोहारी स्वागत गीत गाकर उनका स्वागत किया। उसके बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला प्रशिक्षण संस्थान अतरसंड प्रतापगढ़ ने कहा कि शिक्षा की प्रमुख हथियार है जिसके बदौलत समाज को सशक्त किया जा सकता है । कार्यक्रम मैं मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि तथा सभा अध्यक्ष ग्राम प्रधान अमर बहादुर यादव के महत्वपूर्ण योगदान तथा विद्यालय के प्रधानाध्यापक विजय बहादुर सिंह के सेवा मुक्त होने पर विदाई समारोह आयोजित किया गया जिसमें बच्चों ने अपने मधुर गीत से लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में रोहित जायसवाल को भी सम्मानित किया गया।

मुख्य रूप से सुनील चैरसिया जयप्रकाश, जयराम पांडे राही, आलोक कुमार सिंह, अजय जयसवाल, इकबाल अहमद, छोटेलाल जयसवाल, भीम यादव, रामचंद्र चैरसिया, लालजी यादव सहायक अध्यापक, जयनाथ यादव सहायक अध्यापक, निर्भय सिंह सहायक अध्यापक तथा सुनील यादव सहायक अध्यापक, राजेश चैरसिया सहायक अध्यापक अनारकली शिक्षामित्र आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया कार्यक्रम का संचालन शिक्षक सर्वेश मिश्रा ने किया।

इंटर भौतिकी में 3010 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

प्रतापगढ़। माध्यमिक शिक्षा परिषद की चल रही हाईस्कूल, इंटर की परीक्षा में आज गुरुवार को द्वितीय बेला में इंटरमीडिएट की भौतिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र का पेपर था। इसमें नामांकित कुल परीक्षार्थियों 31166 में 3010 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। इस प्रकार केवल 28156 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी जिसमें 17226 छात्र व 10930 छात्राएं शामिल थीं।

गृहस्वामी को कमरे में बंद कर आभूषण व नगदी समेत हुई लाखों की चोरी

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। बीती रात थाना क्षेत्र के पूरेतोरई गांव में कपड़ा व्यवसायी शम्भूनाथ मिश्रा के यहॉ छत पर लगे सीढ़ी के दरवाजे को तोड़कर चोर घर के अंदर घुसे और कमरे में सो रहे गृहस्वामी शम्भूनाथ मिश्रा व उनके परिजनों को बाहर से कुंडी लगाकर अंदर बन्द कर दिया। स्टोररूम का ताला तोड़कर उसमें रखे बॉक्स व अटैची से कीमती सोने की एक हार 25 ग्राम, सोने की चूड़ी 24 ग्राम, सोने की चेन 10 ग्राम, दो अंगूठी तकरीबन 8 ग्राम,चांदी की एक हाफपेटी 500 ग्राम, चांदी की पाजेब 400 ग्राम, पायल तीन जोड़ी तकरीबन 200 ग्राम कुल कीमत लगभग चार लाख रुपये व एक लाख बीस हजार रुपये नगदी उठा ले गए। घटना की जानकारी पीड़ित को सुबह करीब चार बजे उठने के बाद हुई। भतीजे सुशील ने बाहर से बंद दरवाजे को खोल कर परिजनों को बाहर निकाला। स्टोररूम के अंदर जाकर देखा तो सारे सामान फर्श पर बिखरे पड़े थे। अटैची व पेटी में रखे जेवर और नकदी गायब थे। चोरी की घटना से पीड़ित व्यवसायी का लाखों का नुकसान हुआ है।

रसोईया पाक कला प्रतियोगिता में सदर की चांदनी रही अव्वल

अखंड भारत संदेश

जनपद स्तरीय रसोईया पाक कला प्रतियोगिता सम्पन्न

प्रतापगढ़। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में सभी ब्लॉक एवं नगर क्षेत्र से चयनित रसोइयों का जनपद स्तरीय रसोईया पाक कला प्रतियोगिता संपन्न हुई थी जिसके निर्णायक मंडल में जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह, जीजीआईसी इंटर कॉलेज प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव, गृह विज्ञान प्रवक्ता अंजू शुक्ला सेफ, शिवम डॉक्टर बंदना महिला चिकित्सालय प्रदीप कुमार राय खाद्य सुरक्षा अधिकारी एवं कक्षा 6 से 8 तक के 10 बच्चे जज बने।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरे ईश्वरनाथ के बच्चे प्रगति ओझा कक्षा 8 प्रांजल ओझा कक्षा 6 नगर क्षेत्र के अंकित मौर्य, मोहम्मद सोहेल मधुपुर के साहिल चकबनतोड़ हर्ष शुक्ला, प्रकाश यादव, अक्षय कुमार, अभय कुमार, सचिन गौतम अधिकारी गण एवं बच्चे जनपद से चयनित रसोईया द्वारा बनाए गए भोजन को चख कर उन्हें नंबर प्रदान किए थे। जिला समन्वयक मोहम्मद इजहार के निर्देशन में रसोईया पाक कला प्रतियोगिता आयोजित की गई थी जिसका परिणाम आज घोषित किया गया। प्रथम स्थान प्राप्त किया संविलियन विद्यालय सुखपाल नगर विकास खंड सदर की चांदनी। संविलियन विद्यालय बलीपुर नगर क्षेत्र की उषा पटेल द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तृतीय स्थान प्राथमिक विद्यालय सराय इंद्रावत विकासखंड बिहार की सोनकली ने प्राप्त किया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह ने आज परिणाम की घोषणा की। इस अवसर पर प्रमुख रूप से राम कुमार, सुशील सिंह, धर्मेंद्र ओझा, हरिओमकार, अनंत त्रिपाठी, हरजीवन आदि उपस्थित रहे।

रसोईया पाक कला प्रतियोगिता में प्रतिभागी रसोईयागण।

संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव मे सभी पर्चे वैध, चुनाव प्रचार हुआ तेज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव को लेकर गुरूवार को चुनाव समिति ने सभी प्रत्याशियों के पर्चे वैध करार दिया। इसके तहत अब अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष सिविल व महामंत्री पद पर प्रत्याशियों की अधिकता होने के कारण चुनाव रोमांचक हो उठा है। चुनाव समिति की बैठक मे आगामी अठारह अप्रैल को प्रत्याशियों के दक्षता भाषण को लेकर भी तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया।

बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष रामलगन यादव व संचालन महामंत्री रमेश पाण्डेय ने किया। संरक्षक कमलेश तिवारी तथा बाबूलाल वर्मा, प्रमोद सिंह, शारदाबक्श सिंह, रामकुमार पाण्डेय, राजेन्द्र विश्वकर्मा, राजेश तिवारी, रोशन लाल सरोज, इरफान अली, धीरेन्द्र मिश्र, जयप्रकाश शुक्ल, को मशक्कत करते देखा गया। नामांकन पत्रों की जांच मे प्रत्याशियों के पर्चे वैध पाये जाने के बाद तहसील एवं दीवानी परिसर मे चुनावी सरगर्मी परवान पर चढ़ी दिखी। प्रत्याशियों ने अब अपने समर्थन मे गुणा भाग तेज करते हुए साथियों के बीच चैपाल भी शुरू कर दी है।

खबर संक्षेप

दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा पॉक्सो एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त छोटका निषाद पुत्र प्रेम निषाद निवासी असरावल खुर्द थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त इम्तेयाज अहमद पुत्र मुस्ताक अहमद निवासी रामपुर धमावा थाना सैनी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त रमेश लोधी पुत्र राम किशोर निवासी लोधौरा उर्फ कायमपुर थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

चेकिंग के दौरान कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई, चेकिंग के दौरान दो पहिया चार पहिया वाहनों को चेक किया गया। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 80 वाहनों का ई चालान किया गया।

मॉडल के रूप में किया जाएगा गांव का विकास : केशव प्रसाद मौर्य

जनपद आगमन पर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य का जगह-जगह हुआ जोरदार स्वागत

अखंड भारत संदेश

डिप्टी सीएम का स्वागत करते कार्यकर्ता

अपनी माता का आशीर्वाद लेते डिप्टी सीएम

अझुवा कौशाम्बी। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का जनपद कौशाम्बी सिराथू प्रथम आगमन पर कार्यकताओं पदाधिकारियों आमजनमानस ने जगह जगह माल्यर्पण कर जोरदार तरीके से स्वागत किया उत्तर प्रदेश सरकार में दूसरी बार डिप्टी सीएम बने केशव प्रसाद मौर्य सिराथू क्षेत्र के लोकप्रिय नेता है और जिले की जनता उन्हें अपना लाल बनती है जैसे ही डिप्टी सीएम का काफिला लेहदरी पुल से आगे निकला स्वागत कार्यक्रम शुरू हो गया देवीगंज,कड़ा धाम सयारा सिराथू सैनी में पुनीत मौर्य,वेद प्रकाश पांडेय ,सैनी प्रधान प्रतिनिधि श्रवण पटेल के नेतृत्व और कसिया में भी जोरदार तरीके से स्वागत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है। डिप्टी सीएम सर्वप्रथम कड़ा धाम के आदिशक्ति शीतला माता के मंदिर में पहुंचे और कडा वासिनी शीतला माता का दर्शन कर पूजा अर्चना की है ततपश्चात उनका काफिला सयारा गेस्ट हाउस पहुंचा जहां पार्टी कार्यकताओं से मिल कर उनका हाल चाल लिया है पत्रकार वार्ता के दौरान उन्होंने कहा कि प्रदेश के गांव का विकास रूपी मॉडल तैयार हो रहा है गांवों को विकास के रास्ते पर अग्रसर किया जाएगा रूपरेखाएँ तैयार हो रही हैं शीघ्र ही क्रियान्वन की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी उन्होंने कहा कि सिराथू उनका गृह जनपद है विशेष ध्यान दिया जाएगा।एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि गोरखनाथ मंदिर हमले और आरोपियों के बारे में अखिलेश यादव पर टिप्पणी करते हुए कहा समाजवादी पार्टी जल्द ही समाप्त पार्टी बन जाएगी अखिलेश को एक आरोपी के बारे में खुले तौर पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए वह एक पूर्व सीएम है गोरखनाथ मंदिर पर सुरक्षाकर्मियों पर हमला करने वाले को सुरक्षाकर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर पकड़ लिया वह आतंकवादी संगठनों से जुड़ा था उन्होंने अखिलेश यादव के बयान पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उनका बयान सस्ता और निंदनीय है आपको ज्ञात हो अखिलेश यादव ने बुधवार को गोरखनाथ मंदिर हमले के मामले से निपटने पर सवाल उठाया था सपा प्रमुख ने जांचकताओं से आरोपी की मानसिक स्थिति पर ध्यान देने को कहा था। हजारों कार्यकताओं का हुजूम देखकर उन्होंने कहा कि समयाभाव के कारण अभी एक एक कार्यकर्ता से नही मिल पाए शीघ्र सिराथू आकर कार्यकताओं से मिलेंगे। सिराथू पैतृक घर पहुंचने पर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की माता ने आरती उतार कर मुंह मीठा कराया और उनकी लम्बी उम्र और सफलता की कामना की है इस दौरान उपस्थित समर्थकों ने जमकर केशव प्रसाद मौर्य जिंदाबाद के नारे लगाए है।

न्यूज झरोखा

मंझनपुर कोतवाल ने किया कस्बे में पैदल गस्त

कौशाम्बी। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर जनपद मुख्यालय मंझनपुर के प्रमुख मार्ग और कस्बे के अंदर मंझनपुर कोतवाल ने पुलिस फोर्स के साथ पैदल गस्त किया है गस्त के दौरान उन्होंने संदिग्ध लोगों की जांच पड़ताल की ओर आम जनमानस को सुरक्षा का एहसास दिलाया है। मंझनपुर कोतवाली से पुलिस फोर्स के साथ गश्त पर निकले मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने मंझनपुर चौराहा होते हुए कस्बे के नेहरू नगर चक नगर होते हुए विभिन्न मोहल्लों का पैदल भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था की स्थितियों का जायजा लिया।

पैरामिलिट्री के साथ मंझनपुर कोतवाल ने किया फ्लैग मार्च

कौशाम्बी। पैरामिलिट्री फोर्स के जवानो के साथ मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने मंझनपुर कस्बा और आसपास के क्षेत्र में भ्रमण कर सुरक्षा का अहसास कराया है पुलिस बल के जवानों एवं पैरामिलिट्री फोर्स के जवानों को लेकर कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने मंझनपुर कस्बे में एरिया डोमिनेशन किया तथा जनता से शांति पूर्ण व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। एमएलसी चुनाव नवरात्रि और रमजान को देखते हुए क्षेत्र के सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाये रखने के लिए मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह पुलिस बल व पैरामिलिट्री फोर्स के साथ कोतवाली से निकलकर मंझनपुर चौराहा चक नगर नेहरू नगर तहसील रोड ओसा रोड सहित कस्बे के विभिन्न मोहल्लों में फ्लैग मार्च किया साथ ही कस्बे के लोगो से नवरात्रि तथा रमजान के पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने के निर्देश दिए है।

रेप हत्या का आरोपी पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

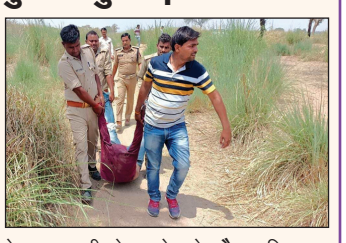

कौशाम्बी। पश्चिम सरीरा पुलिस ने रेप हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है जानकारी के मुताबिक पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के अमीना गोराजू में 25 मार्च की रात शशि सिंह की गला रेतकर की गयी हत्या का फरार मुख्य अभियुक्त मुश्ताक को पुलिस ने गनेशपुर कटरी से मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया है मुठभेड़ में पुलिस द्वारा जवाबी कार्यवाही में हत्यारोपी मुस्ताक के पैर में गोली लगी है आरोपी के विरुद्ध गिरफ्तारी की कार्यवाही करने के पश्चात पुलिस ने मुस्ताक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है

आवासीय छात्रावास में प्रवेश हेतु खिलाड़ियों का होगा चयन

कौशांबी। 11 अप्रैल से 19 अप्रैल तक विभिन्न खेलों के आवासीय छात्रावासों में प्रवेश हेतु आयोजित केंद्रीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने वाले बालक एवं बालिका का चयन ट्रायल जिला स्तर पर प्रतिदिन 3:00 बजे जिला खेल कार्यालय में किया जाएगा जिला क्रीड़ा अधिकारी मोहम्मद रुस्तम खान ने बताया कि खिलाड़ी ट्रायल के पूर्व निदेशालय द्वारा निर्धारित फार्म भर कर फार्म में अंकित समस्त प्रमाण पत्र सांगलग्न कर जिला खेल कार्यालय में जमा करने के उपरांत ही चयन ट्रायल में भाग ले सकते हैं।

आलू व्यापारी से लूट का अब तक नही हुआ खुलासा

कौशांबी। सैनी थाना क्षेत्र के दुर्वेश कुमार पुत्र फूल चंद्र आलू बेंचकर सौराई खुर्द अपने घर जा रहे थे 10 दिन पूर्व सयारा मीठे पुर रोड पर कुछ लोगों ने उन्हें रोककर मारपीट कर रुपए मोबाइल छीन लिया था लेकिन मामले का खुलासा नहीं हो सका सैनी थाना प्रभारी व जिले के पुलिस अधीक्षक को जानकारी दी अधिकारियों ने जाँच कर कार्यवाही करने का अस्वासन दिया कि जल्द ही रुपये लूटने वाले पकड़े जाएंगे।

डिप्टी सीएम के कार्यक्रम में कुर्सी के इंतजार में खड़े नेताजी

डिप्टी सीएम के चुनाव में सोच समझकर वोट देने की बात करने वालों को नहीं मिली कुर्सी

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। विधानसभा चुनाव में सिराथू विधानसभा सीट से डिप्टी सीएम चुनाव लड़ रहे थे उनके खासम खास समझे जाने वाले एक नेता जी ने मतदाताओं से कहा था कि सोच समझकर डिप्टी सीएम को वोट देना मतदान हो गया परिणाम आ गया और केशव प्रसाद मौर्य फिर डिप्टी सीएम बन गए यह बात डिप्टी सीएम तक पहुंच चुकी है गुरुवार को डिप्टी सीएम का आगमन सिराथू क्षेत्र में हुआ भारी भीड़ के बीच वह नेताजी भी डिप्टी सीएम के पास पहुंच गए लेकिन नेताजी को डिप्टी सीएम के पास बैठने को कुर्सी नहीं मिल सकी है जिससे वह बगले झांकते रहे हैं जबकि इसके पहले के कार्यक्रमों में यह नेता जी डिप्टी सीएम के खासम खास थे।

दिव्यांग पेंशन का करे आवेदन

ग्रामीण क्षेत्र में 46 हजार 80 रुपए व शहरी क्षेत्र में 56 हजार 460 रुपए वार्षिक आय से अधिक न हो

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जनपद में दिव्यांग पेंशन योजनान्तगर्त कुल 10 हजार 592 पात्र लाभाथिर्यों को लाभान्वित किया जा रहा है जिन्हें प्रतिमाह 1000 रुपए सीधे खाते में हस्तान्तरित की जा रही है। इस योजना के अन्तगर्त 18 से 60 वर्ष तक आयु के 40 प्रतिशत या उससे अधिक प्रतिशतता के दिव्यांग पात्र होते हैं एवं ग्रामीण क्षेत्र में 46 हजार 80 रुपए व शहरी क्षेत्र में 56 हजार 460 रुपए वार्षिक आय से अधिक न हो। दिव्यांग पेंशन हेतु लाभार्थी स्वयं ऑनलाइन आवेदन कर सकतें है पेंशन हेतु आवेदन करने के लिए आधार कार्ड आवश्यक है। तत्पश्चात विकास खण्ड के माध्यम से सत्यापन एवं ग्राम पंचायत से स्वीकृत होने पर दिव्यांग पेंशन 1000 रुपए प्रतिमाह की दर से प्रदान की जायेंगी।

डिप्टी सीएम बनने पर ग्राम रोजगार सेवकों ने दी केशव प्रसाद मौर्य को बधाई

अखंड भारत संदेश

सिराथू स्थिति आवास पर मिले ग्राम रोजगार सेवक

डिप्टी सीएम को भारत माता की तस्वीर सौपते रोजगार सेवक

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री व ग्राम्य विकास विभाग के मंत्री केशव प्रसाद मौर्य के सिराथू स्थित आवास पर गुरुवार को उनके प्रथम आगमन पर ग्राम रोजगार सेवक पंचायत मित्र वेलफेयर एसोसिएशन के जिला उपाध्यक्ष राकेश पटेल व जिलाध्यक्ष प्रयागराज अरूण यादव के नेतृत्व में ग्राम रोजगार सेवकों ने उप मुख्यमंत्री से भेंटकर उन्हें शुभकामनाएं दी। प्रदेश महामंत्री राजवीर सिंह ने उप मुख्यमंत्री को अंगवस्त्र व भारत माता की प्रतिमा भेंटकर सुनहरे कार्यकाल की शुभकामनाएं दी। जिला मीडिया प्रभारी हरिओम प्रकाश ने बताया कि संगठन जल्द ही उप मुख्यमंत्री से लखनऊ में मिलकर ग्राम रोजगार सेवकों की समस्यों से उन्हें अवगत कराएगा।मौके पर राजीव यादव व कौशाम्बी जनपद के जिलाध्यक्ष जितेन्द्र कुमार शर्मा सहित सैकड़ों रोजगार सेवक उपस्थित रहे।

फलेरिया उन्मूलन को चलेगा अभियान : सीएमओ

मई माह से खिलाई जाएगी फाइलेरिया की दवा सीएमओ सभागार में प्रशिक्षको को दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

फाइलेरिया की बैठक में उपस्थित चिकित्सकों को निर्देशित करते सीएमओ

कौशांबी। जिले में अगले माह से फाइलेरिया के मरीजों को मुफ़्त दवा खिलाई जाएगी। इस संबंध में गुरुवार को सीएमओ ऑफिस सभागार में प्रशिक्षण दिया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. के.सी राय ने कहा कि यह अभियान राष्ट्रीय संक्रामक जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत शुरू किया जा रहा है इस अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग की टीम घर-घर जाकर परिवार के हर सदस्य को फाइलेरिया की दवा खिलाएगी। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. राय ने अभियान गुणवत्ता पर ध्यान देने पर जोर दिया।

डॉ. दया शंकर यादव नोडल अधिकारी वी.बी.डी ने कहा कि ब्लाक पर सभी अधीक्षक, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी, बीसीपीएम, तथा प्रत्येक ब्लाक से नामित पर्यवेक्षक जो ब्लाक पर बेहतर ढंग से आशाओं को प्रशिक्षित करें तथा ससमय कार्यक्रम के लिए मैक्रोप्लन तैयार करके जमा करे। अनुपमा मिश्रा जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के लिए जनपद के सभी ब्लाक के अधीक्षक, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी, बीसीपीएम को आज प्रशिक्षित किया गया हैं` समुदाय में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम की जागरूकता के लिए विशेष रूप से प्रयास करे तथा आशाओं को प्रशिक्षित करते समय हाथीपाव जैसी गंभीर बीमारी के बारे में जरुर बताएं साथ ही उन्हें अपने सामने ही फाइलेरिया दवा खिलाने का प्रयास करें कार्यक्रम में बालेन्द्र सिंह जिला समन्वयक (पी.सी.आई), डॉ राहुल जोनल कोऑर्डिनेटर डब्लू.एच.ओ, शिवकान्त नोडल ऑफिसर एन.डी.टी पाथ संस्था आदि के प्रतिनिधि मौजूद रहें।

10 अप्रैल से स्वास्थ्य केंद्रों में मुख्यमंत्री आरोग्य मेला शुरू

कल्यानपुर कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश के समस्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में 10 अप्रैल 2022 से मुख्यमंत्री आरोग्य मेला की शुरूआत होगी । कोविड की तीसरी लहर को देखते हुए सरकार ने पिछले लगभग तीन महीने से मुख्यमंत्री आरोग्य मेला को प्रदेश के समस्त स्वास्थ्य केंद्रों को बंद कर दिया गया । उत्तर प्रदेश में भाजपा की दोबारा सरकार बनने पर मुख्यमंत्री आरोग्य मेला की शुरूआत फिर से किया गया।

निरोधात्मक कार्यवाही में 11 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मझनपुर से 01, थाना पश्चिम शरीरा से 01, थाना महेवाघाट से 01, थाना पिपरी से 03. थाना कोखराज से 02, थाना मोङ्गपुर पइन्सा से 02, थाना कड़ाधाम से 01 कुल 11 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है।

तमंचा के साथ दो गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कौशाम्बी पुलिस बल द्वारा दो अभियुक्त सिपाही लाल सिंह उर्फ राजेश कुमार पुत्र स्व गिल्लू सिंह पटले नि० भगवतपुर थाना पश्चिम शरीरा को एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस व अनवर अली पुत्र स्व० सिद्दीक अहमद निवासी भगवतपुर थाना पश्चिम शरीरा को रात्रि गस्त के दौरान कबीर आश्रम के पास फतेहपुर करारी रोड से एक अदद तमचा 315 बोर व तीन अदद जिन्दा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

आयुष्मान भारत योजना : गोल्डेन कार्ड बनाये जाने में तेजी से प्रगति लाने के डीएम ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने की जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति (शासी निकाय) की बैठक की गयी बैठक में जिलाधिकारी ने 12 वर्ष से 15 वर्ष आयु तक के बच्चों के कोविड टीकाकरण की प्रगति की समीक्षा के दौरान प्रगति धीमी पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को माइक्रोप्लॉन बनाकर जिला बेसिक शिक्षाधिकारी एवं सभी खण्ड शिक्षाधिकारियों से समन्वय करके टीकाकरण में प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होंने नियमित टीकाकरण की समीक्षा के दौरान कहा कि घर-घर सर्वे कराकर टीकाकरण सुनिश्चित किया जाय, टीकाकरण से कोई भी बच्चा छूटने न पाये। उन्होंने कहा कि ठीक प्रकार से कार्य न करने वाली ए0एन0एम0 के विरूद्ध कार्यवाही की जाय। जिलाधिकारी ने सभी ए0सी0एम0ओ0 एवं डिप्टी सी0एम0ओ0 सहित अन्य चिकित्साधिकारियों को क्षेत्र भ्रमण के दौरान विस्तृत रूप से निरीक्षण करने के निर्देश दिये। उन्होंने जननी सुरक्षा योजना की समीक्षा के दौरान लाभार्थियों एवं आशाओं का भुगतान समयान्तर्गत सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को रोगी कल्याण समिति की बैठक कराने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रसव केन्द्रों की समीक्षा के दौरान कहा कि और प्रसव केन्द्र बढायें जाय तथा नये बने प्रसव केन्द्रों को शीघ्र क्रियाशील किया जाय। उन्होंने आयुष्मान भारत योजना के तहत गोल्डेन कार्ड बनाये जाने के कार्य में और तेजी से प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि संचारी रोग नियन्त्रण अभियान के तहत सभी गतिविधियॉ-फागिंग, साफ-सफाई एवं एण्टीलार्वा का छिड़काव आदि नियमित रूप से सुनिश्चित किया जाय। इसके साथ ही उन्होंने आशाओं को प्रशिक्षण, संस्थागत प्रसव, परिवार कल्याण कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना, आर0बी0एस0के0 आदि की भी विस्तृत समीक्षा की। बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 के0सी0 राय एवं सी0एम0एस0 दीपक सेठ सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

प्रदेश सरकार के कुशल प्रबन्धन से संचारी रोग हो रहा है नियंत्रित : डीएम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला अधिकारी सुजीत कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व एवं प्रबन्धन का ही परिणाम है कि प्रदेश के पूर्वांचल के जनपदों में गत चार-पांच दशकों से बच्चों में फैली जानलेवा जापानी बुखार व दिमागी बुखार जैसे संचारी रोग को नियंत्रित कर लिया गया है। प्रदेश के पूर्वी जनपदों में संचारी रोग दशकों से आमजन के स्वास्थ्य को प्रभावित करता रहा है। यह रोग विशेषकर 15 वर्ष से नीचे की आयु के बच्चों को प्रभावित करता रहा है। इस रोग से सैकड़ों बच्चों की जान चली जाती थी। किन्तु प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वर्ष 2017 में सरकार गठन के उपरान्त लगातार व्यापक जनसहभागिता के माध्यम से बचाव के लिए साफ-सफाई, टीकाकरण, जांच, दवाओं का वितरण, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था कर दिमागी बुखार रोग पर प्रभावी नियंत्रण किया है। प्रदेश सरकार द्वारा संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान लगातार चलाकर समाज के अन्तिम व्यक्ति तक कार्यक्रम का सन्देश पहुंचाकर रोग से बचाव के उपायों पर बल देते हुए नियंत्रित किया है। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि प्रदेश में संचारी रोगों पर नियंत्रण हेतु अन्तर्विभागीय समन्वय एवं जनसहभागिता से चलाया जा रहा यह अभियान आज एक सशक्त मॉडल बन चुका है, जिसकी देश और विदेशों में चर्चा हो रही है। अन्तर्विभागीय समन्वय में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के साथ बेसिक शिक्षा, महिला एवं बाल कल्याण, पुष्टाहार, नगर विकास, कृषि, पशुपालन, उद्यान, जल निगम, दिव्यांगजन सशक्तीकरण, चिकित्सा शिक्षा आदि है। संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान में 12 विभागों द्वारा समन्वय बनाकर कार्य किया जाता है, जिसमें महिला एवं बाल विकास विभाग कुपोषित व अतिकुपोषित बच्चों को चिन्हित कर उन्हें पोषाहार देते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण ग्राम्य विकास व पंचायतीराज विभाग ग्राम स्तर पर नालियों, जल निकासी, गांवों की नियमित सफाई व मच्छर मारने की दवाओं का छिड़काव/फागिंग कराते हैं। नगर विकास विभाग नालियों मुहल्लों की सफाई, खुली नालियों को ढकने, कूड़ा उठान, दवाओं का छिड़काव, फागिंग आदि करते हैं। उथले हैंडपम्पों को चिन्हित करते हैं। कृषि विभाग किसानों को वैकल्पिक सिंचाई की जानकारी उद्यान विभाग मच्छर रोधी, पौधों को उगाने, पशुपालन विभाग सुअरों के बाड़ों को आबादी से दूर रखने, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग एईएस व जेई रोग के उपरान्त यदि कोई बच्चा दिव्यांग हुआ है तो उसे चिन्हित कर इलाज व उपकरण दिलाये जाने का कार्य किया जाता है चिकित्सा विभाग एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग जांच, दवाओं का वितरण, इलाज, आदि समस्त स्वास्थ्य संबंधी कार्यों का दायित्व निभाते हैं। डीएम ने बताया कि सरकार ने प्रदेश में लगातार चलाये जा रहे विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान के माध्यम से समाज और सरकार के बीच संवाद, सहयोग और विश्वास को मजबूत कर संचारी रोगों के विरूद्ध एक निर्णायक लड़ाई छेड़ रखी है। सरकार के अनवरत प्रयास और समाज के स्वैच्छिक सहभागिता का परिणाम है कि इस रोग के विरूद्ध अभूतपूर्व सफलता मिली है। वर्ष 2017 में एईएस के 4724 रोगी चिन्हित हुए थे और 655 मौतें हुई थी वही वर्ष 2018 से दिसम्बर 2021 तक मात्र 1568 रोगी चिन्हित हुए तथा मात्र 44 की मृत्यु हुई। इसी प्रकार जेई से वर्ष 2017 में जहां 693 रोगी चिन्हित हुए थे तथा 93 की मृत्यु हुई थी। वहीं लगातार अभियान चलाकर जांच, टीकाकरण इलाज का परिणाम है कि दिसम्बर 2021 तक मात्र 134 रोगी चिन्हित हुए और मात्र 3 की मृत्यु हुई। प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने चिकित्सालयों में संचारी रोग के रोकथाम के लिए विशेष व्यवस्थायें की है। दिमागी बुखार के उपचार हेतु पूर्ण रूप से सुसज्जित 16 पीआईसीयू 15 मिनी पीआईसीयू, 117 ईटीसी, तथा 19 सेन्टीनल लैब संचालित है। प्रदेश सरकार संचारी रोगों के नियंत्रण हेतु प्रतिवर्ष 3 चरणों में दस्तक एवं संचारी रोग नियंत्रण अभियान चलाकर इस रोग पर पूर्ण नियंत्रण पाया है। प्रदेश के निष्क्रिय पड़े चिकित्सा केन्द्रों को उपकरण, दवायें तथा मानव संसाधन उपलब्ध कराते हुए इस अभियान को सक्रिय किया गया तथा आम जनता को उनके घर के निकट ही जांच, उपचार आदि समस्त स्वास्थ्य सुविधायें, उपलब्ध कराकर संचारी रोग को नियंत्रित किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 02 अप्रैल 2022 को जनपद सिद्धार्थनगर से विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारम्भ करते हुए इस रोग से बचाव, रोकथाम व उपचार करते हुए पूर्ण नियंत्रण पर विशेष बल दिया है। प्रदेश के जनपदों में आशा कार्यकत्री 15 अप्रैल से 30 अप्रैल तक हर घर में जाकर लोगों को दिमागी बुखार, डेगूं, चिकनगुनिया, जापानी इन्फ्लाइटिस आदि रोगों से बचाव, लक्षणों एवं उपचार हेतु चिकित्सालयों पर मौजूद इलाज के सभी सुविधाओं के विषय में जानकारी देगी और आम जनता को जागरूक करेगी। प्रदेश सरकार के समन्वय के अन्तर्विभागों द्वारा भी अपनी जिम्मेदारी निभाई जा रही है। सरकार द्वारा चलाये गये विशेष अभियानो का ही परिणाम है कि संचारी रोग नियंत्रित हो रहा है।

पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त तीन लोगों को बसपा ने किया पार्टी से निष्कासित

कौशांबी। बहुजन समाज पार्टी की नीतियों से हटकर विरोधियों के उसकावे पर बहुजन समाज पार्टी की छवि को खराब करने का प्रयास करने वाले तीन पार्टी नेताओं को पार्टी से निष्कासित करने की घोषणा पार्टी जिला अध्यक्ष संतोष कुमार गौतम ने की है। बहुजन समाज पार्टी के जिला अध्यक्ष संतोष कुमार गौतम ने बताया कि 1 अप्रैल को बहुजन समाज पार्टी के ओसा स्थित पार्टी कार्यालय में मंडलीय समीक्षा बैठक चल रही थी बैठक में पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष शैलेंद्र गौतम सुनील पटेल और प्रदीप गौतम ने विरोधी पार्टियों के नेताओं के उसकावे पर उपद्रव किया था और उक्त तीनों लोगों द्वारा बैठक में व्यवधान डालने का भरसक प्रयास किया गया था जिससे बहुजन समाज पार्टी की छवि खराब हो रही है जिला अध्यक्ष का कहना है कि बहुजन समाज पार्टी की बैठक में उपद्रव कर कार्यक्रम में व्यवधान डालने वाले लोगों को बार-बार मना किया गया लेकिन विरोधियों के उसकावे पर उपद्रव करने वाले लोग नहीं माने जिस पर उक्त तीनों लोगों को पार्टी से निष्कासित किया जाता है उन्होंने बताया कि मुख्य जोन प्रभारी गणों के निर्देश पर 3 अप्रैल को उक्त तीनों लोगों को पार्टी से निष्कासित करने का निर्णय लिया गया है।

योगी सरकार में हरियाली का खात्मा होना हो गया शुरू

अखंड भारत संदेश

कोखराज क्षेत्र में लकड़ी माफियाओं ने जंगल उजाड़ने का लिया ठेका

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र में वन विभाग और पुलिस की सांठगांठ से बेखौफ तरीके से फलदार हरे पेड़ों की कटान हो रही है वाहनों में भरकर हरी लकड़ियों को दूसरे स्थान पर प्रतिदिन पहुंचाया जा रहा है लेकिन फिर भी हरे पेड़ के कटान पर रोक लगती नहीं दिख रही कोखराज थाना क्षेत्र का मटरु नाम का लकड़ी माफिया लगातार हरे फलदार लगभग 50 पेड़ो को काट कर हरियाली को खत्म करने में लगा हुआ हैं बीते दो दशक से यह लकड़ी माफिया हरे पेड़ों के कटान पर लगा है पुलिस और वन विभाग लुकाछिपी का खेल खेल रहे है जबकि लकड़ी काटने वाले माफिया इस समय भी थाना कोखराज के पीछे हरे जंगल को बेखौफ उजाड़ रहा हैं दर्जनों मजदूरों के साथ इलेक्ट्रॉनिक आरा मशीन लेकर प्रतिदिन सुबह लकड़ी माफिया हरे फलदार पेड़ काटने पहुंच जाते हैं क्षेत्र में चिरुल, महुआ, आम, नीम शीशम आदि प्रतिबंधित हरे फलदार वृक्ष काटकर समाप्त करने पर माफिया अमादा हैं। क्षेत्रीय थाना कोखराज के पासर द्वारा थाने का हवाला देकर खुलेआम थाना कोखराज के पीछे दाहिने तरफ जंगल में अभी भी हरे पेडों का कटान करा रहा हैं। माफिया राजस्व को चूना लगा रहा लकडी काटने वालों का मददगार मध्यस्थता की भूमिका निभा रहा है क्या जिले के आला अधिकारी इन हरे पेड़ काटने वालो माफियाओं पर लगाम लगायेंगे आखिर वन रेजर इन लोगों पर क्या कार्रवाई करेंगे इस बात का जवाब आम जनता चाहती है।

संपादकीय

कई फाइल्स और चेहरे होंगे बेनकाब

जब सच से सामना होता है, तब सबकी बोलती बंद हो जाती है। कुछ इसी प्रकार का वातावरण फिल्म द कश्मीर फाइल्स को लेकर भी हो रहा है। इस फिल्म का एक तरफ विरोध भी हो रहा है, लेकिन जिसने इस दर्द को झेला है, उसने जब इस फिल्म को देखा तो उसकी आंखों के समक्ष गुजरे हुए दर्दनाक पल आते चले गए। जिन लोगों ने यह झेला है उसके आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे। धर्मनिरपेक्षता का ढोंग करने वाले कथित बुद्धिजीवी वर्ग का जिस प्रकार से नैरेटिव ध्वस्त होता हुआ दिखाई दे रहा है, उससे उनके पेट में मरोड़ उठ रही है। उनका कहना है कि फिल्म का एक ही पक्ष दिखाया गया है, लेकिन कश्मीर घाटी का बड़ा सच यही है कि केवल हिन्दुओं को ही अपने घर और व्यवसाय से बेदखल किया गया। इसी प्रकार कुछ लोग यह भी कह रहे हैं कि यह सब पाकिस्तान के संरक्षण में कार्य करने वाले आतंकवादियों के संकेत पर ही हो रहा था। जहां तक बॉलीवुड की बात है तो यह सच है कि कई फिल्मों में हिन्दू देवी-देवताओं को पत्थर की मूर्ति कहकर संबोधित किया गया है, जबकि ऐसी टिप्पणियां अन्य धर्मों के आराधक पर किया जाए तो भूचाल आ जाता है। वास्तविकता यह है कि फिल्मों के माध्यम से भारतीय नागरिकों का ब्रेन वॉश किया गया और हमारा समाज भी उसे इसलिए स्वीकार करता गया क्योंकि वह सत्य से बहुत दूर जा चुका था। अब जब सच सामने आ रहा है तो सबकी आंखों पर जो परदा चढ़ा था, वह हटने लगा है। दर्द केवल उन्हीं को हो रहा है, जिन्होंने इस आवरण को चढ़ाने का कार्य किया था। विवेक अग्निहोत्री की फिल्म द कश्मीर फाइल्स सही मायनों में एक फिल्म ही नहीं, बल्कि एक ऐसा सच है जिसे हिन्दुस्तान ने झेला है। कश्मीरी हिन्दुओं के दर्द पर बनी फिल्म द कश्मीर फाइल्स पर आज देशभर में चर्चा हो रही है। फिल्म के निर्देशक विवेक अग्निहोत्री से एक पत्रकार ने पूछा कि वह अगली फिल्म किस मुद्दे पर बनाने की सोच रहे हैं तो उनका जवाब था कि उनकी अगली फिल्म दिल्ली दंगों पर होगी। यानी अब नैरेटिव रिवर्सल का दौर शुरू हो चुका है। अब अति संवेदनशील कहे जाते रहे मुद्दों को भी छूने का साहस बॉलीवुड में आने लगा है। ऐसी साहसिक फिल्मों पर तर्क-वितर्क होने लगे हैं। राजनीति से लेकर सामाजिक रूपरेखा पर सवाल उठने लगे हैं और यह जरूरी भी है और समय की मांग भी। अब ये सवाल जरूर पूछे जाने चाहिए कि हमारी सरकार के सामने कश्मीर में (या कहीं पर भी) ऐसी क्या मजबूरी होती है जिसकी वजह से आरा मशीन में लकड़ी की तरह एक महिला को चीर देने का अधिकार दे दिया जाता है? ऐसा कौन सा इंकलाब होता है जिसमें ऐलान करके बहू-बेटियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म होता है। उनकी नृशंस हत्या होती है या फिर ऐसी कौन-सी मजबूरी होती है, जिसकी वजह से आतंक से लाल होती धरती को देखकर भी दिल्ली दरबार को आंखें मूंद लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है? देश की हर पार्टी और हर काल के नेतृत्व को बताना चाहिए कि दुनिया में ऐसा कौन-सा अभागा देश है या अभागी जनता है जो एक कातिल को दिल्ली दरबार में सम्मान पाते देखती है। जेकेएलएफ के नेता यासीन मलिक से हाथ मिलाते पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की तस्वीर देखकर तब भी देश की जनता दांत पीसकर रह गई थी। इस पाक परस्त नेता ने पूरी ठसक के साथ कैमरे के सामने स्वीकार किया था कि उसने भारतीय वायुसेना के चार निहत्थे अधिकारियों को भरे चौराहे पर गोलियों से भून दिया।

तुष्टीकरण की राजनीति और सद्भाव का संदेश

निर्मल रानी

इससे पूर्व 2017 में ही राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के कार्यकाल में क्रिसमस पर होने वाली कैरोल सिंगिंग का आयोजन भी रद्द कर दिया गया था। इसी प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री निवास में न तो कभी इफ़्तार पार्टी की मेजबानी की और न ही किसी इफ़्तार पार्टी में शामिल हुए। प्रधानमंत्री मोदी को देखकर उनकी पार्टी के अनेक नेता,मंत्री मुख्यमंत्रियों ने इफ़्तार पार्टियों से दूरी बनाना शुरू कर दिया

भारतीय जनता पार्टी के लोग हमेशा ही पिछली गैर भाजपाई सरकारों पर अल्पसंख्यकों खासकर मुस्लिमों का तुष्टीकरण करने का आरोप लगाते रहे हैं। और इसी दुष्प्रचार की बदौलत देश के बहुसंख्य हिन्दू समाज को अपने पक्ष में गोलबंद करने का काम भाजपा दशकों से करती रही है। मिसाल के तौर यदि यू पी ए सरकार के दौर में हज पर जाने वाले यात्रियों को सब्सिडी दी जाती थी तो उसे यह तुष्टिकरण बताते थे। कोई राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री यदि ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की अजमेर शरीफ स्थित दरगाह अथवा किसी अन्य पीर फकीर की दरगाह पर सद्भावना के तहत अपनी ओर से मजार पर चढ़ाने के लिये चादर भेजता था तो वह भी इनकी 'परिभाषा ' के अनुसार तुष्टीकरण था। मदरसों को प्रोत्साहित करने हेतु बनने वाली योजनाएं 'तुष्टीकरण' यहाँ तक कि रमजान के दिनों में यदि कहीं राष्ट्रपति,प्रधानमंत्री या कोई मंत्री रोजा इफ़्तार का आयोजन करता था तो उसे भी 'तुष्टीकरण ' ही बताया जाता था। यह और बात है कि इसी 'तथाकथित तुष्टीकरण काल ' के दौरान ही जस्टिस राजेंद्र सच्चर की अल्पसंख्यकों की स्थिति के बारे में आई रिपोर्ट भारतीय मुसलमानों की आर्थिक,सामाजिक व शैक्षिक स्थिति का जो खुलासा करती है वह मुस्लिम 'तुष्टीकरण ' जैसे आरोपों से बिलकुल विपरीत थी। बहरहाल 'तुष्टीकरण' के आरोपों की इसी नाव पर सवार होकर भाजपा ने 2014 में केंद्र की सत्ता संभाली। बहुसंख्यकवाद की राजनीति कर देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं को यह जताने का प्रयास किया कि मोदी सरकार हिन्दू हितों का सम्मान व ध्यान रखने वाली एक ऐसी सरकार है जिसमें अब 'मुस्लिम तुष्टीकरण ' की कोई गुंजाइश नहीं है। केंद्र की मोदी सरकार का ऐसा ही एक निर्णय था जनवरी 2018 में मुसलमानों को हज यात्रा के लिए दी जाने वाली सब्सिडी खत्म करने का फैसला लिया जाना। हालांकि सरकार द्वारा हज के अतिरिक्त दूसरी धार्मिक यात्राओं जैसे कैलाश मानसरोवर व ननकाना साहिब गुरुद्वारा की यात्रा के लिए भी सरकार की ओर से सब्सिडी दी जाती रही है। जबकि मुसलमानों की ओर से किसी भी नेता,दल अथवा संगठन ने हज यात्रा के लिये सब्सिडी दिये जाने की मांग कभी नहीं की। बल्कि ठीक इसके विपरीत मुसलमानों का एक बड़ा तबका,

अनेक मुस्लिम धार्मिक संस्थाएं तथा मुस्लिम हितों की बात करने वाले असदुद्दीन ओवैसी जैसे सांसद भी हज सब्सिडी को खत्म करने की मांग करते रहे। इन्हीं हालात में साल 2012 में ही सुप्रीम कोर्ट ने भी केंद्र को वर्ष 2022 तक चरणबद्ध तरीके से हज सब्सिडी खत्म करने का निर्देश भी दिया था। परन्तु मोदी सरकार ने 2018 में ही हज सब्सिडी समाप्त कर इसे मुस्लिम अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण समाप्त करने के अपने एजेंडे के रूप में दशार्या। उस समय सरकार की ओर से यह भी बताया गया कि हज सब्सिडी समाप्त करने के सरकार के फैसले से 700 करोड़ रुपये बचेंगे और ये पैसे अल्पसंख्यकों की शिक्षा विशेषकर मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा पर खर्च किये जायेंगे।

इसी तरह देश में रमजान महीने में नेताओं द्वारा इफ़्तार पार्टी दिये जाने की काफी पुरानी परंपरा है। देश में हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई भाईचारे तहत यह सिलसिला प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने बंटवारे के कुछ समय बाद ही शुरू किया था। उस समय कांग्रेस के तत्कालीन पार्टी कार्यालय 7 जंतर मंतर पर पंडित नेहरू इफ़्तार पार्टी दिया करते थे। हालांकि 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद इफ़्तार पार्टी का यह सिलसिला कुछ वर्षों तक थम गया था । परन्तु 1971 के भारत-पाकिस्तान-बांग्लादेश युद्ध में पाकिस्तान की ऐतिहासिक पराजय के पश्चात तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1972 में दिल्ली में एक बहुत बड़ा ईद मिलन समारोह आयोजित किया था। इसमें जयप्रकाश नारायण सहित पूरे देश के पक्ष विपक्ष के अनेक बड़े नेता व राजदूत शरीक हुए थे। इंदिरा गाँधी के शासनकाल में इफ़्तार पार्टी ही नहीं बल्कि होली-दीवाली मिलन, गुरु पर्व मिलन, क्रिसमस मिलन भी आयोजित होता रहा। देश में साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने गरज से पूरे राष्ट्रपति भवन व प्रधानमंत्री निवास से लेकर देश के अनेक केंद्रीय मंत्री,मुख्यमंत्री के आवास व अनेक पार्टी मुख्यालयों पर इफ़्तार पार्टियां हुआ करती थीं। परन्तु 25 जुलाई, 2017 को जब रामनाथ कोविंद ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली उसी समय उन्होंने यह निर्णय लिया कि -'राष्ट्रपति भवन एक सार्वजनिक इमारत है, यहां सरकार या कर दाताओं के पैसों से किसी भी धार्मिक त्योहार का आयोजन नहीं होगा। और राष्ट्रपति के इस फैसले के साथ ही राष्ट्रपति भवन में स्वतंत्रता के बाद से चली आ रही इफ़्तार पार्टी की परंपरा समाप्त हो गयी।

इससे पूर्व 2017 में ही राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के कार्यकाल में क्रिसमस पर होने वाली कैरोल सिंगिंग का आयोजन भी रद्द कर दिया गया था। इसी प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री निवास में न तो कभी इफ़्तार पार्टी की मेजबानी की और न ही किसी इफ़्तार पार्टी में शामिल हुए। प्रधानमंत्री मोदी को देखकर उनकी पार्टी के अनेक नेता,मंत्री मुख्यमंत्रियों ने इफ़्तार पार्टियों से दूरी बनाना शुरू कर दिया। इन सब बातों का एक ही सन्देश था कि भाजपा मुस्लिम तुष्टीकरण का कोई काम नहीं करती। परन्तु पिछली सरकारों पर मुस्लिम तुष्टीकरण का आरोप लगाने वाली भाजपा सरकार तथा भाजपा के मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा मुसलमानों के संदर्भ में किये जाने वाले कई फैसले आश्चर्यचकित करने वाले हैं। इसमें स्कूल ड्रॉप-आउट बच्चों को ब्रिज कोर्स करवा कर मेनस्ट्रीम एजुकेशन में लाया जाना,मदरसों को मुख्यधारा में लाने के लिए वहां हिंदी, अंग्रेजी,गणित और विज्ञान की शिक्षा दिया जाना,अल्पसंख्यक वर्ग के पांच करोड़ छात्रों को अगले पांच साल में छात्रवृत्तियां दिये जाने की घोषणा करना तथा अल्पसंख्यकों के शैक्षिक संस्थानों में आधारभूत संरचना को मजबूत किये जाने जैसी घोषणायें महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त सामुदायिक भवन इत्यादि खोलने के लिए शत प्रतिशत फंडिंग की व्यवस्था किए जाने की भी सरकार की योजना है। सरकार द्वारा हज के कोटे में भी वृद्धि गयी है। इसी तरह रोजा इफ़्तार को मुस्लिम तुष्टीकरण बताने वाले लोगों विशेषकर आर एस एस द्वारा इन दिनों चल रहे रमजान के दिनों में देश के इतिहास में पहली बार इफ़्तार पा की कई छोटी बड़ी दावतें देने की घोषणा की गयी है। जानकारों का मानना है कि मुसलामानों तक अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए संघ ने यह योजना बनाई है। खबरों के अनुसार एक महीने चलने वाले रमजान के प्रारंभिक बीस दिनों में आंध्र प्रदेश व तेलंगाना राज्यों में रोजा इफ़्तार की कई दावतें आयोजित की जायेंगी। इतना ही नहीं बल्कि रमजान माह के आखिरी 10 दिनों में ईद मिलन समारोह का सिलसिला भी चलेगा। संघ के अधीन संचालित होने वाले संगठन मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संरक्षक डॉ इंद्रेश कुमार का मत है कि -'हम सभी एक साथ तभी तरक़्क़ी कर सकते हैं यदि हम नफरत को दफ़्न कर दें। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि हम सांप्रदायिक सद्भाव को और बढ़ाएं।' डॉ इंद्रेश कुमार के अनुसार -'

इस रमजान से हम एक नई शुरूआत करने जा रहे हैं'। परन्तु सरकार की मुस्लिम हितकारी योजनाओं और आर एस एस के इफ़्तार पार्टियों के आयोजन से यह सवाल जरूर खड़ा होता है कि जब पिछली सरकारों में यही अथवा इस तरह के निर्णय होते थे तो यही आज के 'सद्भाव के तथाकथित ध्वजवाहक' उन फैसलों को मुस्लिम तुष्टीकरण बताते थे ? आखिर ऐसा कैसे हो सकता है कि यदि यही काम वह करें तो तुष्टीकरण और यह करें तो सद्भाव?

रेलवे के सुरक्षा प्रबंधों पर लगातार सवाल उठ रहे

योगेश कुमार गोयल

पिछले करीब तीन महीने से एक के बाद एक होती रेल दुर्घटनाओं से रेलवे के सुरक्षा प्रबंधों पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। हालांकि 13 जनवरी को पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले के दोमोहानी इलाके में हुई भीषण रेल दुर्घटना के बाद इतनी बड़ी दुर्घटना तो नहीं हुई है लेकिन लगातार हो रही छोटी रेल दुर्घटनाओं की अनदेखी करना भी उचित नहीं होगा क्योंकि ये दुर्घटनाएं भी यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि भारतीय रेल प्रणाली में सब कुछ दुरूस्त नहीं है। ऐसे हर छोटे-बड़े हादसों में रेल तंत्र की लापरवाही स्पष्ट उजागर होती रही है। अगर हाल की कुछ दुर्घटनाओं पर नजर डालें तो 3 अप्रैल को महाराष्ट्र में नासिक के निकट जयनगर एक्सप्रेस के 11 डिब्बे पटरी से उतरने के कारण एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। उसी दिन जोगबनी से कटिहार जा रही डीएमयू का एक्सल टूट जाने से बड़ी दुर्घटना होते-होते बची। 2 अप्रैल को महाराष्ट्र के दौलताबाद स्टेशन के निकट मालगाड़ी के 8 डिब्बे पटरी से उतर गए। 31 मार्च को एटा से आगरा जा रही रेलगाड़ी बड़ी दुर्घटना का शिकार होते-होते टली, दरअसल आगे पटरी टूटी थी और एक श्रमिक महिला ने रेल पटरी के बीचों-बीच अपनी लाल साड़ी दिखाकर चालक को सचेत किया। 28 मार्च को छत्तीसगढ़ के जामगांव रेलवे स्टेशन के निकट एक ही पटरी पर दो मालगाड़ियां आ जाने से उनकी टक्कर हो गई। 5 मार्च को सहारनपुर से दिल्ली आ रही पैसेंजर ट्रेन में अचानक आग लगने से यात्रियों में हड़कंप मच गया था। उससे पहले बिहार के मधुबनी रेलवे स्टेशन पर खड़ी स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस की कुछ बोगियों में 19 फरवरी की सुबह एकाएक आग लग गई थी। लापरवाही के चलते लगातार हो रहे ऐसे रेल हादसों की बहुत लंबी फेहरिस्त है लेकिन चिंता की बात यह है कि लगातार होते ऐसे हादसों से कोई सबक नहीं लिए जाते। जब भी बड़ा रेल हादसा होता है तो रेलवे द्वारा भविष्य में ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति रोकने के लिए कड़े कदम उठाने का रटा-रटाया जवाब सुनने को मिलता है लेकिन थोड़े ही समय बाद जब फिर कोई रेल हादसा सामने आता है तो रेल तंत्र के ऐसे दावों की कलई खुल जाती है। ऐसे रेल हादसों के बाद प्रायः जांच के नाम पर कुछ रेल कर्मचारियों व अधिकारियों पर गाज गिरती है किन्तु समूचा रेल तंत्र उसी पुराने ढर्रे पर रेंगता रहता है। हर रेल हादसे के बाद कारणों को लेकर तरह-तरह की बातें कही-सुनी जाती हैं। कभी रेलकर्मियों की लापरवाही की बात सामने आती है तो कभी कहा जाता है कि बाहरी ताकतों ने इसे अंजाम दिया। हर दुर्घटना के बाद जांच के आदेश दिए जाते हैं और जांच के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित की जाती है किन्तु समिति की रिपोर्ट फाइलों में दबकर रह जाती है। यही कारण है कि किसी भी हादसे में कभी पता नहीं चलता कि हादसे में वास्तविक दोषी कौन था?

रेल दुर्घटनाओं के मामले में भारतीय रेलों की क्या दशा है, इसका अनुमान रेल मंत्रालय के ही इन आंकड़ों से लगाया जा सकता है कि 2019 से पहले के साढ़े चार वर्षों में 350 से भी अधिक छोटे-बड़े हादसे हुए थे। रिपोर्ट के अनुसार 2014-15 में जहां 135 रेल हादसे हुए, वहीं 2015-16 में 107 और 2016-17 में 104 रेल हादसे सामने आए। तत्कालीन रेलमंत्री सुरेश प्रभु ने संसद में बताया था कि 2012 से 2017 के बीच पांच वर्षों में देश में 586 रेल हादसे हुए, जिनमें 308 बार ट्रेनें पटरी से उतरी और उन हादसों में 1011 लोग मारे गए, जिनमें पटरी से उतरने वाली ट्रेनों ने ही 347 जानें ली। रेलवे सेफ्टी और यात्री सुरक्षा से जुड़े एक सवाल के जवाब में संसद में बताया गया था कि रेल हादसों की बड़ी वजह रेलवे स्टाफ की नाकामी, सड़क पर चलने वाली गाड़ियां, मशीनों की खराबी और तोड़-फोड़ रही। 2014-15 के 135 रेल हादसों में 60, 2015-16 में हुए 107 हादसों में 55 और 2016-17 में 30 नवम्बर 2016 तक के 85 हादसों में से 56 दुर्घटनाएं रेलवे स्टाफ की नाकामी या लापरवाही के चलते हुई। तत्कालीन रेलमंत्री सुरेश प्रभु द्वारा 2016-17 के रेल बजट में रेल दुर्घटनाएं रोकने के लिए मिशन जीरो एक्सीडेंट नामक एक विशेष अभियान शुरू करने की घोषणा की गई थी, जिसके बाद रेल दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए त्वरित पटरी नवीनीकरण, अल्ट्रासोनिक रेल पहचान प्रणाली तथा प्राथमिकता के आधार पर मानवरहित रेलवे क्रॉसिंग खत्म किए जाने जैसे विभिन्न सुरक्षा उपायों पर कार्य शुरू किया गया था किन्तु ये कार्य बहुत धीमी गति से जारी हैं।

विचार

अपरिपक्व और कमजोर प्रधानमंत्री साबित हुए इमरान

संजीव ठाकुर

इमरान अब तक के पाकिस्तान के सबसे अपरिपक्व और कमजोर प्रधानमंत्री साबित हुए हैं। कुर्सी का लालच और सत्ता के मोह ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के मानसिक संतुलन को बिगाड़ दिया है । वहां पर नेशनल असेंबली में डिप्टी स्पीकर ने इमरान सरकार के साथ मिलकर विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर घनघोर अलोकतांत्रिक निर्णय लिया है। इसी तरह इमरान खान ने संसद को भंग कर चुनाव कराने की राष्ट्रपति को सिफारिश ने भी पाकिस्तान में कमजोर, निर्बल और बचे कुचे लोकतंत्र को धाराशाही कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ऑफ पाकिस्तान ने इस निर्णय के खिलाफ खुद संज्ञान लेकर फैसला दिया है की डिप्टी स्पीकर को अविश्वास प्रस्ताव को खारिज करने का संवैधानिक अधिकार ही नहीं है, इस तरह इस पर निर्णय देने के लिए अपने निर्णय को 1 दिन के लिए टाल दिया है। स्वतंत्रता के बाद से ही चुने हुए 18 प्रधानमंत्रियों में आखरी प्रधानमंत्री इमरान खान अब तक के सर्वाधिक कमजोर और असफल प्रधानमंत्री साबित हुए हैं। उनके कार्यकाल में बेरोजगारी चरम सीमा पर है, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में आग लगी हुई है आम जनता की पहुंच से शक्कर,चीनी, आटा, चावल बाहर हो चुका है। महंगाई सर्वाधिक 70% ऊंचाई पर पहुंच गई है। चीन और अरब देशों से अरबों रुपए उधारी लेकर पाकिस्तान अपनी सरकार चला रहे थे,वे अब चीन के आर्थिक रूप से गुलाम बन चुके है।

एक घटना ने यह साबित कर दिया है कि यह घटना पाकिस्तान के संसदीय इतिहास में अभूतपूर्व है, और संभवतः भविष्य में भी ऐसा प्रकरण देखने में नहीं आएगा। विपक्ष के शहबाज नवाज, बिलावल भुट्टो, मरियम नवाज, तथा विपक्ष के अन्य कद्दावर नेता फजलुर रहमान पाकिस्तान की आवाम और मीडिया के साथ मिलकर इमरान सरकार को धाराशाही करने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध हो गए हैं। इमरान खान संसद को भंग करने के बाद 3 माह के भीतर चुनाव करना करवाने की रणनीति के तहत आने वाले चुनाव की तैयारी में जुट गए हैं। पर दूसरी तरफ पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि 3 माह के भीतर चुनाव कराया जाना किसी भी तरह से संभव नहीं है चुनाव कराने के लिए कम से कम 6 माह का समय चाहिए। गौरतलब है कि पंजाब, इस्लामाबाद, बलूचिस्तान में एवं एक अन्य प्रांत में अभी स्थानीय चुनाव भी होने वाले हैं। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के मामले में इमरान सरकार और चुनाव आयोग के बीच पूर्व में ही तनातनी रही है, इस तरह चुनाव आयोग इमरान सरकार के खिलाफ जाकर 3 माह के भीतर चुनाव कराने से मना कर रहा है। इससे इमरान सरकार की परेशानी और बढ़ जाएगी। सवाल यह उठता है की इमरान की खुद की पार्टी तहरीक ए इस्लाम के कुछ खास सिपहसालार जो इमरान के काफी नजदीक माने जाते थे अब इमरान की हरकतों के सामने उनकी आलोचना कर काफी मुखर हो गए हैं। पंजाब सरकार के पूर्व गवर्नर चौधरी सरवर और वरिष्ठ नेता कलीम खान बगावत पर उतर आए हैं, तथा इमरान की पार्टी के मजबूत स्तंभ तथा उनके खजांची जहांगीर तरेब अब पार्टी से अलग होकर नया रुख अख्तियार करने में लगे हुए हैं, यह तीनों व्यक्ति काफी शक्तिशाली एवं दमदार हैं पार्टी को कमजोर करने और तोड़ने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है की पीटीआई 1 साल के भीतर बिखर जाएगी और यदि चुनाव हुए तो इमरान की पार्टी को 25 सीटों से ज्यादा में विजय प्राप्त नहीं हो सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ऑफ पाकिस्तान के आने वाले फैसले से यदि पूर्व मैं लिए गए इमरान सरकार के फैसले के विरोध में निर्णय आता है तो विपक्ष सरकार बनाने में सक्षम हो जाएगी और इमरान सरकार को विपक्ष में बैठना पड़ेगा जिसके फलस्वरूप इमरान की मुश्किलें और बढ़ जाएंगी। इमरान का और परिपक्वता भरा निर्णय उन्हीं पर भारी पड़ सकता है।

पढ़ी-लिखी युवा पीढ़ी कृषि क्षेत्र में ला रही बदलाव

रीतेन्द्र कंवर शेखावत

कोरोना काल ने ग्रामीण भारत के युवाओं को कृषि की और मोड़ दिया है। इस दौरान पढ़ी-लिखी युवा पीढ़ी कृषि क्षेत्र में आने वाली समस्याओं व इसकी दक्षता में सुधार के तरीके ढूंढ रही है । ध्यातव्य है कि हरित क्रांति (1960) से लेकर विभिन गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों तक, भारत कृषि प्रौद्योगिकी में लगातार विकास कर रहा हैं। हालांकि, भारतीय किसानों में से केवल एक तिहाई ने उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाई है। शेष कृषि नवाचारों और खेती के आधुनिक तरीको से अवगत नहीं हैं जो उच्च फसल पैदावार और गुणवत्ता का कारण बन सकते है । अगर देश में कृषि की प्रगति की बात करें तो भारत घरेलू और वैश्विक कृषि उत्पादन मांग में अग्रणी योगदानकताओं में से एक है। भारत दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक, फल और सब्जी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है , साथ ही देश में लगभग 9 करोड़ किसान है और 45 करोड़ परिवार कृषि से जुड़े है। परन्तु फिर भी भारतीय कृषि व किसान कई प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे है जैसे उत्पादन में कमी, भूमि उर्वरता का क्षय, कृषि लागतों का बढ़ना , मांग व आपूर्ति असंतुलन व भारतीय कृषि का आत्मनिर्भर न होना आदि। गौरतलब है कि भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर है व कृषि में तकनीक का उपयोग सीमित है जिससे मौसमी प्रभावों का सटीक आंकलन नही हो पाता जिससे भूमि के बार बार उपयोग से मृदा स्वास्थ्य का क्षय होता है । जिससे खाद्यान्नों की गुणवत्ता पर असर पड़ता है। साथ ही कृषि राज्य सूची का विषय है जिस कारण कृषिगत डेटा हर राज्य का अलग अलग है व इसमें एकरूपता का अभाव है जैसे भूमि मापन की विधियां अलग है , जलवायु प्रदेश , मृदा की गुणवत्ता , कृषि लागतों का आंकलन आदि राज्यवार अलग - अलग है। जिसके कारण एक राष्ट्रीय कृषिगत नीति निर्माण में बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए कृषि में उत्पादन, प्रसंकरण, रखरखाव व आपूर्ति यानी पूरी श्रृंखला में मूलभूत परिवर्तनों की दरकार है जिसका समाधान तकनीकी परिवर्तन से सम्भव हो सकता है। अगर बात करें तो चौपाल जैसे आईसीटी क्षेत्र कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रणाली का एक उदाहरण है जो किसानों को समय पर और प्रासंगिक जानकारी के साथ सशक्त बनाता है। ताकि वे अपने निवेश पर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकें। भू-अभिलेखों के रख-रखाव जैसे क्षेत्रों में ई-गवर्नेंस खराबी को दूर करने और सही स्वामित्व का आश्वासन देने का एक बड़ा कदम है। आधार से जुड़े बैंक खाते और सरकारी रिकॉर्ड सही पहचान कायम करके मौद्रिक लाभों तक पहुंच प्रदान करते हैं, बदले में ऋण की पहुंच की समस्या को हल करते हैं। ई-कॉमर्स और एम-कॉमर्स प्लेटफार्मों के माध्यम से डोर कनेक्टिविटी के लिए प्रत्यक्ष खेत ने बिचौलियों की हिस्सेदारी में कटौती करने और उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में कारीगरों को सुविधा प्रदान की है। गौरतलब है कि सरकार द्वारा अपनाये गए परंपरागत साधनों जैसे कि एमएसपी पर खरीद व भंडारण की सुविधा , उर्वरक सब्सिडी , डीबीटी आदि में समस्याएं देखने को मिलती है जैसे एमएसपी का लाभ सभी किसानों व सभी फसलों को न मिलकर मुख्यतः गेहू व चावल पर ही केंद्रित है । साथ ही भण्डारण सुविधा के अभाव में फसल बर्बाद होती है , ऐसे में सरकार द्वारा परम्परागत नीतिगत प्रयासों के अतिरिक्त नई ई -तकनीकी को भी कृषि क्षेत्र में उपयोग करने का रोडमैप तैयार किया है । ई- तकनीक के द्वारा कृषि उत्पादकता ,खाद्य सुरक्षा, खाद्य गुणवत्ता , भंडारण निर्यात आदि के लिए आवश्यक परिवर्तन किए गए है । ई-तकनीक से यहां अर्थ है आई सी टी ,बिग डेटा , स्पेस तकनीक , रिमोट सेंसिंग ,ड्रोन , जी आई एस, ब्लॉकचैन आदि का इस्तेमाल कृषि उत्पादकता बढ़ाने व उसे उन्नत करने के किया जाना। इन सभी से सरकार के पास कृषिगत विकास के लिए जो पर्याप्त आंकड़ों का अभाव है उसे दूर किया जा सकेगा । यहाँ बात करें तो सरकार द्वारा 2015 में जारी डिजिटल इण्डिया मिशन के तहत ई क्रांति कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें किसानों के लिए तकनीक के उपयोग जैसे ऑनलाइन ऋण, बैंकिंग सुविधा, बीज ,खाद खरीद आदि शामिल किए गए।

देश के लोग अच्छे दिन आने का इंतजार कर रहे थे

नवेन्दु उन्मेष

बाजार में पेट्रोल बहुत इतरा रहा था। उसे इतराता हुआ सोने-चांदी और शेयर को देखा नहीं गया। इस पर सोना उसकी ओर मुखातिब होते हुए बोला-आखिर क्या बात है कि तुम बाजार में आज बहुत इतरा रहे हो। जवाब में पेट्रोल बोला-देख नहीं रहे हो मैंने अपनी कीमत बढ़ाकर बाजार में आग लगा दिया है। आगे पेट्रोल ने कहा-देश के लोग अच्छे दिन आने का इंतजार कर रहे थे लेकिन उनके तो अच्छे दिन आये नहीं, अब हमारे अच्छे दिन आ गये हैं। इसी लिए आज मै इतरा रहा हूं। सोना-चांदी और शेयर के घमंड तोड़ते हुए पेट्रोल ने कहा एक समय था तुमलोगों की खबरें प्रतिदिन अखबार के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित होती थी-सोना गिरा और चांदी टूट। इसी प्रकार शेयर के भाव चढ़े और बढ़े। लेकिन अब तुमलोग खबरों से गायब हो चुके हो। तुम्हारे चढ़ने और गिरने से समाज में कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। इनदिनों खबरों में मेरा डंका बज रहा है। चौक-चौराहे पर सुबह-सुबह चाय के साथ सिर्फ मेरी ही चर्चा लोग कर रहे हैं। इससे जाहिर होता है मैं कितना बलसाली हूं।

पेट्रोल का प्रवचन चल ही रहा था कि कुछ मीडिया वाले वहां आ धमके और बताने लगे कि पन्द्रह दिनों में पेट्रोल-डीजल की कीमत में काफी उछाल आया है। वे यह भी बताने लगे कि आगे आने वाला समय और भी कठिन है। पेट्रोल की कीमतों में वृद्धि से इनकार नहीं किया जा सकता। मीडियाकर्मियों की बातों को सुनकर पेट्रोल ने कहा-मेरा मार्केट वैल्यु बढ़ने से मेरा सीना छतीस इंच से बढ़कर छप्पन इंच हो गया है। अब वह दिन दूर नहीं जब लोग अपना वाहन लेकर नहीं दावात लेकर पेट्रोल पंप पर जायेंगे और पेट्रोल पंप वाले से कहेंगे मुझे एक दावात पेट्रोल देना। वह दिन भी दूर नहीं जब दूल्हा दहेज में अपने होने वाले ससुर से बाइक के साथ-साथ आजीवन पेट्रोल की मांग करेगा। अगर ससुर पेट्रोल देने में अक्षम होगा तो दूल्हा अपनी नई नवेली दूल्हन को लेकर जायेगा और पेट्रोल पंप के दर्शन करा करके अपने घर वापस लौट आयेगा।

हार के बाद बोले संजू सैमसन- हमने किस पल मैच गंवाया, पता नहीं

मुंबई। राजस्थान रॉयल्स को आखिरकार सीजन में पहली हार का स्वाद चखना पड़ा। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ खेले गए मैच में राजस्थान को दिनेश कार्तिक की बेशकीमती पारी के कारण चार विकेट से हार झेलनी पड़ी। हार के बाद राजस्थान के कप्तान संजू सैमसन हैरान थे। उन्होंने सबसे पहले कहा कि मैं आज एक भी उस पल का जिक्र नहीं कर सकता जहां हमने मैच गंवाया। सैमसन ने कहा कि मुझे लगा कि टॉस हारने के बाद इतने धीमे विकेट पर अच्छा टोटल बनाना अच्छा था। डेथ ओवर्स में जोस

बटलर और हेटमायर ने शानदार बल्लेबाजी की। ओस आने के साथ मैच को अंतिम ओवर तक ले जाना भी एक अच्छा प्रयास था। वहीं, अंपायर सें लंबी बातचीत करने पर संजू सैमसन ने कहा कि ओस बहुत ज्यादा थी। जिस कारण गेंद गेंदबाजों के हाथों से निकल रही थी। उन्होंने अंपायरों से गेंद बदलने के सवालों पर कहा कि मैंने ऐसा नहीं कहा था। मैं उनसे अन्य चीजों पर बात कर रहा था। मुझे अपने गेंदबाजों पर पूरा भरोसा था। हमें याद रखन होगा कि डीके बहुत अनुभव वाला व्यक्ति है। हमें बस यहां बढिय़ा फील्ड सेट करनी की जरूरत थी। अब इस नुकसान से बाहर निकलने के लिए बहुत सारी सकारात्मकताएं हैं, और हम बहुत सी चीजें भी सीख सकते हैं।

मुमताज की हैट्रिक से मलेशिया को 4-0 से हराकर भारत शीर्ष पर, क्वार्टर फाइनल में कोरिया से भिड़ंत

पोटचेफ्सट्रूम। मुमताज खान की हैट्रिक से भारतीय महिला हॉकी टीम ने यहां एफआईएच जूनियर विश्व कप में पूल डी के अपने अंतिम मैच में मलेशिया को 4-0 से हराकर अपना विजयी अभियान जारी रखा। मंगलवार के मुकाबले से पहले ही क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने से चूके भारत की ओर से मुमताज (10वें, 26वें और 59वें मिनट) के तीन गोल के अलावा संगीता कुमारी (11वें मिनट) ने एक गोल दागा।

भारत इस तरह पूल डी में तीन मैचों में तीन जीत से नौ अंक जुटाकर शीर्ष पर रहा। भारत ने इससे पहले वेल्स को 5-1 जबकि जर्मनी की मजबूत टीम को 2-1 से हराया था। नॉकआउट में पहले ही जगह पक्की करने के बाद आत्मविश्वास से भरी भारतीय टीम ने पूरे मुकाबले में दबदबा बनाए रखा। टीम को इसका फायदा 10वें मिनट में मिला जब मलेशिया की डिफेंडर से टकराकर आई गेंद को मुमताज ने गोल में पहुंचाया। भारत ने एक मिनट बाद अपनी बढ़त दोगुनी कर ली जब लालरिंदिकी के क्रॉस पर संगीता ने गोल दागा। भारत को इसके बाद लगातार दो पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। मुमताज ने 26वें मिनट में एक और गोल दागा जिससे भारत मध्यांतर तक 3-0 से आगे था। भारत को तीसरे क्वार्टर में कुछ और पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन टीम इन्हें गोल में बदलने में नाकाम रही। मैच में जब 10 मिनट का खेल बाकी था तब मलेशिया को दो पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन भारत की दूसरी पसंद गोलकीपर खुशबू ने विरोधी टीम के प्रयासों को विफल कर दिया। भारत को इसके बाद अपना सातवां पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन एक बार फिर टीम के हाथ नाकामी ही लगी। भारत ने मैच खत्म होने से एक मिनट पहले स्कोर 4-0 कर दिया जब मुमताज ने ब्यूटी डुंग डुंग के पास को गोल में पहुंचाया। भारत शुक्रवार को क्वार्टर फाइनल में दक्षिण कोरिया से भिड़ेगा।

शहबाज और कार्तिक की जोड़ी ने बेंगलुरु को दिलाई 4 विकेट से जीत

मुंबई। राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच आईपीएल 2022 का 13वां मैच मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान फाफ डुप्लेसिस ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया है। बल्लेबाजी के लिए आई राजस्थान रॉयल्स की टीम ने जोस बटलर की अर्धशतकीय पारी के बदौलत 20 ओवरों में 169 रन बनाए। 170 रन का पीछा करने आई बेंगलुरु को शुरूआत अच्छी मिली पर टीम के मिडिल ऑर्डर एक बार फिर फेल हो गया। इसके बाद शहबाज अहमद और दिनेश कार्तिक की जोड़ी ने टीम को मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकाला। बेंगलुरु ने 19.1 ओवर में 173 रन बनाकर मैच को 4 विकेट से जीत लिया।राजस्थान की शुरूआत खराब रही। दूसरी ही ओवर में बेंगलुरु के गेंदबाज डेविड विली ने ओपनर जायसवाल को 4 रन पर बोल्ड कर दिया।

पीवी सिंधु और किदांबी श्रीकांत प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

मुंबई । भारत के शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू और किदांबी श्रीकांत ने कोरिया ओपन सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के शुरुआती दौर में सीधे गेम में जीत हासिल कर प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है।दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु ने पाल्मा स्टेडियम में अमेरिकी की लॉरेन लैम को 21-15, 21-14 से शिकस्त दी। वहीं श्रीकांत ने मलेशिया के डेरेन ल्यू को 22-20 21-11 से मात दिया। सिंधु, जिन्होंने हाल ही में स्विस ओपन खिताब जीता है, अब जापान की आया ओहोरी से भिड़ेंगी, जब्कि विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता श्रीकांत इजरायल की मिशा ज़िल्बरमैन के खिलाफ खेलेंगे।

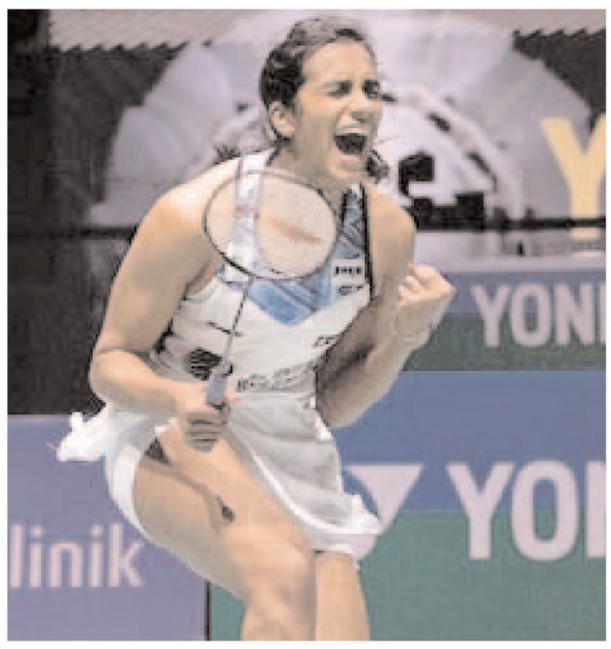

यूरोपीय जीटी4 रेस में दो बार शीर्ष तीन में शामिल रहे एकमात्र एशियाई अखिल रबिंद्रा

बेंगलुरू। एस्टन मार्टिन ड्राइवर अकादमी से जुड़े और इस साल यूरोपीय जीटी4 में भाग ले रहे एकमात्र एशियाई अखिल रबिंद्रा अपनी नयी टीम रेसिंग स्पिरिट ऑफ़ लेमन के साथ सत्र के पहले दौर में दो बार 'पोडियम' (शीर्ष तीन) पर पहुंचने में सफल रहे। अखिल और उनकी टीम के साथी टॉम कैनिंग ने इमोला सर्किट में पहले दौर की दोनों रेस पूरी करते हुए सिल्वर कप श्रेणी में तीसरा स्थान (पी3) हासिल किया।यहां जारी विज्ञप्ति के अनुसार अखिल ने क्वालीफाइंग रेस दो के बाद कुल मिलाकर चौथा स्थान हासिल किया था। अखिल ने अपने साथी कैनिंग के साथ पहली रेस में शानदार शुरुआत की। उन्होंने पी चोवेट और जे स्कीयर की टीम के तकनीकी कारणों से अयोग्य घोषित किये जाने के बाद तीसरा

स्थान हासिल किया। इसके बाद दूसरी रेस में भी अखिल और कैनिंग की टीम तीसरे स्थान पर रही।

आखिरी मिनट में इसाक ने पेनाल्टी को गोल में बदला, रियल सोसियाड की 1-0 से जीत

लंदन। एलेक्जेंडर इसाक ने अंतिम सीटी बजने से कुछ सेकंड पहले पेनाल्टी को गोल में बदलकर रियल सोसिडाड को स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा में एस्पेनयोल पर 1-0 से जीत दिलाई। इसाक ने दूसरे हॉफ के इंजुरी टाइम के छठे मिनट में यह गोल किया। सोसिडाड ने पिछले छह मैचों में चौथी जीत दर्ज की। इससे वह अगले सत्र में यूरोपीय टूर्नामेंटों में जगह सुरक्षित करने के करीब भी पहुंच गया है।

सोसिडाड के अब 30 मैचों में 51 अंक हो गए हैं और वह छठे स्थान पर पहुंच गया है। वह पांचवें स्थान की टीम रियल बेटिस से दो अंक तथा सेविला, एटलेटिको मैड्रिड और बार्सिलोना से छह अंक पीछे है। इन सभी के समान 57 अंक हैं। रियल मैड्रिड 12 अंक की बढ़त के साथ शीर्ष पर है। इससे पहले बार्सिलोना ने रोमांचक मुकाबले में सेविला को हराया था। टीम के लिए युवा स्टार पेड्री ने गोल किया था। वेलेंसिया और कादिज के बीच खेला गया मैच ड्रॉ पर छूटा था। ग्रेनाडा और रायो वालेकानो के बीच मैच 2-2 की बराबरी पर रहा था। वहीं, रियाल बेटिस ने ओसासुना को 4-1 से हराया था। एटलेटिक क्लब ने एल्चे के खिलाफ 2-1 से जीत हासिल की थी।

इंग्लैंड को लगा झटका, इस ऑलराउंडर की चोट बनी चिंता का कारण

लंदन । इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी बेन स्टोक्स एक और चोट की चिंता से जूझ रहे हैं। इस 30 वर्षीय क्रिकेटर ने कहा कि कैरेबियाई दौरे के दौरान उनके घुटने में दर्द का अनुभव होने के बाद स्कैन होना तय है। जो रूट के नेतृत्व में इंग्लैंड टेस्ट टीम हाल ही में वेस्टइंडीज में तीन मैचों की श्रृंखला हार गई जिसमें मेजबान टीम ने ग्रेनाडा में आखिरी मैच 10 विकेट से जीता था। स्टोक्स ने श्रृंखला में 99 ओवर गेंदबाजी की। एक रिपोर्ट में कहा गया है जब तक चोट की गंभीरता का खुलासा नहीं हो जाता, तब तक वह कोई योजना नहीं बना सकते। इंग्लैंड का गर्मियों में कार्यक्रम वयस्त है। उन्हें न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला के साथ-साथ भारत के खिलाफ पुनर्निर्धारित पांचवें टेस्ट की मेजबानी करनी है और स्टोक्स की फिटनेस टीम की सफलता की कुंजी होगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्टोक्स के घुटने का स्कैन होगा। स्टोक्स ने कहा, कैरिबियन में मेरे घुटने में समस्या थी, मैं उसका स्कैन करवा रहा हूं इसलिए जब तक हम नहीं जानते कि क्या हो रहा है, तब तक कोई योजना नहीं बना सकता। इंग्लैंड के उप-कप्तान को भी एशेज के दौरान एक साइड स्ट्रेन का सामना करना पड़ा था।

र्नामेंट में नहीं खेलेंगे मेदवेदेव? ऑल इंग्लैंड क्लब रूसी और बेलारूसी खिलाड़ी पर लगा सकता है प्रतिबंध

नई दिल्ली। प्रतिष्ठित ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट विंबलडन से रूस और बेलारूस के टेनिस खिलाडिय़ों को प्रतिबंधित करने की तैयारी कर ली गई है। आयोजनकर्ता इस मुद्दे पर यूके सरकार से बातचीत कर रहे हैं। उन्हें डर है कि खिताब के प्रबल दावेदार और दुनिया के नंबर दो टेनिस खिलाड़ी दानिल मेदवेदेव अगर यहां खिताब जीत जाते हैं तो यूक्रेन पर हमला करने वाले रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की सत्ता को बल मिलेगा।

विश्व नंबर दो हैं मेदवेदेव

नोवाक जोकोविच इस वक्त कोरोना टीकाकरण को लेकर विवादों में उलझे हैं और राफेल नडाल चोटिल हो चुके हैं। रोजर फेडरर भी लंबे समय से नहीं खेले हैं। ऐसे में बीते वर्ष अमेरिकी ओपन जीतने वाले मेदवेदेव विंबलडन में खिताब जीतने के बड़े दावेदार हैं। आयोजकों को लगता है अगर वह रूस के झंडे तले जीतते हैं तो पुतिन को बढ़ावा मिलेगा। इस समय एटीपी रैंकिंग में रूस के आंद्रे रुबलेव नंबर आठ, करेन खाचानोव 24,

असलान करात्सेव 31 और बेलारूस के इल्या इवाश्का 42वें नंबर पर हैं। वहीं, बेलारूस की बड़ी सर्विस करने वाली आर्यन सबालेंका विंबलडन के ग्रास कोर्ट पर खिताब जीतने का माद्दा रखती हैं। इसी देश की विक्टोरिया अजारेंका भी विंबलडन में खासा अच्छा करती रही हैं।

मई के मध्य में फैसला लेंगे आयोजक

हालांकि एटीपी, डब्लूटीए और आईटीएफ ने तटस्थ झंडे तले और बिना राष्ट्रगान के रूसी खिलाडिय़ों को टूर में खेलने की अनुमति प्रदान कर रखी है। वहीं विंबलडन के आयोजनकर्ता ऑल इंग्लैंड क्लब इस वजह से भी रूसी बेलारूसी खिलाडिय़ों पर प्रतिबंध लगा सकते हैं क्योंकि उन्हें स्वतंत्र आयोजक होने के चलते किसी कानूनी झमेले में फंसने का खतरा नहीं है। ऑल इंग्लैंड क्लब की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि यह बेहद जटिल और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। इस मुद्दे पर सरकार और लॉन टेनिस एसोसिएशन और टेनिस की अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से लगातार चर्चा कर रहे हैं। एंट्री की तिथि खत्म होने के समय मई माह के मध्य में उनकी ओर से इस मुद्दे पर फैसला सुनाया जा सकता है। विंबलडन 27 जून से 10 जुलाई तक आयोजित होगा।

हारकर भी शीर्ष पर काबिज राजस्थान, आरसीबी की जीत से दिल्ली को नुकसान

पुणे। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 15वें सीजन अब तक 13 मैच हो चुके हैं। सभी टीमों ने कम से कम दो मुकाबले खेल लिए हैं। राजस्थान की टीम अंक तालिका में पहले पायदान पर बनी हुई है। बैंगलोर के खिलाफ मैच में राजस्थान को हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद यह टीम शीर्ष पर काबिज है। वहीं गुजरात इस टूर्नामेंट की एकमात्र टीम है, जो अब तक कोई मुकाबला नहीं हारी है। हैदराबाद अंक तालिका में आखिरी पायदान पर बनी हुई है। वहीं आरसीबी की जीत से दिल्ली को नुकसान हुआ है और यह टीम अंक तालिका में सातवें पायदान पर आ गई है। इस मैच के बाद पर्पल कैप (सर्वाधिक विकेट) और ऑरेंज कैप (सर्वाधिक रन) की सूची में भी बदलाव हुआ है।

अंक तालिका की स्थिति

अंकतालिका की शुरुआती चार में से तीन टीमें तीन-तीन मुकाबले खेल चुकी हैं। सभी को

एक मैच में हार का सामना करना पड़ा है। वहीं दो में जीत मिली है। जबकि गुजरात की टीम अपने दोनों मैच जीतकर तीसरे स्थान पर बनी हुई है। राजस्थान के बाद कोलकाता, गुजरात और पंजाब क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर बनी हुई हैं।

आखिरी तीन स्थानों पर मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स और सनराइजर्स हैदराबाद की टीम है, जो क्रमशः आठवें, नौवें और 10वें स्थान पर मौजूद हैं। इन तीनों टीमों का अभी तक खाता नहीं खुला है और इन्हें पहली जीत की दरकार है।

आमने-सामने होंगे टीम इंडिया के भविष्य के संभावित कप्तान

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग की नई टीम लखनऊ सुपरजाइंट्स और दिल्ली कैपिटल्स की टीम आईपीएल में जब यहां आमने सामने होंगी तो यह दो बेहद प्रतिभावान क्रिकेटरों और भारत के भविष्य के संभावित कप्तानों लोकेश राहुल और ऋषभ पंत की भी भिड़ंत होगी। अपने दिन किसी भी गेंदबाजी आक्रमण को ध्वस्त करने की क्षमता रखने वाले राहुल और पंत आईपीएल के शुरुआती चरण में ही अपनी टीम का पलड़ा भारी रखने का प्रयास करेंगे।

भारत को अगले कुछ वर्षों में काफी क्रिकेट खेलना है और राष्ट्रीय कप्तान रोहित शर्मा के काम के बोझ का प्रबंधन महत्वपूर्ण होगा और ऐसे में राहुल तथा पंत दोनों भविष्य के कप्तान के रूप में अपना दावा मजबूत करना चाहेंगे। अब आस्ट्रेलियाई खिलाड़ी भी आईपीएल के लिए उपलब्ध होंगे। दिल्ली कैपिटल्स से आक्रामक बल्लेबाज डेविड वार्नर जबकि लखनऊ की टीम से आलराउंडर मार्कस स्टोइनिस जुड़ेंगे जिससे दोनों टीम की अंतिम एकादश मजबूत होगी।

उम्मीद है कि कैपिटल्स की टीम में वार्नर को टिम सीफर्ट की जगह शामिल किया जाएगा जबकि स्टोइनिस लखनऊ की टीम में एंड्रयू टाई या इविन लुईस की जगह लेंगे। अभी उनके टाइ की जगह अंतिम एकादश में शामिल होने की संभावना अधिक है। दोनों टीम की गेंदबाजी थोड़ी

चिंता का सबब रही है लेकिन गौतम गंभीर के मार्गदर्शन में सुपरजाइंट्स की टीम ने प्रभावित किया है। जेसन होल्डर के शामिल होने से लखनऊ की टीम मजबूत हुई है और दिल्ली की टीम को उम्मीद होगी कि वार्नर पृथ्वी साव के साथ मिलकर उन्हें आक्रामक शुरुआत दिलाएंगे।

चेन्नई सुपरकिंग्स और सनराइर्स हैदराबाद के खिलाफ दो उम्दा पारियां खेलने वाले लखनऊ के कप्तान राहुल चाहेंगे कि क्विंटन डिकॉक भी सुपरकिंग्स के खिलाफ किए प्रदर्शन को दोहराएं। लखनऊ के गेंदबाजों को हालांकि दिल्ली की बल्लेबाजी पर अंकुश लगाना होगा जो वार्नर की मौजूदगी से और मजबूत होगी। कप्तान पंत और पृथ्वी से भी टीम को बड़ी पारी की इंतजार है। प्रत्येक मैच के साथ ललित यादव का आत्मविश्वास बढ़ रहा है लेकिन अनुभवी मनदीप सिंह बल्लेबाजी क्रम की सबसे कमजोर कड़ी हैं। मनजीत, लॉकी फर्ग्युसन और यहां तक की हार्दिक पंड्या की गेंदों के खिलाफ जिस तरह लेग स्टंप की तरफ गए उससे पता चलता है कि उनका आत्मविश्वास डिगा हुआ है। सुपरजाइंट्स की टीम में हालांकि मार्क वुड की गैरमौजूदगी में कोई बहुत तेज गति से गेंद फेंकने वाला गेंदबाज नहीं है और ऐसे में पंत और कोच रिकी पोंटिंग पंजाब के पूर्व कप्तान मनदीप को एक और मौका दे सकते हैं।

ऑस्ट्रेलिया ने एकमात्र टी20 में पाकिस्तान को तीन विकेट से हराया, फिंच और स्टोइनिस का शानदार प्रदर्शन

दुबई । ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच लाहौर में खेला गया एकमात्र टी20 मैच कंगारू टीम के नाम रहा। ऑस्ट्रेलिया ने यह मैच तीन विकेट से जीतकर अपना पाकिस्तान दौरा समाप्त किया। कंगारू टीम 24 साल बाद पाकिस्तान के दौरे पर पहुंची थी और यह दौरा ऑस्ट्रेलिया के लिए सफल रहा।

पहले टेस्ट और फिर टी-20 सीरीज जीतकर कंगारू टीम ने इस दौरे को यादगार बनाया। हालांकि, वनडे सीरीज में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। आखिरी टी20 मैच में पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 162 रन बनाए थे। ऑस्ट्रेलिया ने पांच गेंद शेष रहते सात विकेट खोकर लक्ष्य का पीछा कर लिया।

अब ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी आईपीएल में खेलेंगे। इससे आईपीएल का रोमांच और ज्यादा बढ़ जाएगा। कोलकाता और लखनऊ जैसी टीमों के लिए अच्छी खबर यह है कि उनके साथ जुड़ने वाले ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी लय में हैं।

बाबर की कप्तानी पारी बेकार -इस मैच में ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एरोन फिंच ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए रिजवान और बाबर ने पाकिस्तान को शानदार शुरुआत दी और पहले विकेट के लिए 67 रन जोड़े। रिजवान 23 रन बनाकर ग्रीन का शिकार बने। इसके बाद फखर जमान और इफितकार अहमद भी कुछ खास नहीं कर सके। खुशदिल ने 24 रन बनाए, लेकिन पाकिस्तान की टीम नियमित अंतराल पर विकेट गंवाती रही। इस बीच बाबर आजम ने 46 गेंद पर 66 रन बनाए। अंत में उस्मान कादिर ने छह गेंद में 18 रन बनाकर अपनी टीम का स्कोर आठ विकेट पर 162 रन तक पहुंचाया।

ऑस्ट्रेलिया के लिए नाथन एलिस ने चार और कैमरून ग्रीन ने दो विकेट लिए। एडम जंपा और सीन एबॉट को एक-एक विकेट मिला।

ऑस्ट्रेलिया के लिए फिंच और स्टोइनिस ने किया कमाल

163 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम की शुरुआत ठीक थी और पहले विकेट के लिए फिंच-हेड की जोड़ी ने 40 रन जोड़े। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया भी नियमित अंतराल पर विकेट गंवाती रही। कप्तान फिंच 55 रन बनाकर आउट हुए। वहीं स्टोइनिस ने नौ गेंद में 23 रन की तूफानी पारी खेली। हेड ने 26, इंग्लिस ने 24 और बेन मैकडरमोट ने 22 रन बनाकर अपनी टीम की जीत तय कर दी। ऑस्ट्रेलिया ने 19.1 ओवर में 163 रन बनाकर तीन विकेट से यह मैच जीत लिया।

पाकिस्तान के लिए शाहीन अफरीदी, उस्मान कादिर और मोहम्मद वासीम जूनियर ने दो-दो विकेट लिए। हरीस रऊफ को एक विकेट मिला।

ऑस्ट्रेलिया का सफल दौरा

ऑस्ट्रेलियाई टीम 24 साल बाद पाकिस्तान को दौरे पर पहुंची थी और यह दौरा बहुत हद तक सफल रहा। सात में से तीन मैच कंगारू टीम के नाम रहे। वहीं दो मैच में पाकिस्तान को जीत मिली। दो मैच ड्रॉ रहे। ऑस्ट्रेलिया ने टेस्ट और टी20 सीरीज अपने नाम की। वहीं वनडे सीरीज में उसे हार का सामना करना पड़ा। अब ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी आईपीएल का हिस्सा बनेंगे। इससे इस लीग का रोमांच और ज्यादा बढ़ेगा।

अपने कौशल में सुधार करने के लिए ये तरीका अपनाते हैं ईशान किशन, खुद किया खुलासा

मुंबई। मुंबई इंडियंस के युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ईशान किशन ने कहा है कि वह कभी-कभी चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के क्रिकेट कौशल को देखते करते हैं। उन्होंने कहा कि वह अपने स्वयं के कौशल में सुधार करने के लिए अकसर अनुभवी खिलाड़ी को 'पढ़ने की कोशिश' करते हैं। इस 23 वर्षीय ईशान को मुंबई इंडियंस ने मेगा नीलामी के दौरान 15.25 करोड़ रुपए में वापस खरीदा, जिससे वह आईपीएल 2022 का सबसे महंगा खिलाड़ी बन गया। ईशान ने एक घटना के बारे में बताते हुए कहा कि मैं यह पता लगाने की कोशिश करता हूं कि उनका दिमाग कैसे काम करता है। आप विश्वास नहीं करेंगे ... आईपीएल के एक मैच में, इसने मुझे सबसे ज्यादा तनाव दिया। मैं अच्छा खेल रहा था और गेंदबाजों को मार रहा था। लेकिन फिर धोनी भाई गेंदबाज के पास गए और कुछ कहा। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था लेकिन उन्होंने इमरान (ताहिर) भाई से कुछ कहा। ईशान ने कहा कि और मैं दिमाग सोच रहा था कि धोनी भाई ने उनसे क्या कहा है। मुझे नहीं पता कि क्या हुआ था, लेकिन एक हाफ-वॉली गेंद थी, जिसे मैंने निकाल दिया लेकिन शॉर्ट-थर्ड मैन पर कैच आउट हो गया।

चीन के शंघाई में अभिभावकों को कोरोना संक्रमित बच्चों के साथ रहने की अनुमति

बीजिंग। चीन के शंघाई शहर में अभिभावकों को कोरोना वायरस से संक्रमित अपने बच्चों के साथ रहने की अनुमति दे दी गई है। शहर के स्वास्थ्य आयोग के शीर्ष निरीक्षक वू गैन्यू ने कहा कि वे माता-पिता जो स्वास्थ्य जोखिमों से पूरी तरह से अवगत हैं और समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हैं, उन्हें अपने बच्चों के साथ निगरानी केंद्रों में रहने की अनुमति दी जाएगी। हालांकि, गैन्यू ने पत्रकारों से कहा कि माता-पिता के लिए मास्क पहनना और अलग होकर भोजन करना अनिवार्य रहेगा। साथ ही उन्हें अन्य कोविड-19 नियमों का भी सख्ती से पालन करना होगा।

18 साल से छोटे यूजर्स में लोकप्रिय जुए के विज्ञापन नहीं कर सकेंगे सेलिब्रिटी

लंदन। ब्रिटेन ने ऐसे जुए के विज्ञापनों पर रोक लगा दी है, जो 18 से कम उम्र के यूजर्स के बीच लोकप्रिय हैं और जिनमें कई सेलिब्रिटी दिखाए जा रहे हैं। यहां के विज्ञान मानक प्राधिकरण (एएमए) ने नए सख्त नियम जारी किए हैं जो अक्तूबर से लागू होंगे। इनमें कहा गया कि युवाओं और कमजोर दर्शकों को जुए की लत से सुरक्षा देने की जरूरत है। जुए के विज्ञापनों का गहरा प्रभाव दर्शकों पर होता है। खासतौर पर बड़े सेलिब्रिटी, खिलाड़ी, सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर आदि अगर इनमें शामिल होते हैं तो इसका लोगों को नुकसान होता है। इन सेलिब्रिटी की 18 साल से छोटे दर्शकों के दिलों पर गहरी पहुंच होती है।

रोनाल्डो भी आ चुके हैं इन विज्ञापनों में

फुटबॉल क्लब मैनचेस्टर यूनाइटेड के क्रिस्टियानो रोनाल्डो, चेल्सी के मैनेजर जोस मुरिन्हो इस प्रकार के विज्ञापनों में नजर आ चुके हैं। इसके खिलाफ ब्रिटेन की विज्ञापनों पर बनी समिति ने एएसए को लिखा था। उसने इन विज्ञापनों को नैतिक नियमों के खिलाफ बताया था। उसका कहना था कि इन्हें किशोरों व युवाओं को प्रभावित करने के लिए नहीं बनाना चाहिए।

विशेषज्ञों ने बनाया पीपुल्स सीडीसी, सरकारी संस्था डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन पर लगाए गंभीर आरोप

वाशिगंटन। अमेरिका की बहुचर्चित संस्था डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। ये आरोप खुद अमेरिका के लगभग 15 संक्रामक रोग विशेषज्ञों ने लगाए हैं। उनका इल्जाम है कि सीडीसी कॉरपोरेट सेक्टर की मर्जी के मुताबिक चल रहा है। ये संस्था अपने फैसले उन कंपनियों के मुनाफे को ध्यान में रख कर ले रही है। इन विशेषज्ञों का एक लंबा बयान ब्रिटिश अखबार द गार्जियन में छपा है। इसके मुताबिक इन विशेषज्ञों ने सीडीसी के समानांतर अपनी संस्था बनाने का फैसला किया है। इसका नाम 'पीपुल्स सीडीसी' रखा गया है।

बयान में कहा गया है- 'ओमिक्रॉन का नया वैरिएंट बीए-2 अमेरिका में अपने पांव जमा रहा है। लेकिन एंथनी फाउची और अन्य अधिकारियों ने कहा है कि इससे अमेरिका में कोरोना महामारी की नई लहर आने की संभावना नहीं है। जबकि बीए-2 दुनिया के कई हिस्सों में कहर ढा रहा है। इधर जिन नीतियों और व्यवहार संबंधी नियमों से हम नई लहर को रोक सकते हैं, अमेरिका में उन्हें छोड़ दिया गया है। ऐसा आंशिक रूप से सीडीसी की कोविड का खतरा मापने की नई व्यवस्था के कारण हुआ है।'

बयान के मुताबिक कुछ लोग दावा करते हैं कि सीडीसी विज्ञान के मुताबिक चलता है और यथासंभव जरूरी कदम उठाता है। विशेषज्ञों ने कहा- 'लेकिन अगर मकसद संक्रमण और पीड़ा को रोकना है, तो सीडीसी की ताजा सिफारिशें विज्ञान या समता के सिद्धांत के मुताबिक नहीं हैं। बल्कि ये कहना अधिक सही होगा कि सीडीसी पैसे का अनुपालन कर रही है। उसने लोगों- खास कर अधिक खतरे वाले लोगों की जरूरतों के ऊपर कॉरपोरेट अमेरिका की इच्छाओं को तरजीह दी है।' बयान में कहा गया- 'हमें ऐसे सीडीसी की जरूरत है, जो लोगों को सेहत को प्राथमिकता दे, न कि बड़ी कंपनियों की सेहत को।

पाकिस्तान एयरलाइन ने रमजान दौरान अपने चालक दल स्टाफ के रोजा रखने पर लगाया प्रतिबंध

इस्लामाबादः पाकिस्तानी इंटनेशनल एयरलाइंस ने अपने कैप्टन और प्रथम अधिकारियों के इस्लामी पवित्र महीने रमजान के दौरान रोजा रखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। PIA का यह फैसला कराची में दो साल पहले हुए विमान हादसे के मद्देनजर आया है। इस हादसे में चालक दल के सदस्यों समेत विमान में सवार 100 लोगों की मौत हो गई थी। विमान चालक ने उस समय रोजा रखा हुआ था।

PIA के प्रवक्ता अब्दुल्ला हफीज ने बताया कि कॉकपिट चालक दल के सदस्यों के लिए सुरक्षा बुलेटिन जारी किया गया है। उन्होंने कहा, ''कॉकपिट चालक दल के सदस्यों पर चिकित्सकीय कारणों से रोजे के दौरान काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। जो लोग रोजा रखना चाहते हैं, उन्हें अवकाश लेना होगा।' प्रवक्ता ने कहा कि रोजा रखने वाले कैबिन चालक दल के सदस्यों को विमान संचालन की अनुमति नहीं होगी।

एक अन्य अधिकारी ने कहा कि रोजे की महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन विमान में ड्यूटी के दौरान रोजा रखने के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं। उन्होंने कहा, ''रोजा रखते हुए विमान संचालन न केवल व्यक्ति के लिए स्वयं खतरा है, बल्कि विमान में मौजूद अन्य सभी के लिए भी यह खतरनाक है।' इस्लामी कैलेंडर के नौवे महीने रमजान के दौरान दुनियाभर के मुसलमान भोर से दिन छिपने तक रोजा रखते है। रमजान दो अप्रैल से आरंभ हुआ था और यह ईद-उल-फितर के साथ समाप्त होगा।

सुप्रीम कोर्ट के बाहर पत्रकारों से 'भिड़े' इमरान के सूचना मंत्री, बोले- तुम तो किराए के हो'

इस्लामाबादः पाकिस्तान में सियासी घमासान चरम पर है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उस समय हंगामा हो गया जब इमरान खान सरकार के सूचना मंत्री फवाद चौधरी पत्रकारों से भिड़ गए। फवाद चौधरी ने पत्रकारों पर जमकर बहस की और पैसे लेने के आरोप भी लगाए। सुप्रीम कोर्ट के बाहर चल रही प्रेस कॉन्फ्रेंस में फवाद चौधरी ने पत्रकारों से कहा, 'आप तो किराये के हैं।' दरअसल मंत्री से पत्रकारों ने पूछा था कि फराह खान देश छोड़कर कैसे भाग गईं तो वह बिफर गए। घटना का वीडियो तेजी से वायरल हो गया है।

इसके बाद पत्रकारों और फवाद चौधरी के बीच बहसबाजी हो गई और पत्रकारों ने नारे लगाने शुरू कर दिए। उन्होंने कहा कि सरकार की गुंडागर्दी नहीं चलेगी। पत्रकारों ने मंत्री फवाद चौधरी से माफी भी मांगने को कहा, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। इसके बाद पत्रकारों ने प्रेस कॉन्फ्रेंस का बहिष्कार कर दिया फराह खान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की तीसरी पत्नी बुशरा बीबी की करीबी दोस्त हैं. वह देश छोड़कर विदेश फरार हो गई हैं। बताया जा रहा है कि वह 90 हजार डॉलर लेकर भागी हैं। उनकी प्लेन में बैठे एक तस्वीर भी वायरल हुई है। खबरें ये भी हैं कि अगर पाकिस्तान में नई सरकार बनती है तो उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है।

रूसी साजो-सामान में निवेश जारी रखना भारत के हित में नहीं : ऑस्टिन

वाशिंगटन। अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने सांसदों से कहा कि रूस के सैन्य उपकरणों में निवेश जारी रखना भारत के हित में नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका चाहता है कि नयी दिल्ली रूसी सैन्य उपकरणों पर अपनी निर्भरता कम करे।

ऑस्टिन ने वार्षिक रक्षा बजट पर अमेरिकी कांग्रेस की कार्यवाही के दौरान सदन की सशस्त्र सेवा समिति के सदस्यों को बताया, 'हम उनके (भारत) साथ बात करके उन्हें समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि रूसी उपकरणों में निवेश जारी रखना उनके हित में नहीं है। हम चाहते हैं कि वे सभी प्रकार के रूसी उपकरणों में निवेश कम करें।' ऑस्टिन ने कांग्रेस सदस्य जो विल्सन के एक सवाल के जवाब में यह बात कही। विल्सन ने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण को लेकर भारत की प्रतिक्रिया की आलोचना की थी।

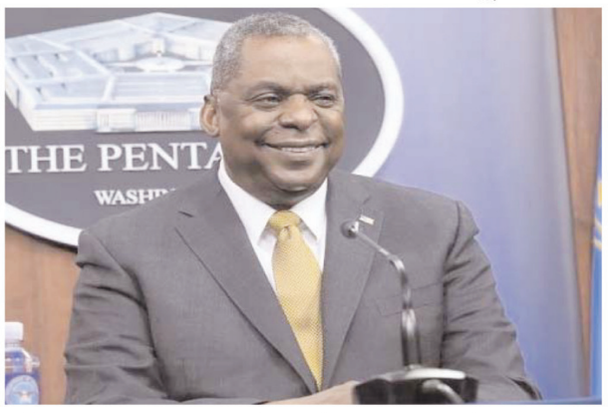

व्हाइट हाउस में ओबामाः बाइडन को 'उपराष्ट्रपति' बोलकर चौंकाया, फिर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच गले लगाया, कहा- ये तो मजाक था

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा 2017 में पद छोड़ने के बाद मंगलवार को पहली बार व्हाइट हाउस के एक कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे। ओबामा 2009 से 2017 तक लगातार दो बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए थे। वह बाइडन के साथ अपने अफोर्डेबल केयर एक्ट (एसीए) के पारित होने का जश्न मनाने के लिए व्हाइट हाउस पहुंचे थे, बाइडन ने ओबामा के दो कार्यकालों में व्हाइट हाउस में उपराष्ट्रपति के रूप में सेवा दी थी। व्हाइट हाउस में जब बराक ओबामा 'स्वास्थ्य देखभाल की लागत' पर संयुक्त कार्यक्रम को संबोधित करने के लिए मंच पर खड़े हुए तो उन्होंने अपने कार्यकाल की तरह सामान्य रूप से लोगों को संबोधित करते हुए वर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति को 'उप राष्ट्रपति बाइडन' के रूप में मजाक में संबोधित करते हुए अपना भाषण शुरू किया।

इसके बाद दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वह बाइडन को गले लगाने चले गए और उन्होंने कहा कि 'यह एक मजाक था। यह सब पहले से ही तय किया गया था।÷ ओबामा अपने संबोधन में बाइडन प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों की घोषणा कर रहे थे, जिससे लाखों अमेरिकियों के लिए स्वास्थ्य सुविधा सस्ती हो जाएगी। ओबामा का व्हाइट हाउस का दौरा ऐसे समय में हुआ है जब अधिनियम पारित होने के समय ओबामा के कार्यकाल में उपराष्ट्रपति के रूप में कार्यरत बाइडन की लोकप्रियता में गिरावट देखी जा रही है।

नेपाल में भारतीय सहायता से नए स्कूल भवन का निर्माण शुरू

काठमांडू। नेपाल में भारत की मदद से उदयपुर जिले में श्री बाल मंदिर माध्यमिक विद्यालय के लिए एक नए भवन के निर्माण की आधारशिला रखी गई । सामुदायिक विकास परियोजना के रूप में भारत-नेपाल विकास सहयोग के तहत एनआर 31.13 मिलियन की लागत से भारत सरकार से अनुदान सहायता के साथ परियोजना शिक्षा क्षेत्र में शुरू की गई थी।

त्रियुग में श्री बाल मंदिर माध्यमिक विद्यालय के एक नए स्कूल भवन के निर्माण के लिए आधारशिला डॉ नारायण खड़का, विदेश मंत्री, नेपाल सरकार और नामग्या सी खम्पा, द्वारा रखी गई। श्री बाल मंदिर माध्यमिक विद्यालय उदयपुर जिले में एक पुराना स्थापित स्कूल है। एक बार पूरा होने के बाद, स्कूल अपने नए परिसर में स्थानांतरित हो जाएगा। वर्तमान में स्कूल में 1100 छात्र नामांकित हैं, जिनमें से लगभग 70 प्रतिशत छात्राएं हैं।

2003 से भारत ने नेपाल में 523 से अधिक उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाओं (एचआईसीडीपी) को हाथ में लिया है और स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, कनेक्टिविटी, स्वच्छता और अन्य सार्वजनिक उपयोगिताओं के निर्माण के क्षेत्रों में 467 परियोजनाओं को पूरा किया है। इसमें से 71 एचआईसीडीपी प्रांत-1 में हैं, जिसमें उदयपुर जिले में 8 पूर्ण परियोजनाएं और अन्य 8 परियोजनाएं पूर्णता के विभिन्न चरणों में हैं।

रूसी दूतावास के गेट से टकराने के बाद कार में लगी आग, चालक की दर्दनाक मौत

रोमानियाः रूस-यूक्रेन संकट के बीच रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में रूसी दूतावास के गेट से एक कार टकरा गई, जिसमें उसमें आग लग गई और चालक की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने इसकी जानकारी दी। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे असत्यापित वीडियो और छवियों में एक कार आग की लपटों में घिरी हुई दिखाई दे रही है और सुरक्षा बल इलाके से गुजर रहे हैं। पुलिस को अभी तक घटना के पीछे के मकसद का पता नहीं चल पाया है, यह यूक्रेन पर चल रहे रूसी आक्रमण की पृष्ठभूमि में हुआ, जो 24 फरवरी को शुरू हुआ था। रोमानिया यूक्रेन के साथ एक लंबी भूमि सीमा साझा करता है, और इसने 600,000 से अधिक शरणार्थियों को अपने पास शरण दिया है।

यूरोपीय संघ ने 48 घंटे में 120 रूसी राजनयिक निकाले; कोयले का आयात रोका, भड़क गया रूस

कीव/मास्को। पिछले 48 घंटे में कई देशों ने 120 से अधिक रूसी राजनयिकों को देश से निकाल दिया है। इनमें से अधिकतक राजनयिकों पर रूस के लिए जासूसी करने का आरोप लगाया गया है।रूसी राजनयिकों को निष्कासित करने वाले देशों में स्पेन, इटली, डेनमार्क और स्वीडन, जर्मनी और फ्रांस शामिल हैं। यूरोपीय संघ ने आज ही रूस के खिलाफ नए प्रतिबंधों का ऐलान करते हुए 3 बिलियन से अधिक के कोयले के आयात पर रोक लगा दी है। हालांकि, जर्मनी और ऑस्ट्रिया के विरोध के कारण रूसी गैस और तेल सप्लाई पर प्रतिबंध का ऐलान नहीं किया जा सका।

जर्मनी ने लिया एक्शन

रूसी सैनिकों के द्वारा यूक्रेन के बुचा में की गई बर्बरता दुनियाभर में चर्चा का विषय बनी हुई है। बुचा में चार सौ से अधिक नागरिकों के शव पाए गए और इन सभी लाशों को एक गड्ढे में दफना दिया गया। अब बुचा नरसंहार के खिलाफ जर्मनी ने रूस पर एक्शन लेते हुए रूस के 40 राजनयिकों को अपने यहां से निकाल दिया है। जर्मनी की तरफ से इन राजनयिकों को वहां आने से मना कर दिया गया है। जर्मनी की इस प्रतिक्रिया के बाद देखना है रूस का अगला कदम क्या हो सकता है।

इटली ने दिया अल्टीमेटम

रिपोर्ट्स के मुताबिक जर्मनी के इस सख्त फैसले के बाद रूसी राजनयिकों के पास देश छोड़ने के लिए पांच दिन का वक्त है। यह भी आरोप लगाया गया कि यह सभी लोग रूसी जासूसी एजेंसी के लिए काम करते थे। इससे पहले इटली ने भी सुरक्षा चिंताओं के कारण 30 रूसी राजनयिकों को निष्कासित कर दिया है। इटली ने रूस के राजदूत को यह बताने के लिए तलब किया है कि राजनयिकों को निष्कासित किया जा रहा है।

बेल्जियम 19 रूसी राजनयिक निकाले

यूरोपीय संघ ने कहा कि बेल्जियम से 19 रूसी राजनयिकों को निष्कासित किया जा रहा है। ईयू के विदेश नीति प्रमुख जोसेप बोरेल ने मंगलवार को एक वीडियो बयान में कहा, ''मैंने ईयू के रूसी संघ के स्थायी मिशन के कई अधिकारियों को उनके राजनयिक दर्जे के विपरीत गतिविधियों में शामिल होने के कारण अवांछित व्यक्ति नामित करने का फैसला किया है।' उन्होंने कहा कि इस कदम पर स्पष्टीकरण के लिए रूसी दूत को ईयू में तलब किया गया है।

भारत ने रूसी सेना के बुचा नरसंहार को बताया -'पीड़ादायक'

संयुक्त राष्ट्रः भारत ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यूक्रेन संकट पर चुप्पी तोड़ी । भारत ने बुचा शहर में रूसी सैनिकों द्वारा नागरिकों के मारे जाने संबंधी खबरों को 'बेहद परेशान 'करने वाला व 'पीड़ादायक' करार देते हुए इस कृत्य की कड़ी निंदा की। संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत टी एस तिरुमूर्ति ने यूक्रेन पर संरा सुरक्षा परिषद की बैठक में कहा कि बुचा में नागरिकों के मारे जाने संबंधी हालिया खबरें काफी परेशान करने वाली हैं। उन्होंने कहा कि भारत बुचा हत्याओं की निंदा करता है और एक स्वतंत्र जांच के आह्वान का समर्थन करता है।

रूस ने धमकी

रूस ने कहा है कि यूरोपीय देशों द्वारा उसके राजनयिकों के निष्कासन पर मास्को भी जवाबी कदम उठाएगा तथा इससे अंतरराष्ट्रीय संबंध जटिल होंगे। जर्मनी, फ्रांस, इटली और स्पेन उन देशों में शामिल हैं, जिन्होंने सोमवार को रूसी राजनयिकों को निष्कासित कर दिया। रूस के राष्ट्रपति कार्यालय 'क्रेमलिन' के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा, ''हम इसे नकारात्मक रूप से देखते हैं। हमें अफसोस है कि ऐसी कठिन परिस्थितियों में राजनयिक संवाद के माध्यम को सीमित किया जा रहा है।' उन्होंने कहा कि ''यह अदूरदर्शी और ऐसा कदम है जो सबसे पहले हमारे संवाद को जटिल बनाएगा, जो सुलह की तलाश के लिए आवश्यक है। दूसरी बात...इसके बदले में जवाबी कदम उठाए जा सकते हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

इमरान के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव खारिज किए जाने पर चौथे दिन सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई पूरी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के निवर्तमान प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव खारिज होने और उनकी सलाह पर राष्ट्रपति के संसद भंग किए जाने के फैसले को लेकर पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को शुरू हुई सुनवाई चौथे दिन गुरुवार को पूरी हो गयी। अब शाम को साढ़े सात बजे फैसले का ऐलान किया जाएगा। पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में रविवार को पांच मिनट के अंदर इमरान खान के खिलाफ पेश अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया। इमरान खान ने इसके बाद संसद भंग कर नए चुनाव कराने की संस्तुति राष्ट्रपति के पास भेजी। राष्ट्रपति ने तुरंत अपनी सहमति देते हुए संसद को भंग कर दिया। उधर, सुप्रीम कोर्ट ने मामले का संज्ञान लेते हुए संबंधित पक्षों से जवाब तलब कर सोमवार को सुनवाई का फैसला किया। सोमवार को शुरू हुई सुनवाई गुरुवार तक चली।

मुख्य न्यायाधीश उमर अता बंदियाल की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय पीठ ने गुरुवार को टिप्पणी की कि तत्कालीन पीएम इमरान खान के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर नेशनल असेंबली के डिप्टी स्पीकर का फैसला गलत था। उन्होंने कहा कि डिप्टी स्पीकर ने अपने दायित्वों का निर्वहन ठीक प्रकार से नहीं किया। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने कार्यवाहक पीएम इमरान खान को फटकार भी लगाई। उन्होंने कहा कि मौजूदा संकट में आपने 90 दिनों के लिए देश को बेसहारा छोड़ दिया। अदालत ने विपक्षी नेताओं शहबाज शरीफ और बिलावल भुट्टो जरदारी को बुलाकर उनका पक्ष भी सुना।

पाकिस्तान के कई शहरों में घुसे मानव बम, हाई अलर्ट घोषित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में मचा राजनीतिक घमासान आतंकवाद को नए अवसर भी दे रहा है। देश के कई शहरों में मानव बम घुसने की सूचना के बाद पाकिस्तान ने हाई अलर्ट घोषित किया है। इस बीच पाकिस्तान के आर्थिक हालात भी खराब हो रहे हैं। अर्थव्यवस्था डांवाडोल होने का परिणाम यह है कि पाकिस्तानी रुपया धड़ाम हो गया और डॉलर के मुकाबले 189 रुपये पहुंच गया है।

पाकिस्तान में इमरान खान की सत्ता को लेकर मचे घमासान के बीच वहां के अंदरूनी हालात बिगड़ते जा रहे हैं। पाकिस्तान ने देश में एक साथ तमाम मानव बम घुसने और देश भर के प्रमुख शहरों में फैल जाने की सूचना के बाद हाई अलर्ट घोषित कर दिया है। इसके लिए आतंकी संगठन अल बदर की सक्रियता को मूल कारण बताया गया है। अल बदर से जुड़े मानव बम बने आतंकवादियों के पाकिस्तान के प्रमुख शहरों पेशावर, क्वेटा, बन्नू, कराची व लाहौर तक पहुंच जाने की जानकारी सामने आई है। इसके बाद पाकिस्तान की सेना को सतर्क करते हुए आम जनमानस से सावधानी बरतने को कहा गया है।